सफलताकी सीढ़ियाँ

दो शब्द

आकर्षण शक्ति !

इसपर "दो शब्द" लिखना और खासकर इस ग्रन्थकी "आकर्षण शक्ति" पर कुछ लिखना, जो स्वयं कवि, नाटककार और लेखन कलाका सिद्धहस्त है—वास्तवमें मुश्किल है।

पर इतना तो मैं अवश्य कह सकता हू कि इस ग्रन्थ मे कविवर गुलाबजीने उस शक्तिको हस्तगत करने का उपाय बताया है, जो संसारकी एक ऐसी महती शक्ति है, जिसके सहारे यह इतना महान विश्व सुचारु रूपसे कार्य कर रहा है और जिस शक्तिको प्राप्त कर लेखक ही के शब्दोंमे प्रत्येक मनुष्य यह कह सकता है—"संसारमें मेरे लिये कोई काम असम्भव नहीं—मैं अपने भाग्य का स्वयं मालिक हू।" हाँ, इसमें जो विषय बताये गये हैं, जिन सरल, सर्वोपयोगी, सुन्दर और सुखद साधनोंका समन्वय किया गया है, उनका पालन कर मनुष्य वह शक्ति प्राप्त कर देवत्वकी सीमापर पहुंच सकता है और वह आकर्षण शक्ति प्राप्त कर सकता है, जो सासारिक और आध्यात्मिक जीवनमें आनन्द उत्पन्न करती है।

सच तो यह है कि मँजे हाथोंकी यह आकर्षण शक्ति अतीव कल्याण कारिणी है और इसकी प्रत्येक पंक्ति अनुभव सिद्ध है।

स्व० भोलानाथ टंडन एम० डी० एस०
प्रिन्सिपल इन्टरनेशनल कालेज

आकर्षण शक्ति :—

लेखक

राष्ट्रभाषा हिन्दी

हिन्दी स्वाधीन भारत की राष्ट्रभाषा हो चुकी है। जनता की बेशुमार भीड में उसका आसन सबसे ऊँचा हो रहा है और एक दिन आयेगा, जब पृथ्वी के रग बिरगे देश उसके सौंदर्य प्रकाश से जगमगा उठेंगे।

आज इस विशाल भारत की लगभग छत्तीस करोड की आबादी मे बीस करोड़ से अधिक की जन सख्या हिन्दी बोलने वालों की है। सत तुलसीदास, कबीर, सूरदास, भूषण, गिरिधर, नानक, देव और बिहारी जैसे अनेक प्रसिद्ध कवियोंने हिंदी का शृ गार किया है। वह अपने काव्य और गद्य गुणों के कारण केवल भारत मे ही नहीं, बल्कि विश्व के अन्य देशों में भी फैलती जा रही है। हिंदी भाषा में इतनी विलक्षण शक्ति है कि वह अपनी सरलता और माधुर्य के कारण सर्वत्र विकसित और पुष्पित हो रही हैं। उसका साहित्य इतना ऊँचा है कि एक एक कवि की समालोचना लिखने में ही जिंदगी के अनेको वर्ष समाप्त किये जा सकते हैं।

यह युग हिंदी की उन्नति का युग है। आज उसी हिंदी के व्यापक प्रचार, प्रसार और उसके नवीन किंतु प्रभावशाली ग्र थो के निर्माण के लिये हमे अपनी सारी शक्ति लगा देनी चाहिये। विश्व के चिंताशील मनुष्य जानते हैं, ससार के जिस साहित्यमें जब जब उथल पुथल मची है, तब तब वह राष्ट्र उन्नति के शिखर पर जा चढा है।

यह प्रसन्नता की बात है, कलकत्ते के सुप्रसिद्ध उद्योग पति

और हिंदी के प्राचीन प्रेमी श्री बाबूलाल जी राजगढ़िया ने इस दिशा में ठोस कदम उठाया है। आपकी "सिरीज" से कई 'पुष्प' प्रकाशित हो चुके हैं और कुछ शीघ्र ही पाठकों की सेवामें प्रदान किये जायेंगे। आज बाजारों में जब कि भद्दा साहित्य (!) धड़ल्ले के साथ प्रकाशित हो कर बिक रहा है और इस तरह की पुस्तकें पढ़कर लोग ध्वंस पथ की ओर दौड़े जा रहे हैं, श्री राजगढ़िया जी ने विश्व साहित्य की सर्वश्रेष्ठ पुस्तकों का प्रकाशन आरंभ किया है। ये पुस्तकें पाठकों को बहुत ही कम मूल्य में दी जायंगी, जिससे लोग अपने साहित्य से परिचय रखते हुए विश्व साहित्य के रस का भी आनन्द ले सकें। आशा है, हिंदी संसार श्री राजगढ़िया जी के इन विचारों का स्वागत करेगा।

यह मेरा सौभाग्य है, श्री "राजगढ़िया सिरीज" द्वारा प्रकाशित मेरी पुस्तक "आकर्षण शक्ति" का ६ ठवाँ संस्करण शीघ्र समाप्त हो गया, और ७ वा संस्करण आपकी सेवा में उपस्थित है। कई भाषाओं में इस पुस्तक का अनुवाद हो चुका है और देश विदेशों में इसकी माग बढ रही है।

अंत में मैं अपने आदरणीय लेखकों और विद्वानोंसे नम्र निवेदन करूंगा कि आप लोग इस 'सिरीज' को सफल बनाने के लिये सहयोग देने की कृपा करें। जिससे इस 'सिरीज' के 'पुष्प' मनुष्यों के कंठ मे फूलों के हार बन कर महकने लगें।

कलकत्ता
१ जून १९५३

गुलाबरत्न बाजपेयी

सम्मति

"आकर्षण शक्ति" आपने हिन्दी संसारको ऐसे समय में भेंट की है कि जब वह अपने नवयुवकोंको शिक्षा विषयक समस्याओं मे बुरी तरह उलझा हुआ था। संस्कृत साहित्य की प्राचीन निधि पर हिन्दी का अधिकार उतना ही नैसर्गिक रहा है जितना कि अन्य किसी भारतीय भाषा का! उसके प्रायः सभी रत्न अबतक हिन्दी के कोष में सुरक्षित हो चुके थे। हिन्दी वाले उनका उपयोग अपने ढंग से कर ही रहे थे। भारत का नवयुवक समाज जिस समय लंबे-चौड़े अन्धकार युग के बाद पश्चिमी ज्ञान की थोडीसी रश्मियों से ही चकाचौंध हो गया था। अपनी ज्ञान रश्मिसे विहीन, योरोपीय ठाट बाट पर मुग्ध वह भटका हुआ पथिक बन चुका था। उसे नवउत्साह, नवप्रेरणा और नवचेतना की बड़ी आवश्यकता थी। "आकर्षण-शक्ति" के द्वारा आपने उसे उसके शरीर और मनकी विविध प्रबल शक्तियों के दिग्दर्शन करा दिये। स्वस्थ्य मन किसे कहते हैं, वह कैसे बन सकता है उसका शरीरसे क्या सम्बन्ध है, स्वस्थ्य शरीर की क्या आवश्यकताएं हैं वह किस प्रकार प्राप्त की जा सकती है, निराशा और निरुत्साह-जन्य जीवन के घातक रोगोंसे कैसे मुक्ति प्राप्त हो सकती है, यह आपने इस पुस्तक में बड़ी खूबी के साथ समझाया है। किसी को बातें चाहे पुरानी भले ही जान पड़ें, लेकिन आपकी सिद्धि सराहनीय है।

ललिता प्रसाद सुकुल

ता० ८-३-४८

कलकत्ता विश्वविद्यालय

सुनो !

मनुष्य के अन्दर जो आश्चर्यजनक शक्तियां हैं, उनके द्वारा वह जो चाहे कर सकता है। दुनियाकी हर चीज खुली आंखोंसे देखने से बहुत ज्यादा सुन्दर दिखाई देती है। इस पुस्तक में मनुष्य के प्रभाव और उसकी रोगमुक्तिके अनेक विषयोंकी झांकी मैं तुम्हारे सामने पेश किये देता हूं। उन्हें खुले दिलसे समझो। यदि तुम सामनेकी फैली सड़कपर सावधानी से चलोगे तो तुम्हें हर काम में सफलता मिलेगी। तुम्हारा जीवन दुनिया की बड़ीसे बड़ी इमारतसे ज्यादा पेचीदा और ताज्जुब भरी ताकतों का अजायब घर है। इसे याद रखो—"मनुष्यको कोई नहीं बनाता, उसे खुद महापुरुष बनना पड़ता है।"

तकलीफों और मुसीबतों से न घबराओ। जिस आदमी ने जिन्दगीमें दुखोंका अनुभव नहीं किया, वह महत्त्वपूर्ण आनन्दों से वंचित रह गया। आफतें मनुष्यको पवित्र, सफल व्यक्ति और भविष्यका विजयी वीर बनाती हैं। जिन्दगी की कठिन मंजिल में दुख ही मनुष्यका सच्चा दोस्त है, जो उसके लिये उन्नति के विराट मार्ग खोल देता है और उसे शिक्षा देता है—"मनुष्य जो कुछ सोचता है। भविष्य में वही उसका भाग्य बन जाता है।"

मेरे सन्देशों को धीरज के साथ सुनो। मेरे साथ किसी तरह की अशांतिका अनुभव न करो! अपने जीवन पर ध्यान दो, कर्तव्यको देखो और जिन्दगी को शक्तिशाली तथा आदर्श बनाओ।

सुनो !

मनुष्य को पुरानी शिक्षा मिली है, वह पुण्यात्मा बने। किन्तु मैं कहता हूं—तुम वीर्यधारी बनो। पुराने आदमियों ने तुम्हें सिखलाया है—साधू सन्यासी हो जाओ। किन्तु मैं कहता हूं—इसकी तुम्हें जरूरत नहीं। तुम शक्तिशाली, कर्मयोगी और महामानव बनो, बल्कि उससे भी ज्यादा आगे बढ़ जाओ और देवता बनो। अपने सफल मार्ग और आवश्यक कार्य-पद्धतिया निकालो। मेरे ये सिद्धान्त शायद पहले तुम्हें कड़वी गोलियोंके समान जहरीले मालूम हों, किन्तु बादको ये तुम्हारी काया पलट कर देंगे और तुम दुनिया में नवीन जीवन धारण करोगे।

तुम्हारा भविष्य, सुख और भाग्य किसी खास मौके पर न चमकेगा। यह सब तुम्हारी इच्छा शक्तियों पर निर्भर है। तुम जब चाहे उनका विकास कर असाधारण व्यक्ति बन सकते हो; और अपने में इतना चित्ताकर्षक 'व्यक्तित्व' ला सकते हो कि राह चलते आदमियोंको अपनी तरह खींच सकते हो।

जमाना तेजी से पलट रहा है। मनुष्य कार्यों में ज्वारभाटा आ गया है। पुरानी परम्परायें, दकियानूसी खयाल और पुरानी रूढ़ियां डगमगा रही हैं। व्यक्ति स्वातन्त्र्य और विकसित विचारों का सूर्य तेजीसे उदय हो रहा है। इस जागरण युगमें जो मनुष्य अपने को पहचानकर आगे बढ़ेगा, संसार में उसीका बोलबाला होगा।

यह सच है, तुम जिस दिन अपने दिल और दिमाग पर कब्जा करना सीख जाओगे, उस दिन से तुम्हारी दुनिया आजकी दुनिया

सुनो !

से बहुत ज्यादा दिलचस्प, खूबसूरत और निराली होगी। मनुष्य का दिल और दिमाग वह तूफान है जो उसके खयाल, कल्पना, भय या अन्धविश्वासके द्वारा कभी गर्म और कभी सर्द होकर प्रवाहित होता है। मनुष्य आखोंसे जो कुछ देखते हैं, उसका आधा उनका विश्वास है। और वह जो कुछ डरते हैं, उसका आधा वहम और कोरी कल्पना।

और सुनो।

आज ससार भरके दुखी भाइयों का आर्तनाद मेरे कानों में वज्रघोषकी तरह गूज रहा है। मैं अपनी जिन्दगीमे एक दिल चस्प भूकम्प लिये रास्ते में चलता हू। आज मेरी नसोंमे जो खून बिजलीकी तीव्र गति से दौड रहा है, उसकी इस बढती प्यास में मैं ठण्डे जलकी शीतलता प्राप्त कर रहा हू। मुझे इन प्रचन्ड धाराओं पर चलने मे विश्राम का पूरा आनन्द आ रहा है और मैं तुमसे मिलकर धन्य हो गया हू।

अपने पर पूरा विश्वास रखो। अपना काम खुद करो और हमेशा सावधान रहो। यदि दो चार बार 'फेल' भी हो जाओ, तो न घबराओ। आगे बढो। असफलता ही सफलताकी मुख्य सीढी है।

—लेखक

आकर्षण शक्ति :—

निवेदन
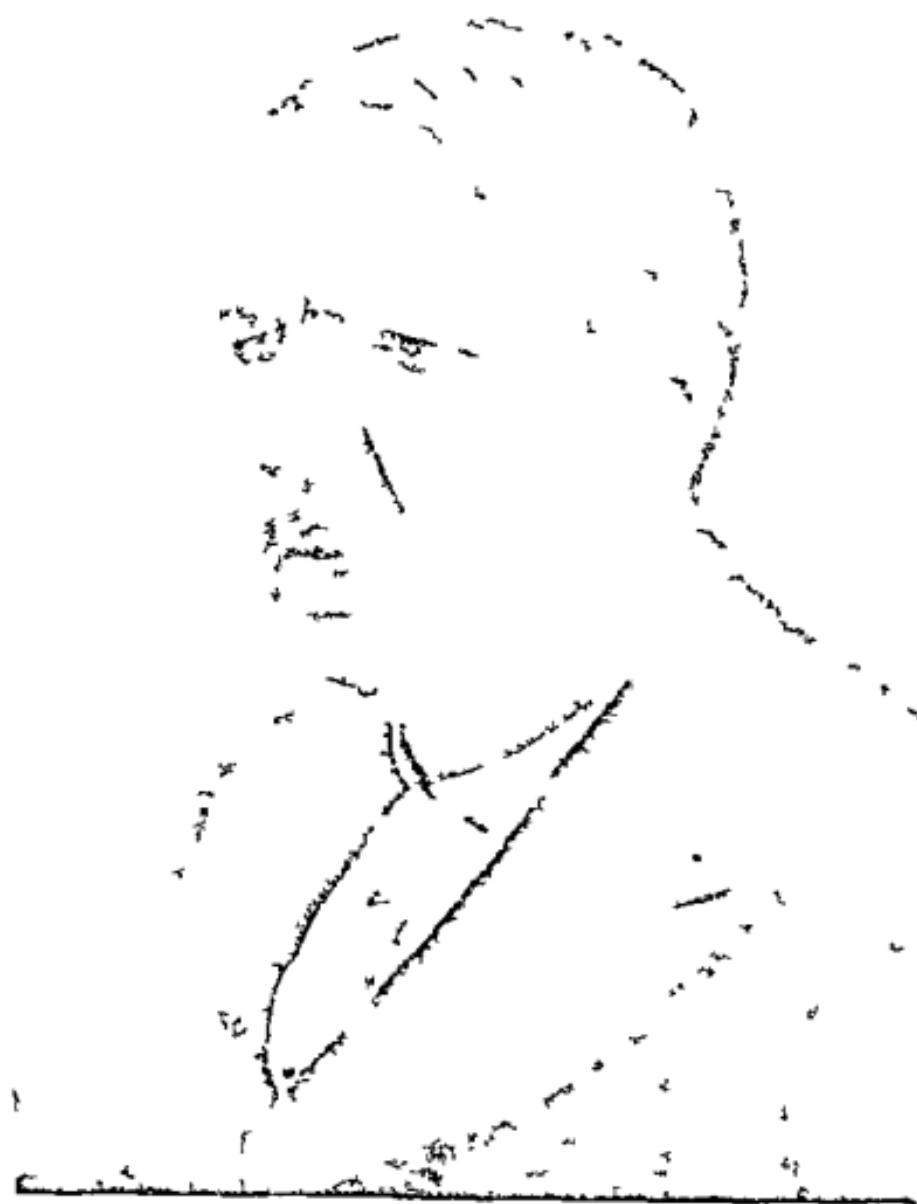
"आत्मर्पण शक्ति" का छठवां संस्करण जनवरी महीने मे मैंने आपके सामने उपस्थित किया था। देखते देखते अब सातवा संस्करण भी आप महानुभावो के सामने उपस्थित किया जा रहा है। इसी सिलसिले में दो एक बातें निवेदन करनी हैं। यो तो मुझे बहुत ही खुशी हुई कि इस किताब को लोगों ने बहुत ही अपनाया है। यहां तक कि किताब दफ्तरी के यहा से आते आते हाथों हाथ उठ ही नहीं गई, बल्कि सैकड़ों सज्जन हाथ मलते ही रह गये। इसीलिये यह सातवां संस्करण शीघ्र निकालना पड़ा। इस खुशी के साथ ही उस हद तक दिल मे मिश्रित वेदना के साथ एक सवाल उठता है। आखिर ऐसी कोई खास बात न होते हुए भी जो जनता ने इतना पसंद किया है, उसका कारण यही हो सकता है कि वास्तव मे हमारे भाईयो की पढ़ने लिखने की रुचि बहुत ही कम है। यह बात पूरी मानी हुई है कि पढ़ने लिखने से मनुष्य की शक्तियां विकाश की ओर दौड़ती हैं। यह बात बिलकुल ठीक है और मैंने अपने जीवन में देखी ही नहीं है, बल्कि इतिहास भी इस बात का साक्षी है, कि जो पुरुष उन्नति के शिखर पर पहुचे हैं उनके जीवन मे भी शिक्षा और विद्वत्ता ने बहुत बडी सहायता पहुचाई है। ऐसी बात अवश्य है, कि बहुत से उन्नत शिक्षित व्यक्ति भी पतन के गड्ढे में गिरे हैं। इसका केवल एक ही कारण है, कि "साइकोलोजिकल" (मानस शास्त्र) संबंधी उनमे कमजोरियां थीं। उन कमजोरियों का

कारण उनके अपने मस्तिष्क के गठन पर भी बहुत कुछ निर्भर करता है। उसका आज तक कोई भी समाधान न निकला। हिन्दू विश्वास के अनुसार हम उन्हें पूर्व कृत्य कर्मों का फल कह सकते है। अगरचे हमे हर एक बात का एक न एक जवाब देना ही पड़ेगा तो हम इसका यही जवाब देंगे। अच्छे से अच्छे रत्न समय और सुयोग से अच्छी जगह और अच्छे स्थान पर पहुच जाते हैं। मगर बिना विद्वत्ता के वह उस स्थान पर ठहर नहीं सकते। मेरे जीवन का यही अपना अनुभव नहीं है—बल्कि इतिहास तो इस बात का साक्षी है ही। दूसरे भाई भी इस सत्य को ढूढेंगे तो ठीक ठीक इसकी सचाई प्रमाणित हो जायगी। इस लिये मैं हर एक भाई से अनुरोध करूगा कि आप पढने लिखने में भी कुछ ध्यान दें। जो केवल मनोविनोद ही नहीं है, बल्कि आप चाहे जीवन में जिस अवस्था मे हों, आप का भार ज्ञान रूपी प्रकाश के कारण हल्का ही न हो जायगा, बल्कि स्वाधीन भारत में हमें जिन योग्य व्यक्तियों की जरूरत है, उनमे से आप भी आगे की श्रेणी में दिखाई देंगे। इन शब्दों से किसी भी भाई को जरा लाभ पहुचेगा तो मैं अपने को धन्य समझूगा। लोगों ने इस किताब के सम्बन्ध मे मुझे बहुत ही धन्यवाद दिया है और सराहना की है। उसके लिये म उनका हृदय से आभारी तो हू ही, बल्कि और सबो के लिये भी मेरे हृदय मे शुभकामनायें सर्वदा रहेंगी। श्री गुप्तान जी का भी मैं पूर्ण तौर से आभारी हू, जो साथ मे कन्धे से कन्धा भिड़ा कर अब तक काम ही नहीं कर रहे हैं, बल्कि मुझे महान सहारा दे रहे हैं।

कलकत्ता
१ जून १९५३

बाबूलाल राजगढ़िया

तुम क्या हो ?

तुम जानते हो, ईश्वर के बाद ससार में सबसे बडा कौन है ? राजा या प्रजा नहीं, सभासद या सभापति नहीं, पुजारी या पतित नहीं, जलचर, नभचर भी नहीं, ईश्वर के बाद ससार में सबसे बड़ा हो—"तुम"।

क्या तुम्हारे दिलमे कभी इस बातका तूफान आया है—"मैं क्या हूं।" क्या तुमने कभी एकान्तमे बैठकर इस प्रश्न पर विचार किया है—"मैं क्या हू ?"

मैं समझता हू तुम्हारे मनमें इस बातका तूफान न आया होगा। यदि आया भी होगा, तो चन्द मिन्टों मे काफूर की तरह उड गया होगा। फिर तुम इस प्रश्न को भूलकर अपने काम धन्ध मे लग गये होगे।

आखें खोलकर अपने उन्नत मस्तक की ओर देखो। उसके सामने ससार की सारी शक्तिया नतमस्तक हैं।

तुम पृथ्वीमडल के सर्वश्रेष्ठ मनुष्य हो। तुम्हारे तेजस्वी ललाट में ब्रह्म ज्योति की चमक है। हृदय टटोलो, उसमे शक्तियों का खजाना जगमगा रहा है। ससार की तरफ देखो—यह

सौंदर्य का जादूघर है। दिमाग का अध्ययन करो—उसमे बिजली की ताकत है।

रेगिस्तान को हँसता-खेलता बागीचा बना देना तुम्हारे हाथ का काम है। असम्भव को सम्भव कर दिखाना, दुख और मुसीबतो से भरे जमाने को सुख और शांति के रूप मे पलट देना तुम्हारे ही घटनाचक्र का रहस्य है। तुम्हारे एक शब्द से, तुम्हारे एक इशारेसे, जीवनके दुख बन्धन तडातड टूट सकते है। अपने को देखो—अपने को पहचानो।

तुम इस महान विज्ञानको कविकी कल्पना, या पागलका प्रलाप न समझो। यह सत्य है, और सत्य होनेके लिये बाध्य है।

तुम्हें यह देखकर आश्चर्य होगा—मैं तुमसे इतनी दिलचस्पी क्यो रखता हू ? इसका कारण यह है—कि तुम्हारी आकर्षण शक्ति मुझे चुम्बक की तरह खींच रही है। ओह। तुम्हारी जिन्दगीमे शक्तियोंका खजाना है।

इस विज्ञानको सावधानीसे अध्ययन करो। सोचो, समझो और उसपर गौर करो। तुम अपने विषयमे जितना अधिक सोच सकते हो, उतना दूसरे नहीं। पृथ्वी मडलमे तुम्हें एक भी मनुष्य न मिलेगा—जो तुम्हारी उन्नति के विषयमे गहराई से सोचने का कष्ट उठाये। तुम अपने विषयमे गभीरतापूर्वक विचार करो—खूब सोचो—"मैं क्या हू ? और ससारमे किस लिये आया हू ?

तुम चुम्बक हो।

यह अद्भुत चुम्बक—जो हाड़, मांस और रक्तसे बना है। इसमें अद्भुत तेज है—विचित्र आकर्षण! यह आकर्षण-शक्ति संसारके प्रत्येक मनुष्यको अपनी ओर खींच सकती है। विश्वको तुम्हारा भक्त बना सकती है। इसके जरिये तुम अपनी समस्त मनोकामनायें पूर्ण कर सकते हो। यह शक्ति तुम्हारे घरमें लाखोंका खजाना भर सकती है। तुम्हारे बच्चोंको आनन्द के हिंडोले पर झुला सकती है। इसी शक्तिके जरिये तुम्हारी मातायें-बहनें, बेटियां देवी बन सकती हैं और तुम परम पिता परमात्मा के साक्षात दर्शन कर सकते हो।

यह एक नया और निराला विज्ञान है, जो सत्य है।

इस मार्ग को पाने के लिये तुम्हें न तो सन्यास लेने की आवश्यकता है, न श्मशान मे मंत्र जगाने की जरूरत। तुम बाल-बच्चों के साथ रहो। व्यापार धन्धे करो। तुम जो चाहोगे—भविष्यमें वही हो जाओगे। सफलतायें तुम्हारे आगे हाथ जोड़े खड़ी रहेंगी। तुम्हारा जीवन विशेषताओंसे भर जायगा और तुम दुनिया में अपनेको एक नया आदमी समझने लगोगे।

तुम्हारा महान आकर्षण तुम्हारे पास है। उसे न कोई छीन सकता है, न चुरा सकता है। तुम संसारमें एक बहुत आवश्यक मनुष्य हो। दुनिया उन्हें आदरके सिंहासन पर स्थान देती है, जो अपनेको पहचानकर जीवन संग्राममें आगे बढ़ते हैं।

तुम इस ख्यालको लेकर होशियारीसे आगे बढो। अपने समयको अपने ही कर्तव्य मे समाप्त करो। भविष्यमे तुम बडसे बडे आविष्कारक, कलाकार, व्यापारी तथा राजनैतिक हो सकते हो।

आगेके सनसनीखेज पेज पढो। यह विज्ञान तुम्हें दिन दूना रात चौगुना ऊँचे उठानेकी शिक्षा देगा, जीवनके अद्भुत रहस्यों को समझायगा तथा तुम्हें आनन्दका अमृत पिलायगा।

ईश्वरके बाद ससारमे सबसे बडे हो—"तुम !

इस आध्यात्मिक ज्ञानको एकान्तमे अध्ययन करो। जरा भी न घबडाओ। मैं कोई जादूगर नहीं। सब तुम्हारी समझमे आ जायगा—और तुम एक दिन आनन्द से उन्मत्त होकर चिल्ला उठोगे—"ससारमे मेरे लिये कोई काम असम्भव नहीं। मैं अपने भाग्यका आप मालिक हू।"

—*—

चुम्बक

तुम भी जागते हो, मैं भी जागता हू, सारा ससार जागता है। मगर हमारी नींद मे कुम्भकर्ण की बेहोशी है, हम जागते हुए भी सोते है। हाथ पैर रहते हुए भी पशु हैं। कान हैं, मगर हम सुननेमे बहरोंके कान काटते हैं। आखें है, लेकिन हमारी गिनती सूरदास की श्रेणी मे होती है। क्यो और किस लिये? हम मनुष्य जीवनके रहस्योंको नहीं समझते।

ससारमें सफलता की मजिल तय करना, खासकर आजकल के जमानेमे बच्चोंका खेल नहीं। सफलताकी भाग्यरेखायें उन मनुष्योंके कपालमें अंकित है,—जिनके हृदयमे नवीन आविष्कारो की आधी हहराया करती है, जो कर्मक्षेत्र मे कमर कसकर खड़े होने की ताकत रखते है, जिनकी मानसिक शक्तिया तेजस्वी अटल और प्रतापी होती हैं।

तुम चुम्बक हो। तुम्हारे शरीरकी अन्दरूनी-कोठरी शक्तियो का बिजली घर है। उसमे दिमागी ताकत उत्पन्न करनेके लिये, जिन्दगीमें नया रग लानेके लिये, बिजली घरकी समस्त मेशीनोंको साफ करना होगा। उनके कल पुर्जे दुरुस्त करने होंगे, उसमे 'पेट्रोल' डालना होगा, जोरदार स्पीड पैदा करनी होगी,—जिससे अन्दरकी सब मेशीनें खटाखट चल सकें और तुम्हे सफलताके

मार्गमें विजय हासिल करनेके लिये जरा भी कठिनाईका सामना न करना पड़।

किसी भी देशका उत्थान पतन उसके स्त्री पुरुषोंकी आकर्पण शक्ति पर निर्भर है। जातियों के क्रम विकास परिश्रमसे होते हैं। आज जो देश पतन के गहरे गड्ढे मे गिर पड़े हैं, उनमे सिवा अन्धकारके रोशनीका नाम तक नहीं नजर आता। उनकी घृणित कहानी यह है कि उन देशोंने कभी मनुष्योंको आलस्यकी नींदसे नहीं जगाया। यदि हम मनुष्योंकी त्रुटियोंकी खोज करने बैठे—तो व हमे रास्ता चलते दिखाई देंगी। वे त्रुटियां हमेशाके लिये नष्ट कर देनेका एक ही उपाय है-हम पहले अपनेको पहचानें, फिर प्रत्येक मनुष्यके जीवनको नये साचेमें ढालकर उनकी काया पलट करदें। हमारे दैनिक अनुभवोंसे यह सिद्ध है, कि आत्मगौरव और सुकर्म ही मनुष्य जीवनमे हेर फेर करते हैं। आज हम स्कूल तथा कालेजोंसे ऊँची डिग्रियां लेकर अपनेको महा विद्वान समझते हैं और टके टकेकी नौकरीकी दर दरकी ठोकरें खाते फिरते हैं—इसके बाद पेटकी आराधनामें लगकर सरस्वतीको हमेशाके लिये प्रणाम कर लेते हैं—यह कैसी पतन प्रवृत्ति है? दुनियामें तुम्हें ऐसी प्रवृत्ति कहीं न मिलेगी। दूसरे देशोंके विद्यार्थी स्कूल और कालेजोंके दरवाजेसे निकलकर ज्ञान समुद्रका मन्थन करने लग जाते हैं और उससे अमूल्य निधियां प्राप्त करते हैं। क्योंकि ज्यादा ज्ञान परम पिता परमात्माकी आनन्ददायी दृष्टिसे प्राप्त होता है, सड़कों पर पैदल चलने

तथा दैनिक जीवनकी घटनाओंसे मिलता है। यह ज्ञान तुम्हें स्वयं अपने पैरोंपर खडे होनेके आकर्षक उपदेश देते हैं। तुम्हें महामानव बनाते है।

तुम चाहे जिस दृष्टिसे देखो—साफ दिखाई देगा—मनुष्य सीखनेके बजाय कर्मसे ज्यादा आगे बढते हैं। वर्तमान समयमें मनुष्योंमें जो जागरण-ज्योति फैल रही है, उसका कारण और कुछ नहीं, मनुष्यका आकर्षक प्रभाव है। आज मनुष्य कितने ही आकर्षक प्रभावोंसे संगठित हो रहा है। विश्वकी सामयिक जागरण-ज्योति उनकी आखें खोलती जा रही है, और वे आज उन्नतिकी खोजमें ठीक उसी तरह पागल हो रहे हैं—जिस तरह एक दिन अमृतकी खोजमें देवता और दैत्य परेशान थे।

मनुष्य जीवनके अद्भुत रहस्योंको न पहचान सकनेके कारण ससारमें हजारों लाखों मनुष्योंने अपनेको जिन्दा श्मशानमें जला दिया। याने वे संसारमें कुछ न कर सके। उन्होंने न तो मनुष्य जन्म लेनेके रहस्य समझे, न अपनी मंगल कामनाओंकी पूर्ति की। वे मुट्ठी बाधकर यहा आये—और हाथ पसारे चले गये। उनकी यादगारोंका कोई चिन्ह आज ससारमें न मिलेगा। अफसोस। उनकी भयानक भूलोंकी कैसी शोचनीय दुर्घटना है।

तुम मनुष्य हो, चुम्बक हो, भूलके भ्रममें न भूलो। इस चुम्बककी शक्तिशाली ताकतें तुम्हारे अन्दर बेचैनीसे दौड रही हैं, वे उन्नतिकी रेसमें तुम्हें सबसे आगे बढाने के लिये बेताब हैं

तुम्हे बहुमूल्य उपहार देनेके लिये लालायित हैं। मानसिक विज्ञान की आंखोसे उन्हें देखो, पहचानो और प्रतिज्ञा करो—"मैं अपनेमे आकर्षण उत्पन्न करूगा। आजसे मेरा ससार—वह ससार होगा, जिसकी मैं स्वय रचना करूगा। आजसे मेरी जिन्दगी,—वह जिन्दगी होगी—जिसे मैं स्वय साचेमे ढालकर तैयार करूगा।"

आज हम विज्ञानके जमानेमे भ्रमण कर रहे हैं। विज्ञानने ही रेल, तार, रेडियो, ग्रामोफोन, बायस्कोप और हवाई जहाज इत्यादि आश्चर्यजनक वस्तुओकी सृष्टिकी है। इसके आविष्कारक तुम्हारे ही जैसे दो हाथ पांव वाले मनुष्य थे। यदि तुम उन्नतिके शिखरपर चढकर गहरी बाजी मारना चाहते हो, तो अपने को पहचानो—अपनेमे जागरण ज्योति जलाओ। सफलता तुम्हारे सामने जय मुकुट लिए खडी रहेगी।

तुम्हें यह जानकर आश्चर्य होगा कि मनुष्यमे चुम्बक शक्ति तीन ताकतोसे उत्पन्न होती है। उसमे पहली ताकतका नाम है—हवा। वह हवा, जो रोजाना सासके जरिये शरीरमे प्रवेश कर प्राण शक्ति उत्पन्न करती है। दूसरी ताकत उन तरल पदार्थों की है, जिन्हें तुम हर रोज पीते हो। तीसरी ताकत है—खाद्य सामग्री—जिसे तुम भोजन कहते हो।

यह ताकतें उस मनुष्यमे ज्यादा चुम्बक उत्पन्न करती हैं, जिसका स्वास्थ्य सुन्दर होता है। जिसमे पुरुषत्व की लाली रहती है—जिसके बदनमे बल वीर्य चमचमाया करता है।

उठो ! जागो ! चुम्बक शक्तिसे संसारको अपनी तरफ खींचलो। फिर तुम एक दिन देखोगे—जिस मगल कामनाकी पूर्तिके लिये तुम कल सोच रहे थे, आज उसकी पूर्ति हो गई और आज जो सोच रहे हो—वह कल पूर्ण होनेके लिये बाध्य है !

दुनियामें हमेशा चुम्बक बनकर जियो। अपनी प्रसन्नताओं को चारो तरफसे चमकाओ। शक्तियों को जाग्रत करो। एक दिन तुम्हें देखनेके लिये तुम्हारे सामने हजारों स्त्री-पुरुषों की भीड़ लग जायगी !

—*०*—

स्वास्थ्य विज्ञान

तुम्हारी उम्र चाहे अठारह वर्षकी हो या अस्सीकी, चुम्बक शक्ति चमकानेके लिये सबसे पहले तुम्हे स्वास्थ्य सुधारना होगा। यह गलत ख्याल है—"मैं वृद्ध हो रहा हूं"। मनुष्य अठारह वर्ष की उम्रमें बूढ़ा हो सकता है और अस्सी वर्षकी उम्रमें जवान। जिन्दगीको जवानी और बुढ़ापेमें बदल देना मनुष्यके हाथकी बात है। हां, उसमें चाहिये—वैज्ञानिक रहस्योंके समझनेका ज्ञान !

पिछले पचास वर्षोंसे विज्ञान जिस तेज रफ्तारसे आगे बढ़ रहा है, उसे देखकर हम ताज्जुब किये बगैर नहीं रह सकते। अनगिनत आविष्कारों द्वारा उसने संसारकी काया पलट कर दी है। आज हम अपनेको विज्ञानकी बदौलत, पहलेकी अपेक्षा बहुत आगे बढ़ा पाते हैं।

अब मैं यहां स्वास्थ्य-विज्ञान पर एक दृष्टि डालूंगा। यह विज्ञान दूसरे विज्ञानोंकी अपेक्षा अभी बहुत पीछे है, और जीवन के चुम्बक तत्वोंको चमकानेके लिये हमें उसका ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है।

हम रोगी हैं। हमें हमेशा कोई न कोई बीमारी सताती रहती है। क्यों ?—हम स्वास्थ्य रक्षाके नामपर अनाप-सनाप

घातक दवाइयां खाते हैं और शरीरके अन्दर जहर फैलाते हैं। यदि तुम कभी बीमार नहीं रहना चाहते, बदनमें आकर्षण, जीवनमें चुम्बक और आंखोंमें तेज लाना चाहते हो—तो पहले तीन चीजोंको समझो। वे क्या हैं ?

(१) हवा याने सांस लेनेकी वायु, (२) तरल पदार्थ, (३) भोजन।

यहां मैं सर्वप्रथम हवाके प्रयोगोंको समझाऊंगा।

हवा याने सांस लेनेकी वायु

"हवा" क्या है ? हवा मनुष्यको प्राण प्रदान करने वाली शक्ति है। मनुष्य बगैर भोजनके महीनो जिन्दगी कायम रख सकता है। बगैर पानी हफ्तों मौतके साथ लड सकता है, किन्तु यदि उसे ताजी हवा न मिले तो ?—वह चन्द घण्टोंमें मर जाय।

मैं दावेके साथ कहता हूं, वर्तमान समयमें हजारमें नौ सौ आदमी सांस लेनेका प्रयोग नहीं जानते। यही वजह है, जो मनुष्यकी आयु दिन दिन घटती जा रही है, उसके सामने कम जोरियोंके ढेर लगे हैं, और वे मानसिक चिंताओंकी चितामें भस्म होते जा रहे हैं।

तुम हर रोज प्रातःकाल सोकर उठनेकी आदत डालो। उषा कालके समय उठो तो बहुत सुन्दर। नित्य हरे भरे मैदान या बाग बागीचेमें चले जाओ और हरियालीका आनन्द लेते हुए सीना तानकर खड़े हो जाओ। आंखें और मुंह बन्द करो—फिर

नाकसे ताजी हवा खींचकर शरीर के अन्दर भरो। दस पन्द्रह सेकेण्ड तक उसे रोको, फिर आहिस्ता आहिस्ता मुहके बाहर निकाल दो। यह प्रयोग सुबह शाम दस बारह मरतबे रोज करो। तुम्हारे जीवनमे सजीवनी बूटी जैसा असर होगा।

हवाकी ताकतसे चुम्बककी शक्तिशाली चिनगारिया तुम्हारे शरीरके अन्दर फैलेंगी और तुम्हारे बदनमे दिन ब दिन आकर्पण बढता जायगा। यदि बाग बगीचे या मैदानमे जानेके लिये तुम्हारे पास समय न हो, तो मकानकी छत या खिडकियोंके सामने खडे होकर वैज्ञानिक कसरत करो, तुम्हें नई और जोरदार जिन्दगी मिलेगी। दिमागमे नई नई शक्तियोका जन्म होगा।

सास शक्तिको बढानेके लिये रोज कसरत करना आवश्यक है। इससे सिर्फ तुम्हारी सास शक्ति ही नहीं बढेगी—बल्कि शरीर भी सुडौल हो जायगा। कसरतके अलावा दौडना, तैरना मैदानमे घूमना, फुटवाल, हाकी या टेनिसके खेल भी सास शक्तियोंको बढाते है।

तरल पदार्थ

तरल पदार्थोंमें सबसे बडी चीज है—पानी, जिस तरह जल की वर्षा मुरझाई खेतीको लहलहा देती है—पानी उसी तरह मनुष्य शरीरको नये रङ्ग रूपसे चमका देता है।

तुम नौजवान हो, मगर बूढोंके कान काटते हो। तुम्हारी कमर झुक गई है। आखोंके नीचे काले गडढे पड गये हैं, धुधला दिखाई

देता है, बदसूरत हो रहे हो, गाल पिचक गये हैं या इस कदर मोटे हो कि रास्ता चलते लोग तुम्हारा मजाक उड़ाते हैं, तो मैं कहूंगा—तुम धोखेकी ओर बढ़ते जा रहे हो, पानी पीना नहीं जानते और बीमारियोंसे तुम्हें मुहब्बत हो गई है।

रोज कमसे कम आठ ग्लास पानी पियो। उसे धीरे धीरे हलक़के नीचे उतारो और स्वाद लेकर पियो। तुम्हारी समस्त अन्दरूनी गन्दगी धुलकर साफ हो जायगी। उसमें तेजस्वी शक्तियोंके बीज बो जायेंगे। तुम्हारा सौन्दर्य दिन दूना रात चौगुना बढ़ेगा। स्नानके समय बदनके चमड़ेको हथेलीसे रगड़ो, शारीरिक बीमारियोंका नाम निशान मिट जायगा।

यदि तुम पानीके प्रयोगसे चूक जाओगे तो तुम्हारे शरीरकी वैसी ही दशा होगी, जैसे मुरझाये फूलकी।

भोजन

चुम्बक शक्ति बढ़ानेकी तीसरी ताक़त है—भोजन।

मगर भोजन,—भोजनके तरीक़ेसे करो। उन्हीं चीजोंको खाओ जो तुम्हें प्रिय हों और जिनका रूप रङ्ग तुम्हारी आंखोंको सुख देने वाला हो।

हममेंसे ज्यादा आदमी पेटकी बीमारियोंके शिकार हैं। कुछ के पेट भारी हैं, कुछ के हल्के। कुछ हमेशाके लिये पेटके गुलाम हैं, कुछ पेटकी तरफ ध्यान ही नहीं देते। कुछ बहुत ज्यादा भोजन करके बीमारियोंको निमन्त्रण देते हैं, कुछ कम भोजन कर

दुर्बलताओंसे दोस्ती गांठते है। यह भूलें हैं। पेट मनका ढाचा है। शारीरिक 'बिजली घर' की जितनी मैशीनें दौडती हैं-इसके नपे तुले दायरेमे। दायरेके भीतर या बाहर जाना पेटके लिये कुछ वैसी ही दुर्घटना है, जैसी रेलके पहियोका पटरियोंके बाहर चलना या अन्दर गिर पडना।

खाना धीरे धीरे और प्रसन्न मनसे खाओ। हमेशा इस बात पर ध्यान रखो, तुम चाहे जितना काममे 'बिजी' हो, खाना समय पर खाओ। खानेको दांतोंसे खूब कुचलो, महीन बनाओ और आहिस्त आहिस्त गलेके नीचे उतारो। जो लोग खानेमे जल्द बाजी करते हैं और खाद्य पदार्थोको अच्छी तरहसे कुचल कर नही खाते, वे अपने ही दांतोंसे अपनी कब्र खोदते हैं।

सादे भोजनके अलावा साग सब्जी ज्यादा तादादमे खाओ हरी और कच्ची चीजें शरीरमे ठोस ताकत पैदा करती हैं। ये नमक, गन्धक और लोहेकी शक्तियोको बढाती हैं और बदनमे ताजा रक्त पैदा करती है।

फल खानेकी मात्रा बढा दो। फलोंसे शरीरमे पाचनशक्ति बढती है। इस पाचनशक्तिसे तुम्हारे बिजली घरका रसायनागार भरा पुरा रहता है। ऋतुसे बाहरकी चीजें न खाओ, ये नुकसान पहुचाती हैं।

तुम्हारे शरीरमे दांत सच्चे सेवक है, उनसे अच्छी सेवायें लो। ठण्डा भोजन जिन्दगीको शून्य और भारी बनाता है, इस लिये ठण्डे भोजन की आदत छोड दो।

सफलताका रहस्य

विश्वास पूर्वक उपरोक्त नियमों का पालन करो। दरख्त अपने बलपर अपनेमे लहरें निकालते हैं। स्वास्थ्यको सुन्दर और जीवनको भरा पूरा रखनेके लिये हरे भरे दरख्तोसे शिक्षा ग्रहण करो और इस बात का ध्यान रक्खो —

जिन्दगीके अमूल्य उपहार उन्हीं मनुष्यों को मिलते हैं, जो जीवनके कानूनों को नियम पूर्वक मनाते है। लापरवाही और सुस्ती जीवनकी विकास शक्तियों को नष्ट कर देती है। और इससे मनुष्यके चुम्बक तत्व बेकार हो जाते हैं।

मनकी शक्तियां

आज संसारमे जितने मनुष्य अपने नाम की धूम मचा रहे है और आश्चर्यजनक आविष्कारोंसे दुनियाको चकित कर रहे है—वे आध्यात्मिक शक्तियोंके मास्टर हैं। उनके शक्तिशाली कार्य-कलापोंसे ससारमे अद्भुत उलट फेर हो रहे हैं। यह शुभ लक्षण हैं।

मनुष्यके लिये विजय, प्राप्त करनेकी सबसे बड़ी ताकतें दो हैं—पहली मन शक्ति, दूसरी तलवार। लेकिन मन शक्तिके सामने तलवारकी ताकत कमजोर साबित हो चुकी है—उस हालतमें कमजोर, जब मनुष्यका मन पूर्ण शिक्षित है, वह जीवन रहस्योंको समझ चुका है।

चोंकिये नहीं, मनकी शिक्षायें अज्ञानताको नष्ट कर जीवन रहस्योंको वैसे ही प्रदर्शित करती हैं, जैसे सूर्य-किरणें उज्वलताओं द्वारा संसार को जगमगा देती हैं। आध्यात्मिक मनुष्य एक दिन वही हो सकता है, जो आज होनेकी इच्छा रखता है।

तुम्हारा शरीर कई हिस्सोंमें वंटा है। जैसे हाथ, पैर, नाक, कान इत्यादि। मगर तुम्हारे पास मन एक ही है। तुम्हारे भविष्य की सफलतायें और तुम्हें अदृश्य शक्तियोंसे मिलाने वाली ताकतें—तुम्हारे मनमें छिपी हैं। मन शक्तियों द्वारा तुम जो

चाहो भविष्य मे बन सकते हो, जिस वस्तुको चाहो प्राप्त कर सकते हो। अमेरिकाके धनकुबेर राकफेलर एक दिन सडकों पर मामूली चीजें बेंचते थे—आज संसार के धनी व्यक्तियों मे उनका नाम पहले लिया जाता है। तुम स्वयं देखो, तुम्हारे एक साधारण दोस्त जिन्हें कल बातें करनेका सलीका न था, आज अपने व्याख्यानो द्वारा हजारों स्त्री पुरुषो को मुग्ध कर रहे है। क्यों ? इसमें क्या रहस्य है ? असल मे ये मनुष्य जिन्दगी के मूल रहस्यको समझ गये। ये मन शक्तियों का अध्ययन कर दिन दिन जीवन संग्राममें आगे बढ़ते जा रहे हैं।

मनुष्य अपना ही दोस्त है, अपना ही दुश्मन।

यदि मैं तुमसे कहूं कि तुम, आर्थिक दुनियामे हेनरी फोर्ड, राकफेलर या किसी भी किस्मके करोडपती बन जाओ। साहित्यिक ससारमे तुलसी सूर बर्नार्ड शा या रविन्द्रनाथ टैगोरकी तरह चमको, तो तुम फौरन मेरी हसी उडाओगे और कहोगे—"अजी छोडिये यह चर्चा। कहा व कहा मैं। मैं कदापि इन महापुरुषों का मुकाबला नहीं कर सकता।"

बस, यहीं तुम धोखा खा गये। मनके सन्देहने तुम्हें उठा कर पटक दिया। अब तुम उठनेका नाम नहीं लेते और अफीमचीकी तरह पडे भिन भिना रहे हो। कितनी बडी बुजदिली है यह।

तुम जो चाहो हो सकते हो, तुम्हारे लिये कोई बात असम्भव नहीं। तुम उन मनुष्यों से बहुत बड़े हो, जिनका नाम इतिहासने

पन्नों में चमक रहा है। हां, उनमें और तुममें इतना फर्क जरूर है, वे तुम्हारी तरह गाफिल न थे। उन्होंने मन की ताकतों को पूर्ण अध्ययन किया था। मनके चढ़ाव उतार और उत्थान पतन हमारे दिमाग तथा स्वास्थ्य पर कितना गहरा असर डालते हैं, इसके यहां दो उदाहरण पेश करता हूं :—

मान लो तुम्हारा कोई दोस्त कटोरा भर दूध तुम्हारे पास ले आया और बोला—"जनाब, इसे पी जाइये। इसमें मिश्री घुल रही है, केशर की सुगन्ध है।"—उसे देखकर तुम्हारा मन ललचा उठेगा और तुम फौरन उसे पी जाओगे। थोड़ी देर बाद यदि मैं कहूं—हुजूरने गलती की, दूध में एक चूहा गिरकर मर गया था।"—तो अब बताओ तुम्हारे मनकी क्या हालत होगी? सिर घूमने लगेगा। जी मिचलायगा और कै करने की इच्छा होगी।

दूसरी बात—

तुमने किसी बच्चे की मां से जाकर कह दिया—तुम्हारा बेटा तालाब में डूबकर मर गया। अब देखो—मां के मनकी हालत उसकी आंखों के आगे अन्धेरा छा जायगा। वह छाती पीटने लगेगी और मारे गम के बेहोश हो जायगी। यदि उसी समय मैं वहां टपक पड़ूं और कह दूं—"आपका बच्चा जिन्दा है, लो,—वह आ गया।" तब? बताओ मांके मनकी हालत? वह मारे खुशीके उछल पड़ेगी और सारा गम भूल जायगी। दौड़कर बच्चे को छाती से चिपटा लेगी, उसे चूमेगी और स्वर्गीय सुख का अनुभव करेगी।

तुम अपने ही मनको लो जब तुम संगीत सुनते हो तो मस्ती में झूमते हो। मगर जब हाहाकार सुनते हो—तब मैं समझता हूं थर्रा उठते होगे।

अपने गुस्से पर गौर करो, जब तुम क्रुद्ध होते हो--तुम्हारे सरपर खून और अत्याचार के भूत नाचने लगते हैं, तुम भयानक से भयानक अपराध कर डालते हो। लेकिन जब बहुत प्रसन्न रहते हो तब ? मैं समझता हूं, तुम्हारे मनमें बड़ी फुर्ती होगी। तुम मनुष्यको प्यार करते होगे, तुम्हें संसार सुन्दर दिखाई देता होगा।

असलमें यह सब मनके करिश्मे हैं। तुम मनको जिस रास्ते में ले जाओगे वह उसी रास्तेसे जायगा। बलासे वह रास्ता अच्छा हो या बुरा। यदि तुम्हारे मनमें अच्छी बातें दौड़ रही हैं, तो समझ लो तुम्हारा मन सफलता की ओर जा रहा है। दिमाग में विकसित शक्तियों का जन्म हो रहा है। यदि उसमें बुराइयां भर रही हैं, तो पतन की ओर जा रहे हो और तुम्हारा जीवन नष्ट होनेमें देर नहीं है।

मनके आन्दोलनों को आंखें खोलकर देखो उसकी आवाजों को कान लगाकर सुनो। वह कहता है :—हे मनुष्य ! तू मुझे अच्छे रास्ते से ले चल। मैं तुझे जीवन में श्रेष्ठ उपहार भेंट करूंगा जिन मनुष्यों के आंख, कान खुले हैं, वे मनकी आवाजों को देखते है, सुनते हैं और उन्नत बातों को ग्रहण करते हैं। जो अन्धे और बहरे हैं वे मनकी जरा भी परवाह नहीं करते। वे बुराइयां ग्रहण करते जारहे हैं। और उन्हें बुराइयोंमें ही आनन्द आता है।

हमें उचित है हम अपने मनमें जरासी उदासी न आने दें। उसे प्रसन्नताओंसे भर दें, ऊचेसे ऊचा चढायें और अपनी विचार शक्तियोंको उच्च अभिलाषाओंके साथ खुलकर खेलने दें। आत्मिक शक्तियों का उदय होना भाग्यकी बात है, यह भाग्य मनुष्यके हाथ मे है, वह जब चाहे बना बिगाड सकता है।

अपने को देखो। अपने मन तथा शरीर को देखो। जिस दिन तुम मानसिक शक्तियोंके मास्टर हो जाओगे, उस दिन तुम्हें अपना भविष्य उज्ज्वल दिखाई देगा। उस उज्ज्वल प्रकाश मे तुम स्वयं जज बनकर अपना फैसला लिखोगे—"मैं स्वय अपने भाग्य का विधाता हू। सफलतायें मेरे दाहिने बायें चलती हैं।"

तुम्हारी जिन्दगीका सम्पूर्ण उत्तरदायित्व मनकी सचालन क्रियापर निर्भर है। इसलिये मनको आकर्षक और अच्छे कार्योंकी तरफ दौडाओ। उसमे उज्ज्वल आशाओं का जन्म होने दो, उन्नत अभिलाषाओ को चक्कर काटने दो।

यह सही है मनकी खेतीमे जिन बीजोंको बोओगे—भविष्यमें उन्हीं को काटोगे। इसलिये मनकी खेतीमे बबूल न बोकर फूलों के बीज बोओ। तुम्हारी जिन्दगी खिल उठेगी और उसकी खुशबू से सारा ससार महक उठेगा।

[धनसे ही कोई मनुष्य—मनुष्य नहीं हो जाता। मनुष्य वे है जो मन शक्तियो के श्रेष्ठ मास्टर हैं। ससारकी समस्त शक्तिया जिनके आगे नतमस्तक हैं।]

हम दुख सुखकी आंधियों पर चल रहे हैं, मगर मन हमारे हाथ में है। समुद्रमें नौका डूब गई, यह सोचकर जिन्दगी क्यों डुबा दें। तैरनेसे किनारा अवश्य मिलेगा।

मनुष्य अन्तर्जगतका कर्ता है। अपने वैभव पाकर कौन नहीं सुखी होता? मनकी मिट्टीमें जो फूल खिल रहे हैं, मनमें आशाका जो चन्द्रमा उदय हो रहा है, उसके मालिक और संचालक स्वयं आप हैं। उसके आनन्दों को आपके सिवा कौन भोग सकता है?

अपने कानोंमें इन आवाजों को बिजलीकी तरह कौंधने दो और साथ ही जीवन डायरी में नोट कर लो:—"मैं जमीन पर चलते हुए मनको आसमानमें उड़ाकर देखूंगा—दुनिया किधर दौड़ी जा रही है; इस दौड़में मेरा क्या स्थान है? मैं आगे हूं या पीछे।"

—:o:—

घुमक्कड़ मन

तुम कोई काम करने जाते हो उसमें सफलता नहीं मिलती। तुम्हारी सारी दौड़ धूप बेकार हो जाती है। तुम फेल होकर भाग्यको कोसते हो, ज्योतिषियों को हाथ दिखाते हो, पण्डितोंसे पूजा पाठ कराते हो। फिर भी कुछ नहीं होता। क्यों? इसमें क्या रहस्य है?

मैं कहूंगा—तुम्हारा मन घूमता है। तुम जीवनके कानूनोंको नहीं जानते।

तुम मनको पूर्ण रूपसे काबूमें कर उसे शिक्षित क्यों नहीं बनाते? अशिक्षित और शिक्षित मनमें उतना ही अन्तर है, जितना चांदनी और अन्धकारमें! शिक्षित मनके मनुष्य मनुष्यत्वके गौरवको नहीं खोते। इनके कार्योंमें पशुओंकी प्रकृति नहीं होती। वह अपने को क्षणस्थायी जल बुद्बुद नहीं समझते, वे कहते हैं—मैं अनन्त आकाशका चन्द्रमा हूं। उनमें यह भद्दी भावना भी नहीं होती, जिन्दगी चार दिनकी है। वह अपने जीवनको चमत्कारोंका प्रकाश मानते हैं। उनकी अन्तिम गति श्मशान या समाधि क्षेत्रों मे नहीं होती, वह अंतर्देवता के चरणतलोंमें अमर हो जाते हैं। सफलता ऐसे ही मनुष्यको मिलती है।

मेरे एक बिगड़े दिल दोस्त हैं। किसी फिल्म कम्पनीके एकर एक दिन आप मस्ती से झूमते हुए मेरे पास आए और बोले—"मैं

आपकी जिन्दगीका बीमा करना चाहता हूं। मैंने एक नामी बीमा कम्पनी की एजेन्सी ली है।" मैंने इनकार कर दिया, क्योंकि मेरा जीवन-बीमा कई वर्ष पहले हो चुका था। मेरे मित्र जरूरतसे ज्यादा निराश हो गये, शायद नाराज भी, क्योंकि मैंने हफ्तों उनकी सूरत नहीं देखी।

एक दिन मैं विक्टोरिया मेमोरियलके बागीचे मे खिले फूलोंका रस ले रहा था। अचानक सामनेसे एक गोल चीज आती दिखाई दी। मैंने ध्यान से देखा, वह कोई आदमी था। थोड़ी देर बाद सामने आया,—मैंने पहचाना। वह मेरे वही दोस्त थे, जो मेरी जिन्दगी का बीमा कराना चाहते थे।

हंसी मजाक के बाद मालूम हुआ, आप इन दिनों रिक्शोंका कारबार करते हैं। फिलहाल किसी मोटर कम्पनी की एजेन्सी लेने की फिराक में हैं। कुछ दिनों बाद मैंने उन्हें चायकी एक छोटी दूकानपर बैठे देखा। मुझे देखते ही खिल गये और चश्मेवाली नाक ऊंची उठाकर बोले—"आजकल इसी पेशेमे हूं। अब एक अखबार निकालनेका इरादा है। कभी कभी आप भी लेख लिखते रहियेगा।"

इस तरह मेरे इस मनकी दोस्तने एक वर्षके अन्दर कई अवतार ले लिये। बीसों कारबार किये और छोड़े। उन्हें किसी काममें सफलता नहीं मिली। आजकल वह दाने-दानेके मुहताज हैं। कारण साफ है, उनका मन एक मिनटके लिये भी कहीं नहीं टिकता।

वह कभी नौकरीकी तिकडम लगाते हैं कभी शेयर मार्केट मे सट्टे का प्रोग्राम बाधते है। (एक काम आरम्भ करते हैं, दूसरा छोडते हैं और तीसरेके इश्कमे बेजार हो जाते है।) उनका मन कभी टूटी नौकाकी तरह ससार सागर मे डूबता उतराता है, कभी आधीकी तरह आसमानमे उडता है।

यह क्यों ? उनकी शक्तिया क्यों फेल हो रही है ? इसका प्रधान कारण है, उनका मन घूमता है। वह अपने मनको काबूमे नहीं रख सकते। उन्हें दैनिक कार्योंमे दिलचस्पी नहीं रहती।

ऐसे घुमक्कड मनके मनुष्यों की सख्या ससार मे बहुत ज्यादा है। ये मनुष्य असफलताओ के लिये स्वय अपने को अपराधी नहीं ठहराते। भाग्यको दोष देते हैं, ईश्वर पर कुढ़ते हैं और निराशाके अन्धकारमे मौत को टटोलते हैं।

मैं पूछता हू, तुम मन शक्तियोंको जगाते क्यों नहीं ? अच्छे काम करनेके लिये क्यों छोड देते हो, आज ही क्यों नहीं करते ? कल शायद तुम्हारा मन बदल जाय तो ?--नि सन्देह तुम निशाने से चूक जाओगे।

तुम्हारे मन मे वे अद्भुत शक्तिया है, जिन्हें तुमने न तो सोचा है, न देखा है। यह सच है मनुष्यके मनमे एक बार ऐसा विद्रोही समय आता है, जब वह मानसिक शक्तियोंके आनन्दको लेकर इस तरह मुग्ध हो जाता है कि उस समय न तो उसे कोई

चिन्ता रहती है, न फिक्र। उसे जीवनका अनन्त प्रेम विश्व धारा में तिनकेकी तरह वहा ले जाता है। उस समय वह अपनेको पहचानता है, और संसारके आनन्दोंको प्राप्त करता है।

तुम्हारे भविष्यकी आशायें तुम्हारे मनके अन्दर छिपी हैं। यदि तुम संसारमें सफलता चाहते हो, तो मनको घूमनेसे रोको। जिस कामको करो, उसमें ज्यादेसे ज्यादा दिलचस्पी उत्पन्न करो, उसकी हरेक बारीकी को समझो और उसकी गहराई तक पैठ जाओ। दूसरा काम तब तक शुरू न करो जब तक पहला पूर्ण रूपसे सफल न हो जाय।

रूप, रस और गन्धको लेकर संसार की रचना हुई है। मनुष्य इसके असीम सौंदर्यका प्यासा है। मगर उसकी मंजिल कांटोंसे भरी है। रोग, शोक, तथा विपत्तियां उसे विश्व का असीम आनन्द उपभोग करनेमें पद पदपर बाधायें डालती हैं। यदि हम इन बाधाओंको दूर नहीं करते, तो हमारा जीवन अभिशाप बन जाता है। हमारे लिये संगीतकी लीला भूमि स्मशान के रूपमें पलट जाती है और हम जीवन संग्राममें हर समय हारते जाते हैं।

मनमें किसी बातकी अभिलाषा होते ही यह न समझ लेना चाहिये फौरन उसकी पूर्ति हो जायगी। जिस अभिलाषा में शक्ति नहीं, उसकी पूर्ति असम्भव है। यह नहीं कि आज तुम्हारे मनमें एक अभिलाषा उठी और कल गायब। ऐसी

क्षणिक अभिलाषाको जन्म देकर मानसिक शक्तिको नष्ट न करो। तुम्हारे मनमे स्थायी अभिलाषा क्या है? इसे सामने रखकर उसकी पूर्तिका प्रोग्राम बनाओ। स्वयं अपने को और अपने भविष्यको देखो, अपनी गलतियोंका संशोधन करो।

मनकी एकाग्र शक्तियोने आज कितने ही फकीरो को अमीर बना दिया। कितने ही मूर्खों मे विद्वत्ताकी चमक आ गयी, नीचे गिरे ऊपर चढ गये। दुःख और सुख, अच्छा और बुरा सफलता तथा असफलता मनुष्यकी मन-शक्तियां पर निर्भर है। मनको कब्जे में रखकर तुम संसार मे सिर्फ सफल व्यक्ति ही नहीं कहे जा सकते, बल्कि बहुत वर्षों तक जीवित रह सकते हो तुम जो जवानी के उम्रमे बूढ़े हो गये हो—इसका प्रधान कारण यह है कि तुम्हारा मन हरदम चलायमान रहता है—तुम कभी उसे कब्जेमे नहीं कर पाते।

मनमे एकाग्र शक्ति प्रदान करने वाले मनुष्य ससार मे किसी समय असफल नहीं होते। मैं समझता हू, तुम इस विषय को गहराई के साथ अध्ययन करोगे और अपने व्यक्तिगत सौंदर्यके बढानेमे देर न करोगे।

स्वास्थ्य, प्रसन्नता तथा सफलता मनुष्यका जन्म सिद्ध अधिकार है। वह मानसिक शक्तियोसे अपने शरीरको बहुत दिनों तक कायम रख सकता है।

एकाग्रता

एकाग्रता के माने है—गुप्त ध्यान। गुप्त ध्यानसे सत्य प्रेम मिलता है, 'सत्य प्रेम से अभिलाषाओं पर विजय होती है। तुम एकाग्रता द्वारा उस अनन्त शक्ति के अटूट भंडारके साथ मिल जाते हो, जिससे इस ब्रह्माण्डकी उत्पत्ति है। यह सम्बन्ध स्थापित होते ही तुम शक्तिशाली बन जाते हो। सिद्धिया एकाग्रतासे प्राप्त होती हैं। और तुम्हारे मनमे जो संकल्प उठते हैं, वह सिद्ध हो जाते हैं।

एकाग्रतासे ऐसी कोई वस्तु नहीं, कोई घटना नहीं, जो इसके द्वारा प्राप्त या सम्भव न की जा सके। दूरदृष्टि; दूरश्रवण शक्ति पर विचार बोध, भविष्य ज्ञान, आकाश भ्रमण, भारी से भारी हो जाना इत्यादि एकाग्रताकी सिद्धिया हैं। तुम एकाग्रता द्वारा असत् से सत्य; अन्धकारसे ज्योति और मृत्युसे अमृतका आविष्कार करो। ब्रह्मा इसीसे सृष्टिकी रचना करते हैं, शंकर इसी शक्ति से संहारका नाटक खेलते हैं।

परन्तु हम मनुष्य हैं। यह हमारी मूर्खता है, जहा हम मनुष्योंकी उन्नतिके लिये देवी देवताओं या प्राचीन ऋषि मुनियों का उदाहरण पेश करते हैं, लोग हंसी उडाते हैं और इस तरहके उपदेश देनेवालोंको उल्लू बनाते हैं। ऐसे मनुष्य हृदयके दुर्बल होते हैं। ये अपनेको दुनियामें बलवान नहीं, कमजोर साबित

करते हैं। जमानेको दोष देते है। मगर जमानेको पलटनेकी कोशिश नहीं करते।

हम मनुष्य हैं, लेकिन हमें देवी देवताओं और ऋषि मुनियों के गुणोंको प्राप्त करनेका पूरा अधिकार है। इस अधिकार से हम जो आज है, भविष्यमें उससे बहुत अच्छे हो सकते है, और एक दिन बहुत अच्छे से सर्वश्रेष्ठ बन सकते हैं।

तुम्हारी विजय शक्ति है—मनकी एकाग्रता। यह शक्ति मनुष्य जीवनकी समस्त ताकतों को समेटकर मानसिक क्रांति उत्पन्न करती है। इसी क्रांतिमें तुम्हारा जीवन पलटता है और मनोकामनाएं पूर्ण होकर तुम्हारे सामने खुद प्रकट हो जाती हैं। उस समय तुम अपने लिये उतने ही बड़े हो जाते हो जहां तक की पहुंचनेकी कोशिश करते हो। तुम उतने ही लम्बे चौड़े हो जाते हो, जितनी की तुम्हारी कामनाएँ हैं।

यह एक ऐसा वैज्ञानिक तत्व है, जो एक दिन मुर्दा जीवनमें अमृतकी वर्षा कर सकता है। बाधा विपत्तियों को छिन्न भिन्न कर सकता है। रास्तेके कांटे को फूलमें बदल सकता है। तुम अपने मनको इन मनोवैज्ञानिक कानूनों मे लगा दो—अद्भुत चमत्कार देखने को मिलेंगे।

आज एकाग्रताके बल से संसार के शक्तिशाली मनुष्य दुनिया में बड़े से बड़े काम कर रहे है, ज्यादे रुपये कमा रहे है और अपनी उज्ज्वल कीर्तियोंको दसों दिशाओंमे चमका रहे

हैं। हम उनकी वैज्ञानिक ताकतोंको देख कर चौंकते हैं, उनके आविष्कारो **पर** आश्चर्य करते हैं, और अपने लिये कुछ नहीं कर सकते। अफसोस।

हमारी बेवकूफीका प्रधान कारण यह है कि हम भाग्य और कमजोरियों के गुलाम बन गये है। हमारे अन्दर पशुओ की अज्ञानता घुस गयी है।

आखें खोल दो। ससारकी तरफ देखो। वे मनुष्य जिनकी जिन्दगी सफल है, जीवन धन्य है, एकाग्रता से अभिलाषाओंको मुट्ठीमें करते जाते है। आज चाहे वे जागते हों या सोते, यात्रा करते हों या घरपर बैठे हों—वे मन शक्तियोंके मास्टर हैं। वे जिस रूपमें जहा चाहते हैं, भाग्य चक्रको घुमाते है और युगातरकारी सफलतायें प्राप्त करते हैं।

एक धान कूटनेवाली स्त्री एक हाथ से ढेकी चलाती है, दूसरे से उछलते हुए धानों को समेटकर ऊखलमे डालती है साथ ही ग्राहकोंके साथ धान का मोल तोल भी करती जाती है, परन्तु यह सब होने पर भी ऊखल में पड कर कहीं हाथ में चोट न आ जाय, वह पूर्ण सतर्कता के साथ अपने मनको प्रधान कार्य मे एकाग्र रखती है। इसी तरह तुम अपने संसारिक कार्यों को करते हुए भी अपने प्रधान कार्य में मनको एकाग्र रखो। श्री कृष्ण भगवान गीतामे कहते हैं—"इन्द्रियोंमें मन मैं हू।" मन जिस पदार्थ को देखता है, उसीके आकारका हो जाता है। तमोगुणी पदार्थ का ध्यान करनेसे तमोगुणी, सत्वगुणी पदार्थोंका ध्यान करने से

सत्वगुणी हो जाता है। इसी लिये मनको बुरे कार्योंमें न दौड कर सुकार्योंमें एकाग्र करो। जीवन विजयकी यह महान मन्त्र शक्ति है।

मनकी एकाग्रता मनुष्य जीवन पर कैसा गहरा असर डालती है, ऐसी दो घटनायें मैं तुम्हारे सामने पेश करता हूं।

एक गृहस्थ ने अपने कमरेमें एक कुमारीका सुन्दर चित्र टाग रखा था। उससे मिलने वाले एक सज्जनने उस चित्र को देखकर कहा—आपकी पुत्री—जिसे मैंने अभी देखा है—का यह चित्र बिल्कुल जैसे का तैसा है। एकदम हूबहू—वैसे ही हाथ पाव वैसा ही रुप रङ्ग। आपने इसे किसी कुशल चित्रकार से बनवाया था—क्या ?" गृहस्थने उत्तर दिया—"यह चित्र मेरी पुत्रीका नही है। हां, इस चित्र के अनुसार ही मेरी पुत्रीकी रचना हुई है।" इसपर आगन्तुकने विस्मित होकर कहा—आप क्या कह रहे हैं ? इस चित्रके अनुसार आपकी पुत्री की रचना हुई है ? कोई शिल्पी या मूर्तिकार नमूनेके अनुसार जिस तरह सुन्दर मूर्ति बना देता है उसी तरह क्या आपने भी इस चित्रानुसार अपनी पुत्रीका शरीर बना लिया है ?" गृहस्थने जवाब दिया—"मेरी पुत्री जब गर्भ में थी, तब उसकी माताने इस चित्रका एकामना पूर्वक ध्यान किया था तथा इसी तरहकी सुन्दर आकृति वाली पुत्री मेरे भी हो, ऐसी दृढ़ इच्छाकी थी। इसीके परिणाम स्वरूप इस चित्र के अनुसार हमारी कन्या हुई।"

दूसरी घटना यों है—

एक स्त्रीका सद्गुणी बालक उसकी बहिन के यहां कुछ दिनों तक रह चुका था। इस बालकके चाल चलन और व्यवहारों पर मुग्ध होकर वह स्त्री इस बालक को अपने पुत्र से ज्यादा प्यार करने लगी और बारबार उसी बालक का स्मरण चिन्तन करती रही। कुछ दिनों बाद उसी स्त्री के एक बच्चा हुआ जो रूप रङ्ग आदि सभी बातोंमें उस बालक से इतना मिलता था कि जब वह आठ वर्ष का हुआ, देखनेवालों को दोनों बालक सहोदर भाईके समान दिखाई देते थे।

ऐसी घटनायें रोज घटती हैं। अब हमें ध्यान पूर्वक यह देखनेकी जरूरत है कि तुम घूमते मनको किस तरह कब्जे में कर "एकाग्रता" प्राप्त कर सकते हो। रास्ता साफ है। पहले तुम मनमें यह तय करलो हम क्या चाहते है, हमारा उद्देश्य क्या है? जब इसका निर्णय हो जाय, तब पूर्ण शक्तियों के साथ आगे बढ़ो। मान लो, तुम खजानेमें सोने का ढेर देखना चाहते हो, तो तुम्हारा पहला कर्त्तव्य यह है, घूमते मन को काबू में करो। एक मनसे सोने के स्वप्न देखो, सोने की कल्पनाएँ करो—यहाँ तक कि अपनेको खुद सोना बना डालो, दूसरी अभिलापाओं को पास न फटकने दो—फिर देखो चमत्कार एक दिन तुम्हारे खजाने में सोना ही सोना दिखाई देगा।

हम लोगों में एक छोटी सी कहानी बहुत मशहूर है—जङ्गल में एक शिकारी धनुषकी डोरी ठीक कर रहा था। वह अपने काम में इस कदर एकाग्रचित्त था कि एक बड़ी फौज उसी रास्तेसे निकल

गयी। फौजके चले जानेके बाद वहा एक सन्यासी आया। उस ने शिकारी से पूछा—"क्योंजी इधर होकर अभी फौज गयी है न? शिकारीने कहा—"नही।" सन्यासीने शिकारी को अपना गुरू बनाया, क्योंकि वह अपने कार्यमें इतना दत्तचित रहने की शक्ति वाला था कि फौज निकल गयी—मगर उसे पता तक नहीं।

तुम अपने कार्यमें शिकारी की तरह तल्लीन रहो और याददास्त के लिये इस कहानी को नोट कर लो।

यदि तुम्हारा मन घूमता है, बहुत कोशिश करने पर भी तुम उसे कब्जे मे नहीं कर पाते—तो फुरसत के समय कोई उपन्यास पढ़ो, कहानियों की पुस्तकें ज्यादा लाभदायक होगी। जब इनमें आनन्द आने लगे तब क्रमश आध्यात्म, दर्शन और उपनिषद्‌की ओर बढो। सगीत से प्रेम बढाओ। जादू के खेल, श्रेष्ठ फिल्मे और भावपूर्ण नाटक देखो। अपने अन्दर ज्यादा दिलचस्पिया और प्रसन्नतायें उत्पन्न करो। एकाग्र शक्ति बढानेकी यह सुनहरी कुञ्जिया हैं।

यदि तुम एकाग्रचित हो रहे हो तो इसका यह मतलब हुआ कि अपने ऊपर जादू कर रहे हो, गुप्त शक्तियों को जगा रहे हो और सफलताकी सीढियो पर चढ रहे हो।

आनन्दमय जीवन

चिन्ता, उदासी, बेचैनी और निराशा,—ऐसी बीमारियाँ हैं, जो मनुष्यकी मानसिक शक्तियोंको नष्ट कर देती हैं—उसका जीवन अन्धकारसे घिर जाता है, स्वभावमें चिड़चिड़ाहट आ जाती है और वह जरा जरासी बातपर अनर्थ कर बैठता है।

मैं पूछता हूं, तुम इन बीमारियों को मनमें स्थान क्यों देते हो? इन्हें फौरन हटाने की फायदेमंद दवा है—आनन्दमय जीवन। वह आनन्दमय जीवन, जिसके सुखका संगीत है—सफलताओं का मधुर मिलन! जिस दिन तुम आनन्द के सौंदर्यसे अपने प्राण मिला लोगे, तुम्हें कोई पाप-ताप न जला सकेंगे, तुम कालचक्रके महासमरमें विजयी होगे और हमेशा जवान रहोगे।

यदि दुनिया तकलीफोंसे भरी है तो भरी रहे। पर इसी कारण तुम निराश न हो। अनन्त आनन्दमय जीवनका जो स्रोत तुम्हारे चारों ओर प्रवाहित हो रहा है, उसमें तुम्हारा स्थान एक तरङ्ग के सामन है। इसलिये संसारके दुःखोंको अपना दुःख समझना हृदयमें सहानुभूतिके भाव उत्पन्न करना तुम्हारा धर्म है। आदर्श पुरुष वही है जो दूसरोंको दुखी देखकर या स्वयं दुख पाकर मुखसे 'आह' नही निकालता और जीवन-यात्रामें असत्यका सहारा नही

लेना। तुम्हें अपना स्वभाव कुछ ऐसा बना लेना चाहिये, जिसकी बदौलत संसार सदा सुन्दर और आनन्दमय दिखाई दे।

सबकी ओर देखो, संसारकी ओर देखो और देखो अपनी अन्तरात्माको। यह कौनसी वस्तु है, जो तुम्हारे जीवनको संचालित करती है? समस्त नीति और उपदेशोंमें यह कौनसी प्रेरणा है, जो मानव-समाजको नियन्त्रित कर रही है? मैं जीवित रहूं अपनेको ऐश्वर्य मन्डित करूं और संसार पर प्रभुत्व कायम करूं—यही तो मानव हृदय की सच्ची आवाज है। यदि यह नहीं, तो कौनसी वस्तु उसमें शेष है, कोई बताये तो?

जरा देखो—हमारा हर रङ्ग मस्तीका मयखाना है। हमारी हर उमंग हाथोंमें मस्तीका प्याला लिये नाच रही है। हम अपने मुस्कराते होठों पर कामनाकी प्यास लेकर इसे मस्तीके साथ पियेंगे। मनमें यही क्रांतिकारी तूफान आने दो। इस क्षणमें तुम वही कीमती चीजें प्राप्त करोगे जिसे वर्षोंसे खोज रहे थे।

आनन्दमय संसार में हमारे लिये सुखका भण्डार सब समय खुला है, मगर हम झूठी शानमें इस कदर चूर हैं कि उनकी तरफ हमारा ध्यान नहीं जाता। यदि हम उनके साथ हिलमिल जायें तो उनके सौंदर्यसे हमारा जीवन जगमगा उठे और हमारी सफलताओं का सूर्योदय हो जाय!

तुम प्रसन्नताओं को ढूंढो। वे झुण्डकी झुण्ड तुम्हारे आसपास

घूम फिर रही हैं। ठीक सोचो, सही रास्ते से चलो, छोटी वस्तु को स्वीकार करो। बड़ी चीजें खुद-ब-खुद तुम्हारे पास दौड़ी चली आयेंगी।

जिस आनन्द को प्राप्त कर मनका अन्धकार दूर हो जाता है, संसार के प्रत्येक मनुष्य सुन्दर दिखाई देते हैं, हृदय में सहृदयता जन्म लेती है, तुम्हें वही आनन्द प्राप्त करनेकी जरूरत है।

सच्चा आनन्द ऐसा है जिसका असर मनुष्य की नसों व मांस पेशियों पर पड़ता है। अन्य नशीली वस्तुओंमें और आनन्द के नशेमें यह भेद है कि इसका नशा शरीरमें अपने आप उत्पन्न होता है, और सौंदर्य भावनाओंसे उत्तेजित होकर दिन-ब-दिन आगे बढ़ता है।

मगर सच्चा आनन्द कहते किसे हैं? वह हमें कहां से प्राप्त होता है? मैं कहूंगा—मनुष्य के प्रेमसे।

तुम सुन्दर चीजोंको देखो। अपने चारों ओर सौंदर्यका वातावरण उत्पन्न करो। सौंदर्यके उपासक बनो। सौंदर्यका सच्चा आनन्द इन्सान ही ले सकते हैं, हैवान नहीं।

यदि तुम्हें आनन्द नहीं मिलता, तो जङ्गलों, पहाड़ों और बाग बागीचोंकी सैर करो। हरियाली का आनन्द लूटो। रङ्गीन फूल-पत्तियोंका अध्ययन करो, किस्म-किस्म के जानवरोंको देखो। चिड़ियोंका गाना सुनो। नदी किनारे टहलो और समुद्रकी लहरोंमें अपनी उमंगें तैरने दो।

नवीन श्याम शोभासे संसार उन्मत्त हो रहा है। सूर्यकी प्रत्येक किरण के साथ सौंदर्यकी लहरें उठ रही हैं। हवाके प्रत्येक झोंकेके साथ सौरभकी तरंगें तरंगित हो रही हैं प्राकृतिक दृश्य के कण-कणमें आनन्द है। आनन्दकी सृष्टि करो। तुम्हारी इस साधनामें मानव जातिका महा कल्याण है।

मनुष्य मात्रसे प्रेम करो। इस प्रेममें वह जीवन, वह आनन्द है जिसमें विरह नहीं। एक मनुष्य जाता है, सूने सिंहासन पर दूसरे आदमी का राजतिलक होता है। वह भी जा सकता है, मगर मनुष्य जातिका संसारसे लोप होना असम्भव है। इसी लिये कहता हूं—मनुष्य मात्रसे प्रेम करो, इस प्रेममें विरह नहीं है। यदि तुम समस्त जातिको, समस्त संसारको अपने विशाल हृदय में स्थान दोगे, तो तुम्हारा जीवन स्वर्गीय आनन्दोंसे भर जायगा। वह स्वर्गीय आनन्द शत-शत फूलोंमें खिल रहा है, उषाकी स्वर्ण रेखाओंमें नाच रहा है।

तुम इस आनन्दकी खोजमें पागल हो जाओ। तुम्हारे मार्गमें चाहे बिजली कड़कती हो, पत्थर बरसते हों—पीछे न लौटो, न लौटो। शक्तियां जागरणकी तेजस्वी तरंगें हैं। इन तरंगोंके समुद्र मन्थनसे तुम्हें जो अमृत प्राप्त हो, उसे निर्भीकतापूर्वक पी जाओ। तुम्हारे जीवन प्रदेशमें नवयुग आरम्भ होगा।

आनन्द मनुष्यका हृदयहारी क्यों है? इस प्रश्नके अनेकों उत्तर हैं। जो चीज हमारे लिये संसारमें नहीं मिलती, आनन्द

में उसे हम प्राप्त कर लेते हैं। जो चीज कहीं नहीं दिखाई देती—आनन्दकी दुनियामें हम उसी के दर्शन करते हैं।

दीपक जैसे घरको जगमगा देता है। आनन्द उसी तरह जीवनको उज्ज्वलता से भर देता है। आनन्दकी अनुभूति जीवन की समस्त जड़ता मिटा देती है। आनन्द हमारे लिये वह रत्न है, जिसके छूने से जीवनकी प्रत्येक वस्तु सोना बन जाती है।

तुम आनन्दके बलसे बलवान होकर संसार की अशान्तिको दूर करो। भूमण्डलमें स्वर्ग राज्य की स्थापना करो। हम लोगों में आज्ञानता भरी है कि संसार दुःखमय है। इन दुखोंका कारण है हमारी इच्छा। जबतक हम अपनी इच्छाओंको नहीं बना डालते—दुखोंसे उद्धार पाना कठिन है।

बूँद-बूँदसे घड़ा भरता है। कण-कण भापसे मेघों की सृष्टि होती है। क्षुद्रजल बिन्दुको लेकर महासिन्धु की उत्पत्ति हुई है—तुम जरा-जरा आनन्द संचित कर जीवन को आनन्दोंसे भर दो। आनन्दमय जीवनमें रूप, यौवन, प्रफुल्लता, सुख और आशाएं सब आ जाती हैं। मनुष्य जीवन धन्य हो जाता है।

जिस तरह सधवा स्त्रीके सोहाग सिन्दूर बिना बाहरी चमक-दमक और गहने कपड़ोंकी शोभा नहीं बढ़ती, उसी तरह बगैर आनन्दमय जीवनके मनुष्यकी कद्र नहीं होती। आनन्दकी खोज मनुष्यका सौभाग्य है। बेशकीमती कपड़े या शृंगार तब तक फीके हैं, जब तक तुम्हारे हृदय में सच्चा आनन्द न

हो, शरीर में शक्ति न हो, चेहरेमें चुम्बक न हो। तुम्हारे आनन्दमय जीवन में इस आकर्षणकी आवश्यकता है, जो तुम्हें चुम्बक बना दे। फिर तुम जिस सभा में जाओ, जिस एकान्त में बैठो। लोग तुम्हारी तरफ खिंचे बिना न रहेंगे।

क्या जीवन का ऐसा आकर्षण तुम्हारे पास है? क्या तुमने आईने में अपना रूप रङ्ग देखा है? क्या तुम्हें सन्तोष है तुम्हारे शरीरमें इतना लावण्य है कि तुम दूसरों पर मोहनी डाल सकते हो? यदि नहीं तो समझ लो, तुम्हें ऐसे आनन्द साधन की आवश्यकता है, जिससे तुम्हारे स्वभाव पर लोग मुग्ध हो जायं, तुम्हारे शरीर में अद्भुत चमक पैदा हो। तुम जहां जाओ जिससे भी मिलो—हरेकको काबू में कर लो, और तुममें सच्चा आत्मविश्वास उत्पन्न हो जाय।

आनन्दकी खोजके लिये तुम्हारी स्वभाविक गति जिधर जाना चाहती है, उसे उधर ही जाने दो। काल्पनिक धर्मका भार डालकर जीवन को पंगु न बनाओ। मनुष्यके अन्तरधर्मके खिलाफ पाप पुण्य, नीति अनीतिका पचड़ा अपराध है।

आज कल कुछ मनुष्योंमें यह भावना घुस गयी है कि सच्चा आनन्द विलासितासे हासिल होता है; किन्तु यह भूल है। विलासिता जीवनमें सच्चे आनन्द भाव नहीं जगा सकती। विलासकी चमक-दमक बाहरी ऐश्वर्योंकी क्षणिक आभा है। उसका मानसिक आनन्द से स्थायी परिचय नहीं प्राप्त होता। विलासी मनुष्यों के हृदय खोखले वृक्षके समान हैं, जिसमें कितने

की जहरीले कीड़ों का अड्डा होता है और उसकी कीड़ा कल्लोलों द्वारा मनुष्य जीवन की जड़ अपने हाथों काटना है।

जो मनुष्य विलासिता के जहरीले वायुमंडल से दूर हैं, सच्चे आनन्द के वही साधक और मनुष्य जाति के दिव्य नेत्र हैं। वह चाहे बाहरी बातोंमें तुम्हें पाषाण दिखाई दें मगर उनका अन्तर्जगत फूल की तरह कोमल है उनके हृदय में भोली अबलाओंके भोलेपन का शीतल झरना झरता है। उसकी इच्छाएं स्वभावतः संसार के दुःखोंको नाश करती हैं उसकी कामनाएं संसार की हितसाधिनी हैं, उनकी आशाएं बसन्त जैसी प्रिय संवाददायिनी और कोकिल कण्ठी जैसी पीयूषवर्षिणी हैं।

तुम जीवन के मानसिक बोझेको बहादुरकी तरह ढोओ। मनुष्य गौरव को चमकाओ। सड़कों पर आजादी और मस्तीके साथ छाती निकाल कर चलो। खूबसूरत मकानों, विशाल अट्टालिकाओं, बाग बगीचों पार्कों और सुन्दर वस्तुओं को देखो तथा मन में इस बात की सनसनी फैलने दो—यह सब हमारे हैं इन सबका मालिक मैं हूं

मैं ऐसा क्यों कह रहा हूं—जानते हो ? मनुष्य जीवन का तत्त्व यह है कि वह जो कुछ देखता सुनता है और उसे गहराई से सोचता है—भविष्यमें वही उसका भाग्य बन जाता है और वह उसी भाग्य द्वारा अपनी जीवन नौकाको संसार सागर में खेता चलता है। आओ हम सब एकसाथ मिलकर आनन्दमय जीवन की उपासना करें। हमारा भविष्य उज्ज्वल, अत्यन्त उज्ज्वल है।

विलपावर

"विलपावर !" नाम ही सनसनी खेज है। एक-एक अक्षर मानो बिजली का प्रकाश है। एक-एक शब्द मानो ज्वालामुखी का रेशमी धुआं है।

यह क्या चीज है, ?—यह है तुम्हारा "दृढ़ संकल्प" "आत्मबल"। मनोवैज्ञानिक इसे 'विलपावर' कहते हैं।

यह वो चीज है, जो मुर्देमें नवजीवन संचार करती है। इसे पाकर मनुष्य आकाश पाताल पर विजय पा सकता है। भाग्यको जिस तरफ चाहे घुमा सकता है। उसके लिये दुनिया में कोई काम असम्भव नहीं। वह कहता है "भाग्य सैनिक है, मैं सेनापति !"—"भाग्य गुलाम है, मैं बादशाह !"। मनुष्य की मानसिक चिन्ताओं को जड़ से काट कर फेंक देना 'विलपावर' का पहला काम है। चाहे तुम लाख विद्वान चतुर या बुद्धिमान हो, परन्तु यदि तुममें 'विलपावर' का अभाव है, तो तुम्हारा दिल और दिमाग किसी काम का नहीं—याने ढोलके भीतर पोल है। तुम संसार में कोई अनोखा काम नहीं कर सकते।

किसी ने 'विलपावर' वाले मनुष्य के सम्बन्ध में ठीक ही कहा है:—

"बहादुर मर्द शेरे दिल कि जब कुछ करने जाते हैं,
समंदर चीर देते, कोह से दरिया बहाते हैं।"

कर्मयोगी श्री कृष्ण अर्जुन से कहते हैं—हे कुरुकुल के आनन्द देने वाले अर्जुन! कर्मका मूल तत्व दृढ़ संकल्प (विलपावर) है। यह मेरा कर्तव्य है,—इतना ही जानकर दृढ़ता के साथ काम करते रहना चाहिये। जिसमें यह दृढ़ संकल्प 'विलपावर' नहीं है, वह कुछ नहीं कर सकता।

नेपोलियन को लो। वह दुर्बल और कमजोर था, मगर उसने 'विलपावर' से सारे संसार में तहलका मचा दिया। योरोप के शक्तिशाली मनुष्य भी नेपोलियन का नाम सुनकर नींदसे चौंक पड़ते थे। क्यों? नेपोलियनके पास 'विलपावर' की जादू भरी चाभी थी, जो अखण्ड यन्त्र के समान घूमती हुई उसके मनोबल को दृढ़ रखती थी। वह कहता था, असम्भव शब्द मूर्खोंके ही शब्दकोष में पाया जाता है।

बात ठीक है। मुसलमानों के पैगम्बर मोहम्मद साहब अरब के जाहिल आदमियोंमें—जो उन्हें मार डालने तक को तैयार थे, एकेश्वरवाद याने खुदा एक है, का उपदेश देते थे। स्वामी दयानन्द सरस्वती मस्जिदों मे ठहरते और निर्भीकता पूर्वक मूर्ति पूजा तथा इस्लामी मत का खण्डन करते थे। यह क्यों? इसकी क्या वजह है? असलमें इन महापुरुषों के हृदय में 'विलपावर' का महासमुद्र था, जिसकी लहरें उठ-उठकर

मनुष्योंके मन मे समा जाती थीं। तरङ्गों मे इतना आकर्षण होता था कि मनुष्य सहज ही में उनपर मुग्ध हो जाते थे और उन्हें पाकर अपने दिलका दर्द दूर करते थे।

इसलिये कहता हूं, 'विलपावर' महा शक्तिशाली है। इस 'पावर' को पाकर मनुष्योंमें निर्भयता जागती है वे संसार को बडेसे बडा लाभ पहुंचा सकते हैं। यह वो 'पावर' है जो सूर्य किरणों से ज्यादा गर्म और चन्द्र रश्मियों से ज्यादा शीतल है। मानव विज्ञान कहता है—'विलपावर' से मनुष्य में जिन इच्छाओं का विकाश होता है, वह उसे अवश्य मिलती हैं।

महाराज तिलक 'विलपावर' के सच्चे उपासक थे। उन्होंने एक ज्योतिषी से कहा था—"यदि मैं फलित ज्योतिष पर विश्वास कर चुप बैठा रहता तो दुनिया में कोई भी महत्वपूर्ण कार्य न कर सकता।"

एक दिन इसी 'विलपावर' को पाकर बंगाल के विद्रोही कवि नजरुल इस्लाम शेरकी तरह गरज उठे थे—

("जगदीश्वर" ईश्वर आमि पुरुषोत्तम सत्य,
आमि नाचिया नाचिया माथिया फिरि ए स्वर्ग पाताल मर्त्य"।
अर्थात—"मैं जगदीश्वर हूं, ईश्वर हूं—पुरुषोत्तम सत्य हूं। मैं ताण्डव नृत्य मे मत्त हो कर स्वर्ग, पाताल, मर्त्य सबको मथता फिरता हूं।")

'विलपावर' वाले मनुष्य, बुद्धिमान, उद्योगी और तेजस्वी

होते हैं। वे नहीं चाहते कि उनके ऊपर कोई ताकत रंग जमाये। ऐसे अवसरों पर वह आग की तरह धधक उठते हैं और अपने आसपास के लोगों में बिजली भर देते हैं।

हम लोगोंका सबसे बड़ा अपराध यह है कि हम किसी आदमी की उन्नति देखकर जल उठते हैं। दूसरों की मुसीबतों का मजाक उड़ाते हैं। सामने दोस्त बनते हैं अगल बगल कैंचियां चलाते हैं। हमारी दुर्दशाओं का मूल कारण यही है हम 'विलपावर' को भूल गये हैं!

'विलपावर' हरएक मनुष्य में समान है। मगर जो उसे पहचानते हैं, जिन्दगी को चमका देते हैं। जो नहीं पहचानते वह दीन हैं,—मुसीबतों के शिकार हैं।

यदि तुम ''विलपावर' को अभी तक नहीं पहचान सके, तो अपने पर पूर्ण विश्वास करो और अपनी दुर्बलताओं को ढूंढ़ो जरा भी अधीर होने की जरूरत नहीं। मानसिक शक्तियों के सङ्गठनका ही नाम 'विलपावर' है।

स्वावलम्बी बनो। अपने कार्यकी सिद्धि के लिये दूसरों पर भरोसा न करो। 'विलपावर' तुम्हें अवश्य प्राप्त होगा। वह तुम्हारे अन्दर आत्मोन्नति का मन्त्र फूंकेगा, तुम्हें उत्साह प्रदान करेगा, अपने मल्हम से घावों को भरेगा। फिर तुम्हें किन कांटों का डर? 'विलपावर' प्राप्त कर तुम जिस काममें हाथ डालोगे, उसे पूरा कर छोड़ोगे।

जिन मनुष्यों मे 'विलपावर' याने आत्मबल नहीं है, जो एक विचारधारासे दूसरी विचारधारा पर छलांग मारते हैं; वह कोई महत्वपूर्ण कार्य नहीं कर सकते।

यह याद रखने की बात है—कि सबसे बुद्धिमान आदमी अपने ग्रहों पर शासन करता है।

यदि तुम अपनी इच्छाओंकी पूर्ति चाहते हो तो आत्मबलका सहारा लो। तुम अपने भाग्यके स्वयं निर्माता हो। फिर दुःख और निराशा क्यों ?

'विलपावर' कोई अरेबियन मैजिक चीन का जादू या कामरू देशका वशीकरण नहीं, यह सिर्फ तुम्हारे हृदय का महान सिद्धान्त है जो खूनकी तरह तेज और संगीत की तरह मधुर है। इसे पाकर सूर्यकी रोशनीमें रहनेवाली ऐसी कोई वस्तु नहीं, जिसे तुम न पा सको। आज ही निश्चय करलो—हम आत्मोन्नतिके लिये 'विलपावर' से काम लेंगे, अपनी अभिलाषाओंको पूरी करेंगे। जब तक जियेंगे, जिन्दगीको चमका कर रखेंगे।

तुमने अक्सर कुछ ऐसे आदमियोंको देखा होगा जो ज्यादातर मौन और गम्भीर रहते हैं। उनसे तुम पचास प्रश्न करो वे चुप रहेंगे—जैसा गूंगे बहरे हों। मगर एक बार वह तुम्हें ऐसा जवाब दे देंगे जो तुम्हारे पचास प्रश्नों का एक ही जवाब होगा। ऐसे मौन या गम्भीर व्यक्ति 'विलपावर' के बड़े तेज होते हैं।

'विलपावर' को सफल बनाने के चार रास्ते है। पहल

यह कि तुम कोई सिद्धान्त उत्पन्न करो। दूसरा—सिद्धान्तमें कोई इच्छा प्रकट करो। तीसरी—इस बातकी प्रतिज्ञा कर लो कि मैं अपनी इच्छा पूर्ण करके ही दम लूंगा। चौथा—इच्छापूर्ति के लिये प्रबल उद्योग करो। जहां इन बातोंकी तुममें आदत पड़ी तहां तुम्हारी आत्मा जगमगा उठेगी! तुम हर काम में सफल होते जाओगे।

जमाना तेजीसे पलट रहा है हर मनुष्य आगे बढ़ रहा है। अपनी काया पलट करदो, स्वभाव बदल दो। ठीक उसी तरह जिस तरह तुम बैलगाड़ी छोड़कर आज मोटर की सवारी करते हो। उन्नतिकी रेसमें तुम्हारा नम्बर हमेशा पहला होना चाहिये।

'विल्पावर' से विद्यार्थी परीक्षा में पास होते हैं। व्यापारी अपना व्यापार चमकाते हैं, ऐक्टर सुयश और सफलता के दर्शन करते हैं, गरीब रुपयोंका ढेर पाते हैं और अमीर महाराजाओं की श्रेणी में जा बैठते हैं।

'विल्पावर' प्राप्त करो। किसी के चरण चिन्हों पर न चलो। पुण्यशील नहीं, धीर्यधारी बनो। सन्यासी नहीं, गृहस्थ बनो। साधारण नहीं, देवता बनो। अपनी हंसती खेलती दुनिया कायम करो तुम्हारा देश राजर्षियों और देव ऋषियों से भर जायेगा। यह कविकी कल्पना नहीं, तुम्हारे आत्मबल का चमत्कार है—जो एक दिन हर मनुष्य को प्राप्त होता है।

—१०१—

भयका भूत

तुम्हारे दिमाग में एक ऐसा दुश्मन रहता है जिसकी याद करते ही बदन के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। और हमारी हालत कुछ वैसी ही अन्धकारमय हो जाती है, जैसे पहले दिन मां के पेटसे जन्म लिये बच्चे की।

. क्या तुम जानते हो—यह दुश्मन कौन है? भय का भूत।

'भय' ने मनुष्योंमें सैकड़ों खतरनाक बीमारियां फैलाई हैं। भय' हमारे जीवनके सुख, सौंदर्य, स्वास्थ्य और शक्तियों को भूखे राक्षसकी तरह भोजन करता है। आज संसार में लाखों करोड़ों आदमी सोनेके सिंहासन पर बैठे दिखाई देते, यदि उनके दिमाग में भय का भूत न समाया होता। आज जिन्दगी को चमकाने में करोड़ों आदमी इसलिये फेल हो गये कि उनके अन्दर भयका भूत सुदर्शन चक्रकी तरह घूमता रहा।

'भय' जीवनका जहर है। यह मनुष्यों से प्रेम सम्बन्ध जोड़नेमें बाधायें उपस्थित करता है, हमारी ताकतोंको कमजोरियों में पलट देता है। इसके कुसंगसे मनुष्य ठीक वैसा ही हो जाता है, जैसा काल कोठरीमें लोहेको जंजीरोंसे जकड़ा कैदी।

क्या तुमने कभी भयकी खूंखार सूरत पहचाननेकी कोशिश की है? मैं समझता हूं—नहीं।

'भय क्या है ? वहमकी बीमारी।'

देखो, जब तुम अच्छी और दिलचस्प बातें करते हो, तब तुम्हारे होठों पर मुस्कुराहट दौड़ जाती है, दिल गुदगुदा उठता है, तुम खुश हो जाते हो। मगर जिस समय खून, डकैती और मौत की कहानिया सुनते हो, भूत प्रेतके किस्से पढ़ते हो, फासी के दृश्य देखते हो—तब ? मैं समझता हू, तुम घबरा जाते होगे और तुम्हारे दिमागमें फौरन 'भय' समा जाता होगा।

एक दिलचस्प किन्तु बेवकूफियोंसे भरी घटना सुनिये—

सन् १६३६ की बात है। कलकत्ते में एक दिन अफवाह जोरोंसे फैली कि अमुक दिन शाम को भीषण भूकम्प आयेगा और सब आदमी इमारतोंके नीचे कुचलकर मर जायँगे।

अब जनाब। इस तूफानी अफवाहसे कलकत्ता निवासी इतने भयभीत हो गये कि चन्द घन्टोंके अन्दर आधा शहर खाली हो गया। भयभीत भगोडो मे अमीर, गरीब, शिक्षित, अशिक्षित सभी किस्मके लोग थे। स्पेशल ट्रेनें दौड़ने लगीं। घोडागाडी रिक्शा, टैक्सी वालोंकी बन आयी। उन्होंने मनमाने पैसे वसूल किये। जनाब भगदड मच गयी। सैकड़ों मकानोंमें ताले पड गये। सड़कों पर हड़तालका दृश्य नजर आने लगा। जिधर देखो उधर सन्नाटा। किलेके मैदान और पार्कोंमें नरमुण्डोंका मेला लग गया। सबके दिल में एक ही सनसनाहट, एक ही बेचैनी, एक ही खतरा था—भूकम्प आया, आया और अब

आया। बूढ़ोंने राम नामकी माला जपनी शुरू की, नौजवानों की आंखें आसमान में ईश्वर को ढूंढने लगीं। औरतोंने मन ही मन देवी देवताओंको टटोलना शुरू किया। अद्भुत दृश्य देखनेमें आये। दोपहर मुस्कुराती चली गयी, सन्ध्या भी गयी रातने विश्रामका बिगुल बजाया, मगर न भूकम्प आया, न प्रलय हुई। लोग स्त्री बच्चों के साथ झेंपते हुये घर लौटे। शहर वाले उन्हें बनाने लगे—आप भी खासे बौड़म निकले।

देखा तुमने? उस दिन इस मिथ्या भयसे कलकत्तेमें लाखों का नुकसान हुआ।

एक दूसरी घटना सुनो, जो कलेजेको हिला देती है:—

एक व्यापारीके व्यापार का चक्कर बिगड़ गया। वह जरूरत से ज्यादा भयभीत हो गये। मरता क्या न करता? उन्होंने अपनी विपत्तियों और भ्रमकी बातोंको हर आदमी से कहना शुरू किया-यह सोचकर कि इससे मेरी मुसीबतें कम हो जायंगी लोग मेरे प्रति सहानुभूति प्रकट करेंगे और मुझे मदद पहुंचायेंगे। मगर नतीजा उल्टा हुआ। लोगोंने उनकी बदनामी शुरू कर दी। दोस्त दुश्मन हो गये। कारबार फेल हो गया। हजारों डिग्रियां हुईं और लाखोंका माल कौड़ियोंमें नीलाम हो गया।

वह भय से पीले पड़ गये। शरीर सूखकर कांटा हो गया। और चन्द दिनों में पागल होकर मर गये।

भय के ऐसे हजारों उदाहरण मौजूद हैं, जिन्हें तुमने भी देखा सुना होगा। यदि मेरे यह दोस्त भयको अपने दिलमें

जगह न देकर निर्भीकतासे काम लेते, तो शायद अकाल मृत्युसे बच जाते। मगर भयके भूतका चक्कर ही तो था, वह अपनी जिन्दगी से भी हाथ धो बैठे।

हमे चाहिये, हम अपने दिल और दिमाग को सही रास्ते से सन्चालित करें और कभी इस बातका ख्याल भी न आने दें कि हम कमजोर या बुजदिल हैं। चतुर माली चुनकर बीज बोते हैं, इसीलिये बागीचेमें सुन्दर फूल खिलते हैं।

मानसिक शक्तियों को जोरदार बनाना या उन्हें अन्धे कुएं में धकेल देना हमारी विचार धारापर निर्भर है। मान लो, तुम जङ्गल की सैर कर रहे हो, एकाएक तुम्हारे सामने शेर आकर खडा हो गया। तो शेर को देखकर तुम चाहे कम डरो—मगर यदि मैं तुमसे कह दूं—आगे न बढ़ना, वहां शेर रहते हैं—तो तुम एक कदम आगे न बढ सकोगे। होश गायब, बोलती बन्द हो जायगी। क्यों? इस लिये कि तुम्हारे मन की हालत बदल गयी। मैंने तुम्हारे दिमाग में भयका भूत घुसेड दिया।

कितने ही आदमी मनुष्यों से भय करते हैं और संसार में कोई अच्छा काम नहीं कर सकते। उनके मनमें यह सनक सवार रहती है कि लोग मुझे क्या कहेंगे?

मैं कहता हूं—निर्भीकता का पाठ पढ़ो। भय के बढ़नसे ज्ञानतन्तु नष्ट हो जाते हैं। यदि तुम्हारा मन भयभीत रहता

है—तो उसे मनोविनोद, में बहलाओ! एक मिनट बेकार न बैठो, कुछ करो। कोई पुस्तक पढो, किसी को पत्र लिखो—साराश यह कि भय को फौरन दिल दिमाग से निकाल बाहर करो।

यह सच है, मानव शक्तिमें दैव शक्ति का चमत्कार है। दैव शक्ति के ही बलपर सृष्टि और संहार लीला हो रही है। मनुष्य यदि इस दैव शक्ति को पा ले, तो वह सृष्टि भी कर सकता है, संहार भी। हमारे अन्दर जो भय की क्षुद्रतायें भरी हैं, उनके संहार की ताकत भी हममें है। हम अमरत्व के अधिकारी हैं। क्षुद्र बनकर रहने के लिये हमने मनुष्य जीवन नहीं धारण किया।

मैं देखता हूं—माता पिता छोटे-छोटे बच्चों में ज्यादा भयका भूत उत्पन्न करते हैं। बच्चे जिद्दी होते हैं, वह जब रोते चिल्लाते हैं, तो उन्हें चुप कराने के लिए भूत-प्रेत, शेर-भालू और कुछ ऐसे ही डरावने नाम लेकर उन्हें इस कदर भयभीत कर दिया जाता है, कि बेचारा बच्चा चुप हो जाता है। यह कैसी अज्ञानता है! जो मां बाप बच्चोंमें भयका भूत फैलाते हैं, वे सन्तान का भविष्य नष्ट करते हैं।

बच्चों का दिल फूल जैसा कोमल होता है। भयकी बातें सुनकर उनकी क्या हालत होती है—एक समाचार सुनो;—

शंघाई के एक जापानी सज्जन सड़क से अपनी बच्ची लेकर जा

रहे थे। चौराहे पर एक सिनेमा का सचित्र पोस्टर चिपका था, उसे देखते ही बच्ची चीख उठी और पिता की छाती से चिपट गयी। घर पहुचने पर इतनी भयभीत हो गयी कि उसका टेम्परेचर बढ़ गया, तेजी से बुखार चढ़ आया और उसी दिन वह हमेशा के लिये ठंडी हो गयी।

अब तुम बताओ—उस कागज के पोस्टर में क्या था? मगर ख्याल ही तो है—भयके भूतने निर्दोष बच्चीके प्राण ले लिये।

सो, यही बात तुम्हारे लिये भी है। तुम निर्भीकता की उपासना करो और जीवन संग्राम में निर्भय होकर युद्ध करो। जय तुम्हारी है।

स्मरण शक्ति

हमारी प्रतिभा, कल्पना और महत्ता स्मरण शक्ति पर अवलम्बित है। तुम संसार की लाइब्रेरियों की पुस्तकें पढ़ जाओ, पृथ्वीमण्डल का चक्कर काट आओ; दुनिया का अनुभव कर लो; परन्तु तुमने जो कुछ पढ़ा, देखा या अनुभव किया—यदि उसे याद न कर सके तो तुम्हारी सारी मेहनत बरबाद हो गयी। तुम कौड़ीके तीन हो गये। देश और समाजमें तुम्हारी गिनती बेवकूफ, रद्दी और भोंदू आदमियोंमें की जाने लगती है।

स्मरण शक्तिसे ज्ञानेन्द्रियाँ जागती हैं, मानसिक शक्तियों का विकाश होता है और 'विलपावर' बढ़ता है। इसके उपहार स्वरूप हमें मिलती हैं—अमूल्य निधियां, मोहिनी शक्ति, जिन्दगी की सफलता।

हममें से बहुतोंकी स्मरण शक्ति कमजोर है। इतनी कमजोर कि देखकर दङ्ग रह जाना पड़ता है। यदि ऐसे कमजोर आदमियों के सामने से कोई जुलूस निकल जाय और उनसे पूछा जाय—जुलूस में किस टाइप के आदमी थे? उनकी पोशाकें क्या थीं? कितने किस्म के बाजे बजते थे? तो वे ठीक इसका उत्तर न दे सकेंगे। मेरे कई मित्र ऐसे हैं, जिन्हें घूमने फिरने का शौक है। यदि मैं उनसे कभी पूछ बैठता हूं, तुमने पिछले सप्ताह के भ्रमणमें कौनसी अद्भुत वस्तु देखी तो बगलें मारने लगते हैं और ठीक

ठीक जवाब नहीं दे सकते। यही हालत अधिकांश सिनेमा प्रेमियोंकी है। वह अभिनेता अभिनेत्रियोंके सम्बन्ध में लम्बी चौड़ी हांक देंगे परन्तु यदि उनसे कहानी या नाटक का सारांश पूछा जाय, तो 'प्लाट' का ठीक ठीक वर्णन न कर सकेंगे। एक और मित्रका हाल सुनो—यह पुस्तकें पढ़नेके इस कदर प्रेमी हैं कि चार-चार लाइब्रेरियोंके मेम्बर हैं। यदि उनसे पूछो, किस उपन्यासमें आपको क्या आकर्षण प्राप्त हुआ तो मुसकुराकर रह जायेंगे। इस तरह के असख्य भुलक्कड़ आदमी ससारमे हैं, जो स्मरण शक्ति कमजोर होने की वजह से जीवन सग्राम में फेल हो जाते हैं। वे स्वय यह निश्चय नहीं कर पाते कि हम क्या हैं? दुनिया क्या है? और इस रहस्यमय ससार मे हम क्यों आये हैं?

मनुष्यका स्मृति मन्दिर एक अनमोल खजाना है, प्रकृतिका आश्चर्य भण्डार। इस मन्दिर में यह पता नहीं लगता—कहा क्या रखा है, किसने रखा और कब रखा? हां, जब जिसकी जरूरत होती है, तब सिर्फ वही चीज बाहर निकाल लेनी पड़ती है।

बहुतसे लोगोंकी आदत होती है—कोई चीज किसी जगह रख देते हैं; मगर जरूरतके समय जब उसे ढूढते हैं, तो जगह की याद नहीं आती—उसे कहां रखा था। किसी वस्तु या मनुष्य का नाम, कोई खास शब्द, जब कि इसका प्रसंग आता है तो बहुत कोशिशें करने पर भी लोग भूल जाते हैं और सिरपर उंगली

रखकर विचार प्रवाहको तेजी से दौड़ाते हैं; मगर होता कुछ नहीं। वह जितना अधिक याद करनेकी चेष्टा करते हैं, वह चीज उतना ही अधिक दूर भागती है। यह मनुष्य की कमजोरी है। ग्रेट-ब्रिटेनके लार्ड एडवर्ड थरलो भी ऐसे ही मनुष्योंमें थे। उनकी स्मरण शक्ति इतनी दुर्बल थी कि वह जो जलपान करते थे, उसे भी याद न रख सकते थे। मगर जब उन्होंने अपने जीवनकी प्रत्येक बात, प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक कार्य, प्रत्येक विषयको एक-एक करके देखना शुरू किया, तो अपनी स्मरण शक्तिकी इतनी अधिक उन्नति कर ली कि उनकी गणना सुविख्यात पुरुषोंमें की जाने लगी।

स्मरण शक्ति तेज बनानेके लिये प्राणायाम सर्वोत्तम है। प्राणायाम से सासका संयम होता और उम्र बढ़ती है। यदि खास-खास मौकों पर याददाश्त काम नहीं देती, तो अच्छी तरह सास को भीतर खींचो। और कुछ देर उसे रोककर बाहर निकाल दो। इससे स्मृति पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा। ज्यादातर स्मरण शक्ति उन मनुष्यों में नहीं होती, जो थके होते हैं या जिनके स्नायुमण्डल दुर्बल होते हैं। तुम प्रत्येक कार्य को चाहे वह मामूलीसे मामूली क्यों न हो, एकाग्रमन से करो। अपनी प्रत्येक बात में जादू उत्पन्न करो। खड़े होना, टहलना, कपड़े पहनना दोस्तों से मिलना, स्त्री-पुरुषों से बातें करना, ऐसे हजारों काम हैं—जिन्हें पूर्ण सावधानी से करो। इन प्रयोगोंसे तुम्हें स्मृति की वह अद्भुत शिक्षा मिलेगी, जो अन्य विधियों से प्राप्त करना दुर्लभ है।

स्मरण शक्ति से दैवी शक्तिका आविष्कार होता है। जिसके एक बार अनुभव कर लेनेपर उसे छोडनेका जी नहीं चाहता।

जो लोग स्मरण शक्ति की चर्चा जितनी अधिक करते हैं। उनकी स्मरण शक्ति उतनी प्रखर होती है, किन्तु यदि इसकी चर्चा ही न की जाय, तो धीरे धीरे ऐसी अवस्था उत्पन्न हो जाती है कि एक घण्टे पहले हमने क्या किया था—यह भी याद रखना कठिन हो जाता है।

प्रकृतिकी असंख्य शक्तियां तुम्हारे चारों ओर झुण्ड की झुण्ड घूम फिर रही हैं। संसार की हजारों घटनायें आखों के सामने घट रही हैं। तुम इनसे ज्यादासे ज्यादा फायदा उठाओ। तुम्हारे ज्ञानका विश्वविद्यालय प्राकृतिक सौंदर्य है। इसी विद्यालय के विद्यार्थी बनकर ईश्वरीय चमत्कारों का अध्ययन कर, शाम के वक्त घरके भीतर या बाहर एकान्तमे निश्चित होकर बैठ जाओ, वहां जो कुछ देखो-सुनो नोट कर लो। किसी सुन्दर भू-प्रदेश का; जिसे तुमने देखा हो—स्मरण शक्ति की सहायतासे मनमें प्राकृतिक चित्र खींचो। उसके ऊबड़-खाबड पहाड, कलकल करती नदियां, हरे भरे वृक्ष, धूप-छाया, जमीन आसमान सभी को इस तरह देखो—जैसे तुम सचेत होकर उनमे सौंदर्य ढूढ रहे हो। मनको प्रेम आनन्द और सहानुभूतिके भावों से भर लो मधुर गाने गाओ, पक्षियों की चहचहाहट, हवाके झोकों के शब्द पशुओंकी उत्तेजक बोलिया और अन्य प्रकारकी आवाजों को याद कर कल्पना मे सुनो।

ट्राम बस या रास्ते मे घूमते हुए खूबसूरत और प्रसन्नचित स्त्री पुरुषोंको देखो। आधा माइल रोज पैदल चलो। स्मरण शक्ति हमेशा ताजी रहेगी।

यदि तुम स्मरण शक्ति को तेजी से नहीं बढाते तो तुम्हारी मानसिक अवस्था क्या होगी, जानते हो? दिमाग में कोई भी मौलिकता या अनोखी प्रतिभा का चमत्कार न पैदा होगा।

यदि तुम स्मरण शक्ति को बलवान बनाने के इच्छुक हो तो ज्ञानेन्द्रियों को शिक्षित करो, याने आखें खोलकर चलो। जो कुछ देखो, उसमें आकर्षण ढूंढो। कानों से ज्यादा सुनने का अभ्यास करो। जीभ से प्रत्येक स्वादका मजा लो, नाकसे जो चीज सूघो, उसमें ज्यादा दिलचस्पी उत्पन्न करो, तुम्हारी उंगलियों में बिजली का 'करेंट' है।—जिस वस्तु को छुओ; उसमें जोरदार स्पर्श शक्तिका विकास करो। इन्द्रियों द्वारा जो ज्ञान हम प्राप्त करते है, वही ज्ञान अनुभवों को हमारे सम्मुख उत्पन्न करता है। इस संचित की हुई मानसिक शक्तिको ही स्मरण शक्ति कहते हैं।

अप्रिय, बदसूरत शक्लें तथा भद्दी वस्तुओं पर ध्यान न जमाओ। रंगोंका अध्ययन करो। किसी के घर या आफिस में जाओ तो वहा की ख्वास खास आकर्षक चीजें मन में नोट कर लो। धुरन्धर विद्वानों और महापुरुषोंके सिद्धातोंको पढो और उन्हें मनके 'स्टाक' में इकट्ठा करते रहो। दोस्तोंको पैरोंकी आवाजसे पहचानो कि मेरा फलां दोस्त आ गया। उन्नति के यह सब वैज्ञानिक अभ्यास हैं। जो एक दिन तुम्हें महापुरुष बना देंगे।

और इन अभ्यासों से तुम्हारी सिर्फ स्मरण शक्ति ही तेज न होगी; बल्कि तुममें एकाग्रता और 'विलपावर' का आश्चर्यजनक विकास होगा। इस तरह तुम आहिस्तः आहिस्तः पूर्व जन्म तक का हाल जान लोगे। निरंतर अभ्यासे ही सफलता प्राप्त होती है—

"करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जातते सिलपर परत निशान॥"

मनुष्य के जितने भी कार्य हैं, सबको धारणा कल्पना मे की जाती है। एक व्यक्ति अपनी माता के लिये चाय बनाते समय चाय के बर्तन पर ढकन को उछलता देखकर कल्पना करता है कि भापके फैलनेसे ढकना उठ जाता है। उसकी यह कल्पना इञ्जिनकी सृष्टि करती है और दुनिया मे रेलगाडी दौड़ा देती है। विज्ञान चित्रकारी, व्यापार, साहित्य और कलाकौशल आदि सब में कल्पना शक्ति की जरूरत है। जिसमें कल्पना शक्ति का अभाव है, वे संसारमे मामूली, अप्रिय और अयोग्य सिद्ध हुये हैं। विवेक और परिश्रमी होने पर भी कल्पना के अभावसे वे भविष्य जीवन के ऊचे उपहारोंसे वंचित रह जाते हैं।

स्वामी दयानन्द शिवरात्री के दिन शिव मंदिर में बैठे कल्पना कर रहे थे कि जो शिव अपनी रक्षा चूहोंसे नहीं कर सकता वह मेरी सहायता कब करेगा? उन्हें इस कल्पना शक्ति से महान् ज्ञान उत्पन्न हो गया और वह घर छोड़कर देश-कार्यके लिये

जङ्गलोंमें चले गये। ठीक इसी तरह महात्मा बुद्ध, मीराबाई और गुरु नानककी भी कल्पनाओंने उनकी जिन्दगी में महान् परिवर्तन कर दिये। इन महापुरुषोंके जीवन चमकने का रहस्य और कुछ नहीं, स्मरण तथा कल्पना शक्ति थी!

कोई घटना, कोई अभ्यास, विचार या सिद्धान्त हो—सब में स्मरण शक्तिकी जरूरत है। रातको सोते समय, निद्रा के पहले, इन विचारों का चिंतन करो—"मैं शक्तिशाली मनुष्य हूं। मेरी स्मरण शक्ति तेज है। मेरा दिमाग प्रतिदिन बलवान होता जा रहा है!" इन विचारोंसे तुम्हारी इन्द्रियों में सनसनी फैलेगी। दिमागमें खलबली उत्पन्न होगी और प्रसन्नतासे तुम्हारा चेहरा चमक उठेगा।

जीवनको तकलीफों का कारखाना न बनाकर उसे चिड़िया-घर की तरह चहकने दो। तुम्हारी जिन्दगी में चमत्कार पूर्ण अभिनय हो रहा हैं, उसमें आनन्द का क्षणिक तूफान नहीं—स्थायी शक्ति है। पिछली गलतियों को सुधारो। वर्तमान को शक्तिशाली तथा भविष्य को उज्ज्वल बनाओ। किसी तरह का वहम न करो। वहम मनुष्य को नष्ट कर देता है।

दिमाग

तुम्हारा दिमाग एक जबरदस्त कारखाना है। इसमें असंख्य विभाग हैं, जिनमें काम करनेवाले बडी मुस्तैदी से अपनी ड्यूटी अदा करने में तन्मय हैं। यहा से हुक्मनामे जारी होते हैं, ग्रामोफोनकी तरह बाहरी शब्दों और आवाजोंके रेकार्ड तैयार होते और बजते रहते हैं। इनकी मधुर ध्वनिया बाहरी आदमियोंको अपनी ओर आकर्षित करने मे हमेशा अग्रसर रहती हैं। इन कारबारों की हलचलको लेकर यह महान इन्स्टीट्यूशन बरसों चला करता है; किन्तु ज्योंही कर्मचारियोंमें से किसीने अपनी ड्यूटी की अवहेलनाकी, त्योंही सारा कारोबार नष्ट हो जाता है।

आकाशके अनन्त तारोंकी तरह दिमागके अन्दर एक रहस्यमय ज्योतिसमूह है, जिसके कारण ही मनुष्य, मनुष्य कहलाता है। भारत में महात्मा गांधीकी सपाट खोपडी और पं० जवाहर लाल नेहरूका चमकता मस्तिष्क बड़े महत्व का है। प्रत्येक देश की सभ्यतायें इन्हीं दिमागदार खोपडियोंसे तैयार होती हैं।

यदि तुम साहित्यिक हो, तो गोर्की, एच० जी० वेल्स और बर्नार्डशा की खोपड़ीके रहस्योंको समझो। यदि तुम रुपये के भक्त हो, तो राकफेलर, हेनरी फोर्ड, टाटा, बिडला के दिमाग का इतिहास पढ़ो। तुम्हें कीमती बातें मालूम होंगी। इनके दिमाग शक्तियों के धुरन्धर कारखाने हैं।

ईश्वरने समस्त प्राणियोंमें मनुष्यको श्रेष्ठ बनाया है। मगर मनुष्यकी श्रेष्ठता केवल दिमाग पर निर्भर है—

आहार निद्रा भय मैथुनश्च,
समान मेतत पशुभिर्नराणाम्।
ज्ञानं हितेषां मरिको विशेषो,
ज्ञानेन हीना पशुभि समाना॥

आहार, निद्रा, भय और मैथुन ये चार बातें मनुष्य और पशु में बराबर होती हैं। ज्ञान न होनेसे मनुष्य और पशु दोनो समान हैं।

दिमागमें ज्ञान बुद्धिको चमकाना या उसमें मूर्खताकी मिट्टी भरना तुम्हारे हाथ का काम है। यह एक ऐसा कोमल पौधा है, जिसे तुम जिस तरफ चाहो मोड दो। उसमें करोड़ों सूक्ष्म तन्तु रहते हैं। इन्ही तन्तुओंकी विचार—शक्तियो की क्रान्तिसे दिमाग मे विलक्षण बुद्धि उत्पन्न होती है। जिसके द्वारा हम बहुत जल्द नवीनताओंके आविष्कारक, साहित्य क्षेत्रोंके महारथी, देश और समाजके भाग्य विधाता, धनकुबेर तथा मनुष्य मात्रके प्रेमी बन जाते हैं और एक दिन उच्च शिखर पर चढ मानव जीवनको धन्य बनाते हैं।

ध्यान रखो, जिन आदमियोंसे तुम मिलते जुलते हो, उनका दिमाग एक-एक इतिहास है। उनके मस्तिष्क में बड़ी-बड़ी खूबियों के खजाने हैं। प्रत्येक मनुष्यसे दिल खोलकर बातें करो

तुम्हारा दिमाग उन्नत लाइनोंमें तूफानकी तरह दौड़ेगा, और तुम्हें सफलता के स्टेशनमें पहुचते देर न लगेगी।

वर्तमान वैज्ञानिक युग मे यह बात बड़े तर्क से सिद्ध हो चुकी है कि दिमाग की सोई शक्तियो को जगाने वाली हमारे पास पाच ताकतें जबरदस्त हैं। मन, 'विल्पावर' आखें, कान और नाक याने घ्राणशक्ति। यदि हम इन शक्तियों को अच्छी तरह अध्ययन और अभ्यास करें तो हमारा दिमाग सूर्य किरणों की तरह जगमगा उठे।

दिमाग को सजीव बनाने की सबसे शानदार ताकत है— मनुष्य की घ्राणशक्ति। जिन चीजों को तुम सूघते हो, उनमे ज्यादा दिल्चस्पी उत्पन्न करो और घ्राण शक्ति को अधिक तीक्ष्ण बनाओ।

आज सभ्य समाज में विरले ही आदमी को घ्राण शक्ति का महत्व मालूम होगा। मगर जगली आदमियों का प्रधान दिमाग है—घ्राण शक्ति। अपनी इस शक्ति के सहारे व बड़ी दूर तक मनुष्योंका पीछा करते हैं, और जङ्गली जानवरोंसे हमेशा सावधान रहते हैं। अभी हाल मे इस विषय की जो वैज्ञानिक गवेषणायें हुई हैं, उनसे पता चलता है कि सिर्फ जङ्गली मनुष्य ही मनुष्य और पशुओं का घ्राण शक्ति द्वारा पीछा नहीं कर सकते अन्य मनुष्य भी इस काम को ठीक-ठीक कर सकते हैं। मनोविज्ञान के मास्टर डाक्टर पी० मूरका दावा है कि वह किसी कमरे की गन्धसे बता सकते हैं क घन्टा पहले उस कमरे में कोई

आया था या नहीं। कपडे की गन्ध सूघकर वह यह भी बता सकते हैं कि कपडा किसका है। ऐसे कई आदमी हैं। इसके अलावा आजकल अनेकों डाक्टर रोगों के निदान में घ्राण-शक्ति का उपयोग करते हैं, और रोगी के कमरे में प्रवेश करते ही ताड लेते हैं कि रोगी की गति कैसी है और रोगी कितने दिनों में स्वस्थ हो सकता है।

दिमाग को तेजस्वी बनाने का दूसरा रास्ता है पढना। मनुष्यमें पशुता भी है—देवत्व भी। पशुता से धीरे धीरे विकास करके पहले वह मनुष्य होता है और मनुष्यता से ऊंचे उठकर देवपद प्राप्त करता है। पशुता पतन है और मनुष्यता उत्थान। मनुष्य को जितने साधन पशुत्व से ऊपर उठाने में सहायक होते हैं, उनमें शिक्षा प्रधान है। अतएव तुम जितना ज्यादा अच्छी अच्छी पुस्तकें पढोगे, उतना ही तुम्हारा दिमाग तेजस्वी होगा।

जिन्दगी और संसार में सफलता पाना दिमाग की संचालन-क्रियाओं पर निर्भर है। यदि स्कूल और कालेज के विद्यार्थी व्यापारी और नौकरी पेशे के लोग उपरोक्त बातों पर गौर से विचार करेंगे, तो उन्हें पता लग जायगा कि दिमाग कोई दूकान नहीं, जिससे नफा या नुकसान का हिसाब जाना जा सके। दिमाग वह चमकता भण्डार है, जिसमें अच्छी चीजें भर कर तुम सुरक्षित रख सकते हो और मानव जीवन को चुम्बक बना सकते हो।

हम तकदीर के नाम पर रो रहे हैं। विपत्तियां हाथ धोकर हमारे पीछे पडी हैं। क्यों?—इसका एक ही जवाब है—हमारे दिमाग की कमजोरी।

हम इन कमजोरियोंके कारण नरकंकाल की तरह दुनिया की चमकती बाजारों में घूम फिर रहे हैं। हमारी सम्पूर्ण शक्तियां मुर्दा हैं। हम देश और समाजमे कोई आवाज नहीं पैदा कर सकते। व्यापार की दुनिया में 'फेल' हो जाते हैं और किसी भी बात मे जरा भी तरक्की नहीं कर सकते।

इसके अलावा दिमाग की कमजोरियों के दूसरे कारण हैं—सडी गली गलियों में घूमना, भद्दे, बदसूरत आदमियों की सोसायटी मे बैठना, घृणा, घमण्ड, द्वेष, शंका तथा गुस्से की आग में जलना। अनुभव की शून्यता, ऐयारी, व्यभिचार तथा उन्नत विचारधाराओं को ठीक रास्ते से न ले चलना।

दिमागी कमजोरी और निपुणता कैसा रंग लाती है। आखों देखी घटना सुनियेः—

सन् १९२८ की बात है। उन दिनों मै एक सुप्रसिद्ध हिन्दी पत्र का सहकारी सम्पादक था। आफिस मे दो क्लर्क थे। दोनों ही पुराने। एकाएक दोनों में एक का दिमाग अच्छा निकल गया वह न्यूज एडीटर बना दिया गया। उसकी तनख्वाह में तरक्की हो गई। जब दूसरे क्लर्क को इस बात का पता चला तो वह ईर्षाकी आगमें जलभुनकर खाक हो गया। एक दिन वह गुस्से

की हालत मे मैनेजिंग डाइरेक्टर के पास पहुंचा और अभिमानके साथ बोला—"आप के आफिस में सबसे ज्यादा काम करनेवाला मैं हूं। आपने मेरे सहकारी की तरक्की कर दी—मेरी भी तनख्वाह बढ़ा दीजिये।"

मैनेजिंग डाइरेक्टने कहा—"तुम्हें मेरे यहा नौकरी करते जमाना गुजर गया। मगर तुमने आज तक अपने दिमाग का कोई नया चमत्कार नहीं पेश किया। मैं तुम्हारी तनख्वाह बढ़ाने में लाचार हूं।"

क्लर्क महाशय अपना सा मुंह लेकर चले आये। उन्होंने अपने सहकारी से बोलना तक बन्द कर दिया। उनके मिजाज मे चिड़चिड़ाहट आ गई। जरा जरासी बात पर गुस्सा हो जाते और आफिसके नौकरों को डाटते फटकारते। इसका नतीजा यह निकला कि उनका रहा सहा दिमाग भी चौपट हो गया। वह नौकरी से अलग कर दिये गये। लेकिन उनका सहकारी योग्यता, शान्ति तथा लगनके साथ सब काम सम्भालता गया। कुछ ही दिनों मे प्रधान सम्पादक की कुर्सीपर डट गया। उसके अण्डर में लगभग २०-२५ आदमी काम करने लगे।

दर असल दिमाग की कमजोरिया हमे आगे बढ़ने नहीं देतीं। दिमाग में विद्या की रोशनी फैलाओ। उसे स्वस्थ्य होकर सफलता की सीढ़ियों पर चढ़ने दो।

हालीउडकी एक फिल्म कम्पनीका जिक्र है। वहां एक गजब की नाचने वाली नवयुवती आई। उसके कलापूर्ण नाचमें इतनी अधिक सौन्दर्य मादकता थी कि लोग उस पर मुग्ध हो गये। उसके गाने में जादू का असर था। लोगों ने सुना और मस्ती से झूमने लगे। मगर वह थी बड़ी बदसूरत। लोग उसके गुणोंके तो भक्त बन गये मगर सूरत से सबको नफरत थी। जिस समय वह स्टूडियोमें आती—लोग उसे देखकर आपस में कानाफूसी करते और उसके रूप सौन्दर्य की हंसी उड़ाते। परन्तु नर्तकी इन बातोंसे कभी न चिढ़ती। क्रोध के बदले वह सब पर प्रेमका जादू चलाती। पर लोग उसे बराबर तङ्ग किया करते। वह इन मुसीबतों से छुटकारा पाने का प्रयत्न करने लगी। एक दिन उसने अभिनेताओं की भरी मीटिंग में कहा—"आप चाहे जितनी हंसी उड़ायें, मैं कभी नाराज न होऊंगी। क्योंकि मैं जानती हूं—गुण के सामने रूप की कीमत नहीं होती।"

सब ठहाका मारकर हँस पड़े।

नर्तकी ने कहा—"मेरी आंखों में शेर के ताकत की चमक है। गाने की मधुर आवाज सुनिये—कोयलें शर्म से मुंह छिपाती हैं। मेरा दिल प्रेम का दरिया है।"

नर्तकी ने यह स्पीच इस ढङ्गसे दी कि भीड़में सन्नाटा छा गया। लोग एक-दूसरे का मुंह ताकने लगे। बदसूरत नवयुवती का रंग जम गया।

इसे कहते हैं—दिमागसे काम लेनेका तरीका। यदि यही नर्तकी झेंपती और चिढ़ती, तो जिन्दगीके मैदानमें बुरी तरहसे हार जाती। मगर वह थी चतुर। अपने दिमागको जिस बुद्धिमानी के रास्तेसे ले गई—उसकी कौन प्रशंसा न करेगा?

यदि तुम सफलता के पुजारी हो, तुम्हारा उद्देश्य सिर्फ कमाना खाना या मर जाना ही नहीं—जीवनको चमकाना है, तो ज्ञानेन्द्रियोंको जगाओ। शक्तिशाली मनुष्यों के जीवन चरित्र पढ़ो और दिमागदार आदमियों का सत्संग करो। तुम एक दिन सर्वश्रेष्ठ मनुष्य और श्रेष्ठ नागरिक बनोगे।

जिस तरह भागीरथी गङ्गा अपनी असंख्य लहरोंसे कल कल निनाद करती महासागरमें मिल जाती है, उसी तरह मनुष्य का शिक्षित दिमाग भी धीरे धीरे देवत्वके पवित्र सुख सम्मिलन में दूध पानीकी तरह मिल जाता है। उसे ऊँचे उठते देर नहीं लगती। संसार में जितने मनुष्य साधारण मनुष्योंमें जन्म लेकर ऊँची प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेते हैं—उसका सबसे बड़ा रहस्य है—उनका शिक्षित दिमाग। मनुष्य शिक्षित दिमागको लेकर कीमती आदमी बन जाता है। संसारमें भयानकसे भयानक, विचित्रसे विचित्र उथल पुथल होती है। पुरानी सृष्टि नई होती है और नई सृष्टि पुरानी। इन सबके अन्दर मनुष्यका दिमाग कुम्हारके चाकेकी तरह घूमता रहता है। दिमाग हीन मनुष्य पशु हैं। दिमागदार मनुष्यका जीवन हमेशा ताजा और जवान रहता है तुम मनुष्य हो, इस पृथ्वी पर संघर्ष के तूफान लेकर आया की

आंखोंका जादू

मैं कोई जादूगर नहीं, तुम्हारी तरह एक चलता फिरता मनुष्य हूं। मगर मुझे तुमसे दिलचस्पी है।

क्यों दिलचस्पी है? मैं किसलिये तुम्हारी दिलचस्पी का तूफान उठाये घूमता हूं।

तुम्हारी आंखों में आत्माका दिव्य प्रकाश, दिन की निर्मलता और रातकी काली अंधियारी है— '

> क्या कहूं तुम्हारी आंखों को,
> चालाक भी हैं, हुशियार भी हैं, ।
> सीधी हैं कभी, तिरछी हैं कभी,
> यह तीर भी हैं, तलवार भी हैं ॥

मैं तुम्हारी आंखों में जलवये-कुदरत देखता हूं, कयामत देखता हू, प्रेम का नशा देखता हूं।

तुम्हारे हृदय में जो भावनायें उत्पन्न होती हैं, उनका तेजस्वी प्रकाश आंखों के ही द्वारा प्रदर्शित होता है। आंखें हृदय की तालिका हैं।

तुम्हारे चारों तरफ हर समय कीमती चीजें चमकती चली जाती हैं; मगर तुम न तो उन्हें पहचानते हो, न अपनी ओर

आकर्षित कर सकते हो! यह क्यों? मैं कहूंगा—"तुम आंखें खोलकर नहीं चलते। तुम्हारी आंखोंमें जो जादू है, उसका सही तरीके से प्रयोग नहीं कर सकते।"

संसार में सौ में नब्बे आदमी आंखें खोलकर नहीं चलते। उन्हें इस बात का पता नहीं, हमारी आंखोंमें क्या जादू है और उसके जरिये हम कैसे सफल व्यक्ति बन सकते हैं।

मैं कहता हूं, सुख की परीक्षा में आंखों को पत्थर न बनाओ। उन्हें खूबसूरती के बाजार में टहलने दो। न मालूम किससे तुम्हारी आंखें लड़ जायँ और एकाएक तुम्हारी तकदीर जाग उठे।

आंखें आत्मा की रोशनी हैं। आंखें खोलकर चलो! तुम्हारी जिन्दगी का भेद आईने की तरह तुम्हारे सामने खुल जायगा।

संसार सुन्दर कली है। सूर्योदय होते ही यह फूल की तरह खिल उठता है। विश्वासपूर्वक निगाहों की सर्चलाईट चारों तरफ घुमाओ। दिन को सूर्योदयका रङ्गीन दृश्य देखो, रात को चांदनी रातका मौन संगीत सुनो। आंखोंमें जादू उत्पन्न करने की यह वैज्ञानिक कला है।

कमजोर आदमी इन शिक्षाओं से घबराते हैं। वे सारी जिन्दगी दहल और वहम में बरबाद कर देते हैं। उनके जीवनमें हमेशा दुःख और शोककी काली घटायें घिरी रहती हैं। मगर

उन्नतिशील मनुष्य भूतकाल की तरफ ध्यान नहीं देते। वे वर्तमान के भक्त बनते हैं और भविष्य को भगवान के रूप में पूजते हैं। उनकी आखों का जादू वर्तमान और भविष्य दोनों पर चलता है। वे हर वक्त अपने सिद्धान्तों की जड़ मजबूत करते हैं और असम्भव ताकतों के प्रति चैलेन्ज देकर कहते हैं:—

छुपने को छुपो सौ परदों में,
इस छुपने से क्या होता है?
हम ढूढ़ निकालेंगे उनको,
हम खोज में उनके रहते हैं।

मजनू से एक बार किसी ने कहा—"लैली बड़ी बदसूरत है। तुम उस पर दिवाने क्यों हो?"

मजनू ने जवाब दिया—"उसे मेरी आंखों से देखो—सब समझमें आ जायगा!"

मैं समझता हूं, मुसीबतों का तमाशा देखते-देखते तुम्हारी आंखें बेजार हो गयी होंगी। अतएव अपनी इच्छित वस्तु को मजनू की आंखों से देखो। बाहरी दुनियाकी समस्त विद्या आंखों द्वारा प्राप्त होकर दिमाग में हलचल की सृष्टि करती है और हमारा चेहरा रेशम की तरह चमक उठता है।

तुम चाहे देहात में रहते हो या शहर में। आंखों की सर्चलाइट परिचित मार्गों में फैलाओ। स्त्री पुरुषों को दिलचस्पी से देखो। एक-एक मनुष्य के चेहरे में एक-एक विचित्र

संसार छिपा है, जिनके रहस्यों को समझकर जीवन के बड़े बड़े आविष्कार किए जा सकते हैं।

तुम अपने शहर की खूबसूरत सड़कों पर चक्कर काटो—जहां सभ्य, पढ़े-लिखे, और सुन्दर स्त्री-पुरुष आते जाते हैं। खास आदमियों की पोशाकोंका अध्ययन करो। उनके चेहरे की बनावट देखो। आंखों की संचालन क्रिया पहचानो। एक मनुष्य की दूसरे मनुष्य के साथ तुलना करो। ज्यों-ज्यों तुम मनुष्यों का दिलचस्पी के साथ अध्ययन करोगे—त्यों-त्यों उनके नजदीक पहुंचते जाओगे। उनके गुण, सौंदर्य, जिन्दगी के *खजाने में भरते जाओ। आंखों द्वारा जीवन में जादू भरनेका* यह आकर्षक तत्व है।

यह क्या बांता है, कि कवि, दार्शनिक, आध्यात्मिक और वैज्ञानिकों की आंखोंमें विशेष जादू होता है। वे साधारण मनुष्योंसे ज्यादा हर चीजमें सदौंर्य प्राप्त करते हैं। असल में वे चुम्बक तत्वोंके महारथी हैं। उनका मार्ग आत्माकी सत्य ज्योतिसे जगमगाता है। तुम अपनी आत्मा में, अपने संसार में इस सत्य प्रेम को ढूंढ़ो। महापुरुषों में बगैर सत्य प्रेमके महानता नहीं होती।

यदि कोई तुम्हें उपदेश देता हो, तो आंखें बन्दकर लो, व कान खोल दो। यदि कोई बुरी बात कहता हो, तो कान बन्द कर लो—आंखें खोल दो।

संसार और मनुष्य को लोग दो तरहसे देखते हैं। एक आंखसे, दूसरा मन से। दोनों में निराले रंगका आविष्कार करो। आज मैंने फलां विलक्षण चीज देखी, 'उसने' मेरे दिल को चुम्बक की तरह अपनी ओर खींच लिया। हर रोज रात को सब बातों पर विचार करो और फायदे मे आने वाली चीजों से लाभ उठाते जाओ।

क्रूरता, निर्मयता, बेईमानी, प्रेम, दया, धर्म इत्यादि हर बातों का पता आंखों द्वारा लगाया जा सकता है। आंखें मनुष्यके दिल का अफसाना हमारे सामने पेश करती हैं।

तुमने सुना होगा—जङ्गलमें मङ्गल करने वाले साधू सन्तोंके पास खूंखार शेर आते हैं और बिल्ली बनकर चले जाते हैं। इसमें क्या रहस्य है। असल में इन महर्षियों की आंखो में ऐसा मनोहर जादू रहता है; कि बेचारा शेर उनकी शक्तियों के आकर्षण से बलहीन हो जाता है। उसका हृदय आनन्द प्रेम से नाच उठता है। साधुसन्तों का यह सुन्दर जादू प्रत्येक मनुष्य के पास है। उसे अपने पवित्र हृदय में ढूंढो। जब तुम उसे अपना लोगे, तुम्हारा जीवन विश्वास के रत्नों से चमक उठेगा। उस समय तुम भयानक से भयानक चेहरे को देखकर भयभीत न होगे। किसी से खुलकर बातें करने में जरा भी संकोचका सामना न करना पड़ेगा। दुनिया के हर मनुष्य तुमसे प्रेम करेंगे फिर कमी किस बात की रहेगी?

यदि तुम्हें किसी आदमी पर प्रभाव डालना है, किसी खास

आदमी से दोस्ती गांठनी है, तो जब उससे बातें करो—उसकी नाक के बिचले भागमें, ठीक भवों के बीच, अपनी आँखें जमा दो, पलकें न मारो और खूब मस्ती से बातें करते रहो, चन्द मिनटों में तुम्हें मालूम होगा कि तुम्हारा उस मनुष्यपर पूर्ण प्रभाव पड़ रहा है। वह तुम्हारे प्रति आकर्षित होकर तुम्हारा प्रेमी बनता जा रहा है। मगर होशियार! बातें करते समय आँखोंको न तो फाड़ो, न ज्यादा फैलाओ; नहीं तो उस आदमी के मन में सन्देह उत्पन्न हो जायेगा और तुम्हारा वैज्ञानिक जादू काफूर की तरह उड़ जायगा। बातें करते समय मौके-बेमौके पलकें मारने के लिये नजर को होशियारी से पलटते रहो। कमरे की छतों और दिवालों पर टँगी हुई तस्वीरोंको देखो। जमीन की चीज न देखो, जो उस मनुष्य की आंखों के नीचे है। आंखों की ऊपर वाली चीजों को मौजसे घूरो; आँखें घुमाओ और उन्हें पुनः उनके भवों के बीच जमा दो—वह मनुष्य तुम्हारा भक्त बन जायगा।

• यह कोई धोखेबाजी नहीं, आत्मा की रोशनी का परस्पर आदान प्रदान है, मनुष्यमें पवित्र प्रेम उत्पन्न करने का कीमती अभ्यास है। इस अभ्यास में वही सफल हो सकते हैं, जिनका हृदय सचाई की ललित तरंगों से लहराया करता है। खूनी, विश्वासघाती, चोर, डकैत इन अभ्यासों में सफल नहीं हो सकते, क्योंकि उनकी आत्मा अपवित्र होती है।

मैं कहता हूं—आंखों से बड़ी-बड़ी घूंटें परसाकर उन्हें सुख

न बनाओ। उनमें प्रेम का काजल लगाकर बाजारे हुस्न में टहलने दो, तुम्हारी तेजस्वी निगाहों से महफिल की प्रत्येक आंखें तुम पर झुक जायंगी। किसी ने क्या खूब कहा है.—

"आंखों में समा जाना,
पलकों में रहा करना।
दरिया भी इसी में है,
मौजों में बहा करना॥"

इसलिये मेरी हार्दिक कामना है, तुम आंखोंके द्वारा शक्तिशाली और आकर्षक बनो। तुम्हारी नेत्रज्योति अमर हो।

कानोंका रहस्य

कान हमारे गुरुदेव हैं। यह हमें जीवनी शक्ति प्रदान करते और चरित्रको ऊँचा उठाते हैं।

यदि हम संसार में आंखें खोलकर चलते हैं और कानोंसे ठीक ठीक सुनते हैं तो इसका यह मतलब हुआ, हम असंख्य शक्तियों पर कब्जा कर रहे हैं। अपने में सैकड़ों गुणोंकी उत्पत्ति के रहस्यों को जगा रहे हैं, हमारी आत्मा आनन्द लोक में प्रवेश कर रही है—और हम ठीक उसी तरह आनन्द में मतवाले हो रहे हैं, जिस तरह उषाकी स्वर्ण किरणें पड़ते ही गुलाब अपने दलोंको खोलकर खिल उठता है, वसन्त के आगमन से पक्षी चहचहा उठते हैं।

हमारे कानोंमें मधुर या कर्कश, छोटी या बड़ी—जितनी आवाजें आती हैं—सबसे आश्चर्यजनक सनसनी रहती है। मगर तुम उस सनसनीसे फायदा इसलिये नहीं उठा सकते कि तुम्हें पता नहीं—हमारे कानोंकी क्या खूबियाँ हैं। तुम उनकी तरफ कभी ध्यान नहीं देते।

जिस समय तुम संसार में कान खोलकर चलोगे, उस समय तुम्हारी आंखोंके सामने आश्चर्य बातोंसे भरी एक ऐसी किताब खुल जायेगी कि तुम उसे पढ़ कर जीवन रहस्योंको सुगमता से समझ लोगे।

कानोंकी अद्भुत शक्तियां जगाने के लिये मधुर संगीत सुनो, समुद्र किनारे टहलो और उसकी गर्जना का आनन्द लो। जङ्गलोंमें दरख्तों की पत्तियों की खड़खड़ाहट, पशुओं की विचित्र बोलियां और चिड़ियोंके चुटीले राग दिलमें भरो। गंगा की कलकल निनादोंकी बहारें लूटो। बिजलीकी कड़कती आवाजें, बादलोंकी रणभेरिया, निशीथ तारोंके मौन संगीत; कान-शक्तियों को जगाते हैं, और दिमागमें शक्तिशाली विज्ञान भरते हैं।

यदि तुम्हारे कानोंमें किसी शक्तिकी सनसनाहट नहीं, उनमें तुम्हें कोई रहस्य नहीं मालूम होता—तो सोयी शक्तियों को जगाने के लिये संगीतके प्रेमी बनो। संगीतका प्रभाव बड़ा विचित्र है। जंगलीसे जंगली मनुष्यसे लेकर सभ्यातिसभ्य मनुष्य उसके प्रभावके वशीभूत हो जाते हैं।

फारसमें मिरजा मोहम्मद नामके एक सज्जन वीणा बजाने में उस्ताद थे। जब वह वीणा बजाते; आसपास के दरख्तोंमें बुलबुलें फुदकने लगतीं। उन पर वीणाकी मधुर ध्वनिका विशेष प्रभाव पड़ता। वे आनन्द के आवेश में गिर पड़तीं और बेहोश हो जातीं। वे सब उस समय तक बेहोशीकी हालत में पड़ी रहतीं, जब तक कि वह दूसरे स्वरका प्रयोग न करते। ज्यों ही वह स्वर बदलते, बुलबुलें होश में आकर उड़ जाती थीं।

सांप जैसे जहरीले जानवरको मदारी किस तरह तोंबीके स्वर में अकर्षित कर लेते हैं, इसका सबको पता है।

दरअसल संगीत सुननेके लिये अचल सचल सभी के कान होते हैं। जब बैजू बावरा मेघ मल्हार राग गाते, तो बादल पानी बरसा देते थे। वह जब दीपक राग अलापते तो दीपक आपसे आप जल उठते थे। बात यह है, संगीत का प्रभाव अद्भुत है। भगवान स्वयं संगीत के उपासक हैं। वे कहते हैं—"मैं न र वैकुण्ठमें रहता हूं, न योगियोंके मनमें। मुझे तो वहां रहनेका अभ्यास है, जहां भक्त संगीत द्वारा मेरी उपासना करते हैं।"

नौ दस वर्ष पहले की बात है। मेरे एक बी० ए० पास मित्रके पिताजी के हृदय की गति रुक जाने से देहान्त हो गया परिवार में चार-पांच विधवा औरतें और सात आठ छोटे बच्चे थे। उन पर विपत्तियों का पहाड़ आ टूटा। घर में पैसोंका अभाव। गृहस्थीका खर्च कैसे चले ? वह कमजोर दिल के आदमी थे, बहुत ज्यादा घबरा गये। पास में ऐसी पूंजी भी न थी कि कोई छोटा मोटा रोजगार कर लेते। बेचारे नौकरी की तलाशमें दर-बदरकी ठोकरें खाने लगे। मगर लाख कोशिशें करने पर भी उन्हें नौकरी न मिली। उनकी योग्यता, बेचैनी और घबराहटके प्रति किसी ने सहानुभूति न दिखायी। जहां जाते, अपमानित होते और कुत्तेकी तरह दुतकारे जाते। फूलको छूते वो कांटा हो जाता और सोनेकी तरफ उंगली उठाते तो मिट्टी का ढेर नजर आता। ,

इस मुसीबतमें उन्हें छः महीने से ज्यादा बीत गये। उनकी सूरत वर्षों जेल में पड़े कैदी की तरह हो गयी। आंखोंमें

निराशा और भयके भाव भर गये।

एक दिन वह इसी अवस्था में घरसे एक ग्लास चुरा लाये। बाजारसे अफीम खरीदी, पार्कमें घुस गये और सन्नाटे में अफीम को ग्लास में घोल डाला, उन्हें इस समय सब मुसीबतोंसे उद्धार पाने का एकही मार्ग दिखाई दे रहा था—आत्महत्या!

संध्याका समय था। सूर्यदेव इस नवयुवककी बेवकूफीको घृणा की दृष्टि से देखते अस्ताचल की ओर जा रहे थे। चिड़ियां बसेरा लेने के लिये आपसमें चोंचें चला रही थीं। मेरे मित्र ने अफीम से भरा ग्लास उठाया—उसे छाती तक ले गये, फिर धीरे धीरे मुंहके पास। वह ज्योंही उसे पीनेको तैयार हुए—उनके कानोंमें एक संगीत ध्वनि सुनाई दी। जिसका भाव यह था:—

"तुम्हारे आसपास राम रम रहे हैं। तुम उन्हें ढूंढो। उनके दर्शन-आनन्दसे तुम्हारे सब संकट दूर हो जायेंगे।"

इस संगीतमे मिठास का-सा जादू था। उसमें स्वरों का इतना प्यार और रागोंका ऐसा आनन्द उछल रहा था कि मेरे मित्र मस्त हो गये। उनके हाथसे ग्लास छूटकर जमीन पर गिर पड़ा और अफीमके सारे जहरको पृथ्वी पी गयी।

मेरे मित्र उस संगीत-ध्वनिपर पागल हो गये। आत्महत्या की जगह कानोंने उनके मनमें प्रेमकी दरिया बहा दी। वह शराबीकी तरह लड़खड़ाते हुए उठे—पार्कसे निकल कर सड़क पर आये।

कुछ दूर भिखमंगोंकी छोटी सी टुकड़ीके बीच एक दस ग्यारह वर्षकी बदसूरत लड़की उपरोक्त गाना गा रही थी। एक आदमी हारमोनियम बजा रहा था। चारों तरफ तमाशबीनों की भीड़ थी।

मेरे मित्र भीड़ चीरकर लड़कीके सामने जा खड़े हुये। लड़की ने उन्हें देखा और भयसे चीखकर हारमोनियम बजाने वालेसे चिपट गयी। संगीत बन्द हो गया। भीड़ में कोलाहल मच गया। एक तरफसे आवाज आयी मारो। दूसरी तरफसे एक आदमी ने कहा—गुण्डा है। हारमोनियम वाले ने आव देखा न ताव—एक गहरा तमाचा मेरे मित्रके मुह में जड़ दिया।

तमाचा तेज था, मगर मेरे मित्र पर उसका उल्टा असर पड़ा। वह आनन्दसे झूमने लगे और खिलखिलाकर हंसते हुए लड़की को पकड़ने दौड़े।

भीड़में और तहलका मचा। लोगोंने इसे बदमाशी समझकर लात-घूसों से मेरे दोस्तकी पूजा शुरू कर दी।

उसी तरफ से एक फ्रेंचकट दाढ़ीवाले सज्जन आ रहे थे। उन्होंने बड़ी मुश्किलसे भीड़के चंगुल से मेरे मित्र को छुड़ाया। वह किसी कालेज के प्रोफेसर थे। उन्होंने मेरे मित्रसे इस मारका सबब पूछा। मित्रने लड़खड़ाती जबानसे अपनी समस्त राम कहानी कह सुनाई।

प्रोफेसर साहबको बड़ा ताज्जुब हुआ, मगर किसीको विश्वास न था। लोग पार्कमें आये। पागलने अपनी सचाई का प्रमाण

अंगलीके इशारेसे दिखा दिया। प्रोफेसरने काले पदार्थको सूंघकर देखा—अफीम थी।

प्रोफेसर साहब दार्शनिक थे। उन्हें इस युवक पर बड़ी दया आई। वह उसे अपने घर ले गये। दो दिन बाद मैंने इस घटनाको धड़कते दिलसे सुना। उस समय मेरे मित्र साहबी लिबासमें एक सोफेपर बैठे मेरी खातिरदारीका इन्तजाम कर रहे थे। उन्हें सौ रुपये महीनेकी नौकरी मिल गयी थी। वह प्रोफेसर साहबके प्राइवेट सेक्रेटरी थे।

ऐसा है विचित्र कानोंका रहस्य। कान संगीतकी सनसनी द्वारा हमें कीमती आविष्कारोंका पता देते हैं।

बच्चे आमकी गुठली बजाते हैं, पहले घिसते हैं—फिर बजाते हैं। घिसते-घिसते जब स्वर बज उठता है, तब वे उन्हें और नहीं घिसते। अधिक घिसनेसे वह और बजेगी क्यों? मनुष्य भी जब संगीत सुनकर अपनी दुःख गाथाओंको व्यक्त कर डालते हैं—तब उन्हें आत्महत्या जैसे पापकी आवश्यकता नहीं पड़ती। वे अपने चारों तरफ आत्माकी आवाज सुनते हैं—उस आवाजके आघातसे वे जाग उठते हैं।

यदि तुम सूखी तबीयतके हो, संगीतसे घृणा करते हो तो मनुष्योंकी भीड़का कोलाहल सुनो। किसी मीटिंगमें चले जाओ, व्याख्यान सुनो। घड़ीकी टिकटिक आवाज; टेलीफोनकी घण्टी, मोटरका हार्न, जहाज या रेलकी सीटी तथा किस्म-किस्मके बाजों

की ध्वनि भी फायदेकी चीजें हैं। यह सब तुम्हारी मानसिक मुसीबतोंके जङ्गलको काटकर साफ कर देंगी और उसकी जगह छोड देंगी—वासंती उपवन और किस्म-किस्म के खिले हुए फूलोंके झुण्ड ! जिनकी मतवाली खुशबूसे तुम्हारा दिमाग हर समय ताज़ा और नया रहेगा।

सुननेवाले मनुष्य यदि बेवकूफी से अपने कान बन्द कर लेते हैं, तो इसके माने हुए कि वह आलस्यरूपी सांपको दूध पिलाकर पालते हैं, क्योंकि आलस्य के चिरसङ्गी हैं—निर्धनता और अपमान जो मनुष्य जीवन की स्फूर्ति; तथा जागृति को नाश कर देते हैं। इसलिये कानों के कपाट खोलने के लिये जागो और ब्रह्मचर्य पालन करो। ब्रह्मचर्य के माने हैं, ईश्वरके साथ चलना। इस बलसे तुम्हारे अन्तः शरीरमें महाशक्ति आ जायगी, दुर्बलताओं के बन्धन टूट जायेंगे और तुम मनुष्योंमें प्रकाशमयी शक्तियां पहुंचानेके प्रधान साधन बन जाओगे।

सच्चा ज्ञान हमे आंखों और कानों द्वारा प्राप्त होता है, जो अन्धकार के कैदखाने से निकल कर प्रकाश की दुनियामें घूमनेकी आजादी देता है। इसलिये कानके रहस्योंको समझने में ज्यादे से ज्यादा दिलचस्पी उत्पन्न करो।

तुम जागते हो, परन्तु नींदसे ज्यादा बेहोश हो। सब कुछ सुनते हो, मगर इस कानसे सुनते हो, उस कान से निकाल देते हो। मैं कहता हूं, जब तुम्हारे कानोंके सभी तन्त्रियोंके स्वर

ठीक हो जायेंगे, तुम्हारी हृदय-वीणा झनझना उठेगी और तब उनकी सफलताओं के अमर संगीत तुम्हें मुग्ध करने लगेंगे।

जिस तरह सन्ध्या शान्त होकर मूक वृक्षोंके बीच अपने सौन्दर्य—आनन्द का तमाशा दिखाती है, उसी तरह अपने शोक और दुखों में शान्त रहकर तुम भी मनुष्यके चमत्कारों को संसार में फैलाओ। (चिन्ताओंका स्वागत कर यदि तुम अपने कान बन्द कर लोगे, तो जीवन—उन्नतिका संगीत भी न सुन सकोगे, और तुम्हारा मनुष्य जीवन असमय में ही मुर्दा हो जायगा।)

लक्ष्य या सिद्धान्त

तुम्हारा जीवन कुरुक्षेत्रका मैदान है। इसमें रोज ही विषाक्त गैसें चलती हैं, सनसनी तेज वायुयान चढ़ते हैं, और भीषण बम्बार्ड होते रहते हैं। जिन्दगी के इस महासंग्राममें जो कायर, निकम्मे, और सिद्धान्त हीन हैं—कुत्तोंकी मौत मरते हैं, परन्तु कर्मवीर सैनिक झुण्डके झुण्ड इस महासमर में अवतीर्ण होकर आगे बढ़ते हैं। इन्हें कुरुक्षेत्र का युद्ध क्या; संसार का कोई भी महासमर नहीं परास्त कर सकता। यह अपने लक्ष्य पर बेचूक निशाना मारते हैं और विजयके स्वर्ण सिंहासन पर जा बैठते हैं।

यदि तुम जिन्दगीको सोनेकी तरह चमकाना चाहते हो, संसार के सिरमौर बनना चाहते हो, तो किसी सिद्धान्त को चुनो। सच्ची लगन के साथ कार्य-क्षेत्रमें उतरो। तुम्हारा सौभाग्य-सूर्य चमकनेकी प्रतीक्षा कर रहा है।

तुम्हारा लक्ष्य क्या होना चाहिये?—कोई अनोखी कामना, कोई अभिलाषा। यदि तुम कलाकार, कवि, दार्शनिक या वैज्ञानिकोंकी श्रेणीमें, आना चाहते हो, व्यापारकी दुनिया में चमकनेका इरादा है। जज, इन्जीनियर, डाक्टर, प्रोफेसर और ऐसी ही किसी दूसरी ऊँची कुर्सीपर बैठनेका ख्याल है—अमीर बनना चाहते हो,

तो अपने लिये कोई दिलचस्प काम चुनो। उसके 'प्लान' बनाओ और आत्मबल, उत्साह, तथा मानसिक ताकतों के साथ आगे बढ़ो, सफलता तुम्हारे चरण चूमेगी।

यदि तुम विचारपूर्वक देखो तो जिन्दगी की दिलचस्पी तुम्हें लक्ष्य या सिद्धान्त में मिलेगी। मनुष्योंकि उन्नति का इतिहास पढ़ो। योद्धा, साहित्यिक, व्यापारी, तथा धनी-मानी पुरुषों के जीवन चरित्र अध्ययन करो। तुम्हें मालूम होगा कि उनकी सफलता का महान वैज्ञानिक तत्व था—लक्ष्य या सिद्धान्त। वे किसी न किसी उद्देश्य को लेकर ही कार्यक्षेत्र में अवतीर्ण हुए थे। मुसीबत के कांटों को उन्होंने फूलसे अधिक कोमल समझा। और वे जीवन-संग्राम में हमेशा मैदान जय करते गये।

आज भी इस चिन्ताशील जगत में सैकड़ों हजारों औरत मर्द ऐसे मिलेंगे, जो किसी न किसी सिद्धान्त को लेकर ही जीवन की कठिन मंजिल तय कर रहे हैं। उन्हें दिलचस्पी से देखो; होशियारी से पहचानो। उनके श्रीमुख,में आत्माभिमान की अमर

चरण—चिन्हों पर चल कर आज हम मूर्ख और निकम्मे मनुष्य मुसीबतों के हाहाकार में अपनी अमूल्य जिन्दगी को मिट्टीमें मिला रहे हैं। हमारी नादानी का इससे बड़ा सबूत और क्या मिल सकता है?

जिन्दगी में किसी लक्ष्य या सिद्धान्त का न होना दुर्भाग्य की बात है। किसी एक सिद्धान्त की उपासना करो, जब तक एक न पूरा हो, दूसरे की तरफ नजर न उठाओ। नहीं तो वही कहावत चरितार्थ होगी—"दुविधा में दोनों गये, माया मिली न राम।" दो नावों में पैर रखने वाले मनुष्य डूब जाते हैं।

अब तुम्हें यह जान लेना जरूरी है, तुम्हारे जीवन का सिद्धान्त शक्तिशाली और अकेला होना चाहिये। यह नहीं कि तुम शेखचिल्ली की तरह सोचने लगो—"मैं मजदूरी कर चार पैसे कमाऊँगा, पैसों की मुर्गिया खरीदूगा, मुर्गिया सोने के अण्डे देंगी—अण्डे बेचकर महल बनाऊँगा, इत्यादि।" यह कोई लक्ष्य या सिद्धान्त नहीं, विचारों की निरर्थक लहरें हैं—जो आंधी की तरह दौडकर जीवन की चट्टानों से टकराती है और फौरन उलटे पैरों लौट जाती हैं। ऐसी निर्जीव विचारधाराओं से कोई फायदा नहीं। इनसे मन घूमने लगता है, ध्यानशक्ति कई भागों मे बँट जाती है और तुम किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाते हो।

सिद्धांत दो तरह के हैं—अच्छे और बुरे। बुरे सिद्धान्तों को दिलमें जगह मत दो, क्योंकि उनकी सनसनाहट से जिन्दगी का सारा रस सूख जाता है और तुम फौरन मैदान छोड भागते हो।

तो अपने लिये कोई दिलचस्प काम चुनो। उसके 'प्लान' बनाओ और आत्मबल, उत्साह, तथा मानसिक ताकतों के साथ आगे बढ़ो, सफलता तुम्हारे चरण चूमेगी।

यदि तुम विचारपूर्वक देखो तो जिन्दगी की दिलचस्पी तुम्हें लक्ष्य या सिद्धान्त में मिलेगी। मनुष्योंके उन्नति का इतिहास पढ़ो। योद्धा, साहित्यिक, व्यापारी, तथा धनी-मानी पुरुषों के जीवन चरित्र अध्ययन करो। तुम्हें मालूम होगा कि उनकी सफलता का महान वैज्ञानिक तत्व था—लक्ष्य या सिद्धान्त। वे किसी न किसी उद्देश्य को लेकर ही कार्यक्षेत्र में अवतीर्ण हुए थे। मुसीबत के कांटों को उन्होंने फूलसे अधिक कोमल समझा। और वे जीवन-संग्राम में हमेशा मैदान जय करते गये।

आज भी इस चिन्ताशील जगत में सैकडों हजारों औरत मर्द ऐसे मिलेंगे, जो किसी न किसी सिद्धान्त को लेकर ही जीवन की कठिन मंजिल तय कर रहे हैं। उन्हें दिलचस्पी से देखो; होशियारी से पहचानो। उनके श्रीमुख में आत्माभिमानकी अमर ज्योति जगमगा रही है। अखबारोंमें उनके नाम निकल रहे हैं। समस्त भूमण्डल उनके सिद्धान्तों का भक्त है।

यह सत्य है बगैर सिद्धान्त के सिद्धि नहीं मिलती। आज हजारों-लाखों स्त्री पुरुषों के दिल टटोलकर देखो—उनके जीवन का कोई सिद्धान्त नहीं। वे लक्ष्यहीन हैं। दुनिया में पैदा होते हैं, खाते कमाते हैं और सो कर हमेशा के लिये अनन्त के गर्भ में अन्तर्द्धान हो जाते हैं उन्हीं की देखा देखी; इन्हीं के

चरण—चिन्हों पर चल कर आज हम मूर्ख और निकम्मे मनुष्य मुसीबतों के हाहाकार में अपनी अमूल्य जिन्दगी को मिट्टीमे मिला रहे हैं। हमारी नादानी का इससे बड़ा सबूत और क्या मिल सकता है ?

जिन्दगी में किसी लक्ष्य या सिद्धान्त का न होना दुर्भाग्य की बात है। किसी एक सिद्धान्त की उपासना करो, जब तक एक न पूरा हो, दूसरे की तरफ नजर न उठाओ। नहीं तो वही कहावत चरितार्थ होगी—"दुबिधा मे दोनो गये, माया मिली न राम।" दो नावों मे पैर रखने वाले मनुष्य डूब जाते हैं।

अब तुम्हें यह जान लेना जरूरी है, तुम्हारे जीवन का सिद्धान्त शक्तिशाली और अकेला होना चाहिये। यह नहीं कि तुम शेखचिल्ली की तरह सोचने लगो—"मैं मजदूरी कर चार पैसे कमाऊँगा, पैसों की मुर्गिया खरीदूगा, मुर्गिया सोने के अण्डे देंगी—अण्डे बेचकर महल बनाऊँगा, इत्यादि।" यह कोई लक्ष्य या सिद्धान्त नहीं, विचारों की निरर्थक लहरें हैं—जो आँधी की तरह दौड़कर जीवन की चट्टानों से टकराती है और फौरन उल्टे पैरों लौट जाती हैं। ऐसी निर्जीव विचारधाराओं से कोई फायदा नहीं। इनसे मन घूमने लगता है, ध्यानशक्ति कई भागों मे बँट जाती है और तुम किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाते हो।

सिद्धांत दो तरह के हैं—अच्छे और बुरे। बुरे सिद्धातों को दिलमे जगह मत दो, क्योंकि उनकी सनसनाहट से जिन्दगी का सारा रस सूख जाता है और तुम फौरन मैदान छोड़ भागते हो।

अच्छे सिद्धान्तों को ग्रहण करो। जो आत्मा अच्छे सिद्धान्तों को जानती है, वह जीवन-संग्राम में अपने को कभी अकेला नहीं देखती। वह अपनी तकलीफों को एक ओर पटक देती है और ऐसी उन्नतिशील शक्तिको पकड़ती है, जिसका पहले उसे ज्ञान तक न था।

तुम्हारी आंखोंके सामने दुनिया में जो चीज है, जिसे तुम हासिल करना चाहते हो, जो तुम्हारे दिलमें प्यार के पौधेकी तरह लहलहा रही है—एक न एक दिन तुम्हें अवश्य मिलेगी। हां तुम्हें सिद्धान्त के तपस्याकी जरुरत है—सच्चे दिल से उसी के नाम की माला फेरने की आवश्यकता है।

यह न सोचो—"मैं भला क्या कर सकता हूं?" उल्टे यह भावना बनाओ—"मैं क्या नहीं कर सकता!" तुम प्रायः ऐसे जन्मान्ध आदमियों को देखते होगे, जिनमें कोई न कोई ऐसा महान् गुण होता है, जिसे देखकर सबको चकित रह जाना पड़ता है। तुम सोचोगे—इस बिना पढ़े लिखे, बिना दुनिया देखे अन्धे में इतनी करामात कहांसे आ गयी? इसमें अवश्य कोई न कोई दैवी शक्ति है। हा, सचमुच उसमें दैवी शक्ति है। अन्धा होने के कारण वह आत्म ससारमें रहता है और उसे आत्म-चिंतनसे अपना लक्ष्य बोध होने लगता है, तब वह एक महान् गुण लेकर हम लोगोंके सामने प्रकट हो जाता है।

सिद्धान्तोंकी सफलताके लिये हमें अपनी मङ्गलमयी आत्मा को पहचानना होगा। यह आत्मा दैवी निधियोंकी कल्याणी है।

जिस तरह दैव शक्तिमान है, उसी तरह आत्मा भी हममें से प्रत्येक को दैवी विभूति प्रदान करती है। यदि तुम आत्मा के विश्वासको लेकर कर्तव्य पथपर अग्रसर होगे, तो तुम्हें नदी भी मार्ग दे देगी, पर्वत भी सिर आंखोंपर उठा लेंगे। लक्ष्य या सिद्धान्त से जीवन की कोई ऐसी ग्रन्थि नहीं, जो खोली न जा सके।

तुम्हें ऐसे सैकड़ों उदाहरण मिलेंगे, जिनसे ज्ञात होगा कि जिनकी गणना पहले गरीब, मूर्ख और कमजोरोंमें होती थी, वही सिद्धान्त को लेकर अमीर, विद्वान और बहादुर बन गये। गोल्ड स्मिथको लो—उनकी गंवारों में गिनती थी; पर 'विकार आफ दी वीक फील्ड' और 'डेसर्ट भिलेज' उन्हींके दिमाग की रचना है। लार्ड क्लाइव स्कूल में सब से ज्यादा कमजोर और मूर्ख समझे जाते थे; पर इतिहासके पन्नोंमें वह अंग्रेज जाति के गौरव हैं। स्काट, बायरन, कालिदास—सभी मूर्ख समझे जाते थे; पर उनकी प्रतिभा सिद्धान्तों को लेकर बाद में चमकी। किसी ने ठीक ही कहा है—"जिसने अपनी योग्यता को चमकानेका कोई उद्देश्य बना लिया है, दुनिया में वही धन्य है।"

बहुत से लोग परिश्रम करते हैं, मगर उन्हें सफलता नहीं मिलती। यदि उनसे पूछा जाय, तुम्हारा सिद्धान्त क्या है? तो वह मुंह बिगाड़ कर कहेंगे—"सिद्धान्त फिद्धान्त मैं नहीं जानता। मुझे मिहनत में विश्वास है कुछ न कुछ हो ही जायगा।" ऐसे लोग बड़े हजरत होते हैं। इनके जीवन का कोई लक्ष्य नहीं। इन्हें तो बस फावड़ा चलाने से मतलब—जमीन

तुम्हारे सिद्धान्त रथ के सारथी स्वयं कर्मयोगी श्रीकृष्ण हैं।

हिम्मत करो और किसी सिद्धान्त को लेकर आगे बढ़ो.—

"सामिल में पीर में शरीर में न राखै भेद,
हिम्मत-कपाट को उघारै तो उघरि जाय।
ऐसो ठान ठानै तो विनाहू किये जन्त्र मन्त्र,
सांप की जहर को उतारै तो उतरी जाय॥
ठाकुर कहत कछु कठिन न जानो जग,
हिम्मत कियेते कहो काह न सुधरि जाय।
चारि जनै चारिहू दिसा ते चारो कोन गहि,
मेरु को हिलाय के उखारैं तो उखरि जाय॥

—:o:—

समय का चिन्ह

रुपये कमाने में व्यस्त रहने वालों का कथन है—

किसी ने कहा है—समय रुपया है। बात सच है। यदि विचारपूर्वक देखा जाय, तो समय की कीमत रुपये से ज्यादा है! समय का सदुपयोग करने से मनुष्य के ज्ञान; स्वभाव और चरित्र की उन्नति होती है। उसमें नियमबद्धता आ जाती है और उसे लोकप्रिय होते देर नहीं लगती। इसे हमेशा ध्यान रखो, ज्यों-ज्यों समय बीतता जा रहा है। आयु की घड़ियाँ समाप्त होती जा रही हैं।

समय क्या है? समय शुभ जीवन और लक्ष्मी का अक्षय भण्डार है। परमात्मा ने हमें सब कुछ दिया है, मगर उसने 'समय' देने में कंजूसी की है। वह दो क्षण या दो दिन भी एक साथ नहीं देता। जब पहला दिन देकर छीन लेता है; तब दूसरा दिन देता है, मगर तीसरे दिन को अपने ही कब्जे में रखता है—इसलिये कि मनुष्य आँखें खोलकर चले और समय की कीमत पहचाने। जो मनुष्य आज के दिन का मूल्य समझता है, उसके लिये कल का दिन और भी कीमती हो जाता है। महात्मा तुलसीदास ने अपने अमूल्य समय के नष्ट होने पर पश्चात्ताप करते हुये कहा है:—

"अब लौं नसानी अब ना नसै हौं।"

मगर हम अँधेरे में सो रहे हैं। समय के चिन्हों को नहीं पहचानते। यदि महात्मा तुलसीदास की तरह व्यर्थ समय नष्ट होने पर आँखों में पश्चाताप के आंसू उमड़ आयें तो जीवन आनन्द मार्ग पर अटल हो जाये।

एक अङ्गरेज कवि ने समय की उपमा वेगवती नदी से दी है। उसकी गूढ़ता देखिये। वह कहता हैं—"वेगवती नदी जैसे अनन्त सागर में चुपके से जाकर मिल जाती है, वैसे ही समय भी अपना एक-एक पल अनन्त कोष में संचित करता जाता है। नदी की धारा बह जाने के बाद फिर नहीं लौटती। समय भी बीत जाने पर हाथ नहीं आता। परन्तु इतनी समता होते हुये भी दोनों में भेद बड़ा गहरा है। नदीके दोनों ओर की भूमि उपजाऊ और लहलही होती है, किन्तु समयका प्रवाह जिधर से वह निकलता है, उधर अपने पीछे केवल मरुस्थल ही छोड़ता जाता है।

कवि की इस मार्मिक उक्ति में कितना गहरा तत्व है, यह समय की कीमत जानने वाले मनुष्य ही समझ सकते हैं। सब लोग यदि सिर्फ इतना ही सोच लिया करें कि समय का सदुपयोग करने से अनेकों लाभ होंगे, तो बहुत कुछ उपकार हो सकता है। लेकिन आज के मनुष्यों की दशा यहां तक गिरी हुई है कि वे अपने मतलब की बात तक नहीं समझते। उलटे समयका दुरुपयोग किया करते हैं। देखिये न, प्रतिदिन लोग ढेर के ढेर मुर्दे श्मशान की तरफ जाते देखते हैं; मगर जो जीते हैं, वे

समझते हैं—हम हमेशा जीते रहेंगे। इससे बढ़कर आश्चर्य की बात और क्या होगी ?

समय का वेग अबाधित है। यह न दिन देखता है, न रात एक-एक सेकेण्ड से शताब्दियां बनाकर अनन्त पथ पर चला जाता है। इस लिये जो समय को गले से लगाते हैं। भविष्य उन्हींके दोनों हाथों में लड्डू देता है।

लार्ड मिनहा से किसी ने पूछा आप को सफलता कैसे प्राप्त हुई ? उन्होंने कहा, सिर्फ योग्यता से ही सफलता नहीं मिलती उपयुक्त समय का प्रयोग सफलता के लिये सजीव साधन है। संसार में प्रत्येक मनुष्य के साथ उसका कार्य भी उत्पन्न होता है, पर जब तक कोई चेष्टा नहीं की जाती, कोई काम सफल नहीं होता। समय देखते रहने की मुस्तैदी, समय को काम में लाने की होशियारी, समय से मुमकिन कार्य निकालने की सामर्थ इत्यादि ऐसी बातें हैं, जिनसे कामयाबी हासिल होती है। कोई वक्त ऐसा नहीं, कोई दिन ऐसा नहीं, जब कोई न कोई अच्छाई करने का मौका न पेश आये।

बेंजामिन फ्रेंकलिन जैसे महापुरुष ने कहा है—"यदि तुम्हें जीवन बहुत प्यारा हो, तो समय बरबाद न किया करो। क्योंकि समय के खम्भे पर ही जिन्दगी की इमारत टिकी है।"

इतिहास में उन मनुष्यों के हजारों उदाहरण मिलेंगे, जिन्होंने समय को हाथ से नहीं जाने दिया और असम्भव कार्योंमें सफलता

पाई। तुम असाधारण समय की प्रतीक्षा में क्यों वक्त बरबाद करते हो? मामूली समय का उपयोग करो और उसे बड़ा बना कर दिखाओ। कमजोर आदमी समय का इन्तजार करते हैं, पर सामर्थ पुरुष उसे पैदा करते हैं। खुली आंखों से समय दिखाई दिये बिना नहीं रह सकता। खुले कान आवाज सुने बिना नहीं रह सकते। खुले दिलों के वास्ते काम करने के लिये बढ़िया वक्त आये बगैर नहीं रह सकता।

पश्चिमी नई दुनिया कब नहीं थी? वह कौनसा मल्लाह था जिसके आगे यह समय मौजूद न था, पर अमेरिका ढूंढ निकालने का श्रेय कोलम्बस को ही प्राप्त हुआ। पेड़ों से सेब गिरते किसने नहीं देखा? पर सेबोंका गिरना देखकर प्रकृति के नियमों को पहचानने का यश न्यूटन को ही मिला। बिजली चमकनी किसने नहीं देखी? पर उसकी उपयोगिता सिद्ध करने का श्रेय फ्रेंकलिन को ही था।

हम जिस दिन समय का मूल्य समझने लग जायेंगे, हमारी उन्नति के मार्ग में रोड़े नजर न आयेंगे। समय में उन्नति का रहस्य छिपा है। समय का दूसरा नाम जीवन है! जीवन की सार्थकता इसी में है कि तुम एक मिनट भी व्यर्थ बरबाद न करो। नित्य नये 'चान्स' ढूंढो और जिन्दगी में नये परिवर्तन करो। याद रखो, हम इसी जन्म में अनेकों अवतार ले लेते हैं।

समय 'विलपावर' का प्रश्न है। जो लोग समय के चिन्हों को नहीं पहचानते, उनके 'विलपावर' में मोर्चा लग जाता है और

वे अपने में कोई चमत्कार नहीं पैदा कर सकते।

जिन्दगी को रोज चेक करो। मैंने कितनी उन्नति की? मैं कहाँ तक पहुच गया? कल मेरा दिन कैसा था, आज कैसा है? रोज रात को इसका हिसाब कर डालो। परिश्रम का फल अपने आप मिल जायगा।

यदि तुम्हें यह सब काम करने में कठिनाई हो, तो एक रोजाना या साप्ताहिक टाईम टेबुल बनाओ और उसी के अनुसार समय का सदुपयोग करो। वह तुम्हें पथप्रदर्शक का काम देगी। यदि तुम समय को ठुकरा दोगे, तो गली के ठीकरे ही रह जाओगे और तुम्हें कोई न पूछेगा।

समय के सदुपयोग और दुरुपयोग के विषय में एक शायर फरमाते हैं:—

> "नफे की क्या खाक हो उम्मीद हमको बर्फ में,
> देर बिकने में लगी तो गल के पानी हो गया।"

समय की दशा ठीक बर्फ की सी है। यदि तुम उसका सही उपयोग न कर सके, तो एक अमूल्य सम्पत्ति के लाभ से वंचित रह गये।

मैंने अपने बहुत से दोस्तों को देखा है, वे सूर्य की रोशनी में टांगे पसार कर सोते है। कुछ व्यर्थ तर्क, मनुष्यों की निन्दा स्तुति और झगड़े फसाद में कीमती समय बरबाद करते हैं। होटल मे, चायखानों में, शराब और अफीम के अड्डों में देखो

हजारों बे-परके कबूतर उड़ते दिखाई देंगे। यदि इन कबूतर उड़ाने वालोंसे कहो—भाई, कोई अच्छा काम करो, दुनियामें नाम कमाओ—अखबार और अच्छी अच्छी किताबें पढ़ो, तो वह मुह बनाकर उत्तर देंगे—मुझे समय नहीं मिलता। ऐसे मनुष्य दया के पात्र है। जरूरी, विश्वासपूर्ण ऊंचे दर्जे के काम को हाथ में लेने के अयोग्य। एक बार वाशिङ्गटन के सेक्रेटरी साहब को ठीक समय पर काम पर पहुंचने के लिये देर हो गयी? आपने अपनी इस गलतीके लिये उनसे मांफी मांगते हुये कहा—"मेरी घड़ी सुस्त चलती थी, देर होने का यही सबब है।" वाशिङ्गटन ने प्रेमपूर्वक उत्तर दिया—"कल से या आप को अपनी घड़ी बदल देनी होगी या मुझे दूसरे सेक्रेटरी का इन्तजाम करना पड़ेगा।"

मनुष्य के पास जब रुपया रहता है, वह उसे पानी की तरह बहाता है, मगर जब रुपयोंका स्रोत सूख जाता है तो उसे रुपयों की असली कीमत मालूम होती है। यही बात उन आदमियों पर है, जो समय का मूल्य वक्त चले जाने पर समझते हैं, हाथ मल-मल कर पछताते हैं, तथा मरने के कुछ घन्टे पहले समय के सदुपयोग की बातें सोचते हैं और पश्चाताप करते हैं—हाय, मैंने कितना ही समय व्यर्थ खो दिया!

समय की एक एक घड़ी जागरण की बिगुल ध्वनि है। समय का एक-एक जर्रा ज्ञान-विज्ञान का चमत्कार है। समय का एक-एक सेकेण्ड मौत का काला पैगाम है:—

सुबह होती है शाम होती है,
उम्र यों ही तमाम होती है।

रोज एक घन्टा फिजूल बरबाद करने से बचा कर एक साधारण आदमी भी किसी विज्ञान का ज्ञाता हो सकता है। एक घन्टा प्रति दिन के अध्ययन से एक मूर्ख व्यक्ति बुद्धिमान बन जाता है। एक घन्टा रोज पढ़ने से कोई भी विद्यार्थी एक साल में दस हजार पेज पढ़ सकता है। एक घन्टा रोज काम करने से भूखों मरता आदमी रोजी कमा सकता है। एक घन्टा रोज के उद्योग से अज्ञात व्यक्ति सुप्रसिद्ध हो सकता है। इसी तरह यदि सुकर्मों में हमारा सारा समय व्यतीत होता रहे—तो जीवनलता रसीले फूल फलों से लद जाय और हमारा मनुष्य जन्म सार्थक हो।

समय का उचित उपयोग न करने से हरदम दिक्कतें उठानी पड़ती हैं। यदि तुम अपना काम पूरा करना चाहते हो, तो उसे अपने हाथों से करो—यदि पूरा नहीं करना चाहते, तो दूसरे को सौंप दो।

सफलता के लिये समय की पाबन्दी और उपयोग आवश्यक है। देर लगाने या टालमटोल करने से संसार में अनर्थ हो गये और होते रहते हैं। इसकी एक-एक घड़ी भाग्यशाली है, इसका एक-एक पल बीत जाने से निश्चित कार्य फिर नहीं हो

सकता। जैसे लोहा ठण्डा हो जाने पर पीटने से कोई लाभ नहीं, इसी तरह जो कार्य कल पर टाल दिया जाता है; फिर वापस नहीं आता। कौन विद्यार्थी नहीं जानता, परीक्षा के समय देर से आने पर क्या हानि होती है? कौन विद्यार्थी एक बार उत्तीर्ण न हो कर यह चाहेगा अब की देखा जायगा, और अब की दफा जो देखने वाले हैं, उन्हें सफल होते कभी नहीं देखा गया।

हम चारों तरफ अपनी मुसीबतों का रोना रोते हैं कि हम गरीब हैं, हमारे बाल-बच्चे भूखों मर रहे हैं। यह कमजोरियाँ हैं। दुनिया में विशाल कार्य क्षेत्र पड़ा है। चारों तरफ कारूँ का खजाना चमक रहा है, मगर उसे प्राप्त करने वाला चाहिये। हमारी बड़ी कमजोरी यह है कि हम जानते हुए भी समय का प्रयोग नहीं करना चाहते। हम धन, नाम या योग्यता प्राप्त करने के लिये किसी असाधारण समय की प्रतीक्षा करते हैं, और कर्ज लेकर धनवान बनने की इच्छा रखते हैं।

यह भयानक भूलें हैं। किसी खास समय की प्रतीक्षा न करो, बल्कि उसे पैदा करो। सुनहरे मौके सुस्त आदमी के लिये कुछ भी नहीं, पर मिहनती मनुष्य के मामूली काम भी सुनहरे मौकों के समान हैं। "गया वक्त फिर हाथ आता नहीं।" खोया हुआ धन कंजूसी और परिश्रम से, खोया हुआ ज्ञान पढ़ने और अध्ययन से, खोया हुआ स्वास्थ्य अनुपान और औषधि से फिर मिल सकता है, पर खोया हुआ समय हमेशा के लिये हाथ से

निकल जाता है। किसीने ठीक कहा है:—

"काल करै सो आज कर, आज करै सो अब्ब।
पल में परलै होयगी, बहुरि करोगे कब्ब?"

तुमने जिस आदमी से जिस समय मिलने का वादा किया हो—सौ काम छोड़ कर ठीक 'टाइम' पर मिलो। यदि ऐसा न करोगे, तो लोगों में तुम्हारी तरफ से विश्वास उठ जायगा।

यदि तुम किसी मीटिंग, कांफ्रेन्स, थियेटर, क्लब या बायस्कोप के संचालक हो तो उन्हें ठीक समय पर आरम्भ करो। बहुत से लोग स्टेशन पर उस समय पहुंचते हैं, जब गाड़ी छूट जाती है।

समय प्रकृति का कानून है। प्रकाण्ड सूर्य से लेकर धूलि-कण तक, अनन्त नक्षत्र से लेकर जुगनू मंडल तक, पशु, पक्षी, कीट, पतंगा, जल, अग्नि, वायु—सब समय के नियमों का पालन करते हैं। देखो, सूर्य ठीक समय पर उदय होता है, ठीक समय पर अस्त। इसमें क्वार्टर सेकेण्ड का भी हेर-फेर नहीं पड़ता। आज की बताई तारीख से ठीक पचास वर्ष बाद भी 'ग्रहण' का वही समय होगा—उसमें जरा भी फर्क न पाओगे।

समय का ठीक-ठीक उपयोग करो। उसके चिन्हों को पहचानो। समय नदी के पास आकर प्यासे न लौटो। श्वास-

श्वास में इस परमानन्द-रस का पान करो। जब चिड़ियों का झुण्ड हरा-भरा खेत चुन जायगा, तब पछताने से फायदा न होगाः—

"दीनो अवसर को भलो, जासों सुधरै काम।
खेती सूखे बरसिबो, घन को कौने काम ?"

असली और नकली मनुष्य

ईश्वर वर्तमान समय का सबसे बड़ा इन्जीनियर, गणितज्ञ और वैज्ञानिक है। उसकी रचनायें मौलिक चमत्कारों से भरी हैं। उसकी लीलायें, विशाल और अखण्ड हैं। परन्तु—?

मनुष्य ईश्वरकी सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ, होशियार और सुन्दर प्राणी है। ईश्वर ने उसे प्रकांड बुद्धि प्रदान की है। पृथ्वी, वायु, तेज और आकाश के तत्वों से उसकी रचना कर वह स्वयं उसकी आत्मा में परमात्मा बन कर समा गया है। यहीं से वह मनुष्यके प्रत्येक कार्य की रिपोर्ट लेता है। वह मनुष्य को जगाने के लिये उसपर मुसीबतें ढाता है। उसने मनुष्यको इस विशाल पृथ्वी पर इस लिये भेजा है, कि वह उसकी बनाई हुई समस्त चीजों का आनन्द ले, जीवन रहस्य भेदों को समझे और मानसिक शक्तियों द्वारा भाग्यका स्वयं संचालन करे।

लेकिन मनुष्य की विचित्रतायें देखो—वह संसार में आते ही दो भागोंमें विभक्त हो जाते हैं। एक असली रास्ता चुनता है। दूसरा नकली। दोनों अपनी जीवन-नौका संसार सागर में खेते हैं, मगर दोनों में भेद भारी है।

असली मनुष्य वे हैं, जो अपने जन्म रहस्य और कर्मतत्वों को समझ गये हैं।। ये विद्या, प्रेमी, साफ तबीयत, सत्यके अन्वेषक

उदार और सरल हैं। समदर्शी इतने कि संसार के प्रत्येक धर्म को, हरेक मनुष्य को—एक निगाह से देखते हैं। इनके लिये चींटी और हाथी का वजन बराबर है। ये असम्भव को सम्भव कर दिखाते हैं। ईश्वर अपने इन असली प्रतिनिधियों के वर्तमान तथा भविष्य को सुनहरी किरणों से सजाता है और इनकी इतनी आकर्षक सहायता करता है कि लोग देखकर दङ्ग रह जाते हैं।

दूसरे नकली मनुष्य हैं। उन्हें ईश्वर की जरा भी परवाह नहीं। इनके लिये जीवन के कानून फायदे फिजूल हैं। ये जरूरत से ज्यादा घमण्डी, स्वार्थी, झूठे और दूसरों की उन्नति देख कर जलने वाले होते हैं, इन्हें मानसिक शक्तियों का जरा भी ज्ञान नहीं। उठाईगीरी, दगाबाजी और बुराइयों से लबालब भरा हुआ है इनका मन। ये स्वार्थ के लिये मनुष्य का खून करते हैं। क्रूर कामनाओं से इनका मन पागल होकर चारों तरफ घूमा करता है। ये मन के कपटी हैं, जबान के गाँठे। ईश्वर इन नकली मनुष्यों को प्राकृतिक घटनाओं के इशारों से सदा सावधान करता है मगर ये अपनी मस्ती में इस कदर चूर रहते हैं कि उस तरफ इनका ध्यान ही नहीं जाता।

देखा तुमने ? जो असली मनुष्य हैं, वह स्वयं अपने भाग्य के विधाता हैं। जो नकली हैं, वे भाग्य के हत्यारे, बेवकूफ, और अपराधी !

प्रत्येक मनुष्य के चेहरे को गौर से देखो। कितने ही आदमी

दो-दो तीन-तीन तरह की शक्लें रखते हैं। किसी का चेहरा सुर्ख है, किसी का पीला। कोई रोनी सूरत लिये घूमता है, किसी के चेहरे में हंसी खिलखिला रही है। प्रत्येक मनुष्य अलग अलग रङ्ग रखते हैं। इनमें असली और नकली दोनों तरह के मनुष्य हैं। चतुराई से इनका अध्ययन करो। ईश्वर और संसार दोनों ही असली मनुष्य के ग्राहक हैं। इनके हृदय—मन्दिर में नकली मनुष्यों के लिये जगह नहीं।

यदि कोई मनुष्य दावा करता है, मैं ईश्वर को प्यार करता हूं—परन्तु व्यवहार में वह अपने किसी मनुष्य भाई से घृणा करता है—तो वह झूठा है, क्योंकि जब वह अपने मनुष्य भाई से, जो कि दृश्य है, प्यार नहीं कर सकता तो वह ईश्वर से, जो अदृश्य है, किस तरह प्यार कर सकता है? ईश्वर का आदेश है मुझसे प्यार करनेके पहले अपने मनुष्य भाई को प्यार करो।

मैं पूछता हूं, इतनी महान् आत्मा पाकर तुमने क्या किया? जिस मनुष्य ने कर्त्तव्य पूर्ण करने की शिक्षा प्राप्त की है, वह संसार में सब कुछ कर सकता है। संसार में रहकर कैसे जीना है, यही सच्ची शिक्षा है। पहले मनुष्य बनना है—पीछे कुछ और।

दोनों ही तरह के मनुष्य विपत्ति पड़ने पर सावधान होते हैं। और उन्हें ज्ञान प्राप्त होता है। जब तक मनुष्य ठोकरें नहीं खाता दुःखों के बोझे सर पर नहीं ढोता, तब तक जीवन के चमत्कारों की कीमत नहीं समझता। आफत रूपी धक्के से सचेत होकर मनुष्य ज्ञानी होता है और सहसा अपने आप प्रश्न कर बैठता

है मेरे जीवनका यथार्थ लक्ष्य क्या है—मैं इस पृथ्वी पर क्यों आया हूं ?

कुछ लोग मनुष्य जीवन को माया कहते हैं। मगर वह माया नहीं, आत्म—सौंदर्य है। कुछ लोग कहते हैं—चार दिन की चांदनी है, जीवन चन्द रोज है, तो इसके यह माने नहीं हुए कि हम जड बन कर खामोश हो जायं। चार दिन और चन्द रोज अत्यन्त पवित्र शब्द हैं। इनके द्वारा इन्सान जीवन के गूढ रहस्योंको समझ सकता है। यदि तुम किसी सिद्धान्त को लेकर आगे बढ़ोगे, तो जिस तरह कमल पानी में रह कर नहीं भीगता उसी तरह मुसीबतों की मूसलधार वृष्टि तुम्हें न भिगो सकेगी।

> फरिश्ते से बहतर है इन्सान होना,
> मगर इसमें पड़ती है मिहनत जियादा।

कौन कहता है, अयोध्या है—मगर उसमें राम नहीं। समय के चिन्ह पहचानो। मनुष्य और जमाने को देखो। भगवान राम चन्द्र आज भी जीवित रह कर करोडों स्त्री पुरुषोंके हृदय सिंहासन पर राज्य कर रहे हैं। जहां हृदय के साथ हृदय का सम्मिलन है, आत्मा के साथ आत्मा का प्रेमालाप है—वहां आज, इस समय भी सांवलिया श्री कृष्ण की मोहनी बांसुरी बज रही है, सरस्वती की मधुर बीणा झंकृत हो रही है।

गौर से चमकते शीशे में अपना मुंह देखकर सोचो—"मैं कौन हूं—असली या नकली मनुष्य ?"

प्रेम का तपोवन

यह प्रेम का तपोवन है !—हां प्रेम का तपोवन।

यह वही प्रेम है, जिस में आकर्षण है, वेदना है, और है अमृत-सी मिठास। इसका एक घूंट पीकर सती सीता ने भगवान रामचन्द्र के मुखचन्द्र की उपासना की थी, पार्वती ने प्रलयंकर शंकर की मूर्ति पर मानस प्रसून चढ़ाये थे; सावित्री ने सत्यवान के दर्शन किये थे; मजनू लैलीपर फिदा हो गया था और फरहाद शीरीं पर मर मिटा था।

संसार का यही सबसे बड़ा सार तत्व है, धर्म की यही मजबूत जड़ है। इस पुण्य तपोवन में आकर मनुष्य जीवन के समस्त पाप-ताप नष्ट हो जाते हैं, शोक कालिमायें धुल जाती हैं और दुख दैन्य के स्थान पर आनन्द का शीतल झरना झरने लगता है।

शक्ति की इसी सुधा को पीकर महाकवि कालिदास ने शकुन्तला की रचना की थी, उमरखय्याम ने रुबाइयों की दीप-मालिका जलाई थी, शेक्सपियर हैमलेट पर मुग्ध हो गये थे और जयदेव गीतगोविन्द की रसीली बांसुरी बजाने में मस्त थे।

प्रेम अनोखा शान्ति निकेतन है। इसे पाकर नास्तिकों के मन में परमात्मा के प्रति श्रद्धा उत्पन्न होती है। यहां पंडित-मूर्ख अमीर गरीब, छोटे-बड़े मुसलमान-ईसाई—सब समान हैं। यहा

जो राम का मतलब है, वही रहीम का। ईसा और मूसा में कोई भेद नहीं। यहां जो स्थान महात्मा तुलसीदास का है—वही भवभूति, वेदव्यास, गालिब और जौकका। यहां एक रस है, एक नशा। सब आनन्द विभोर होकर झूमते हैं, एक ही राग अलापते है, प्रेम, मुहब्बत, लव। ओह! यहां आकर मैं प्रेम का पागल बन गया। क्या कहने जा रहा था और क्या कहने लगा।

हां, यह प्रेम का तपोवन है।

यहां के स्वर्गीय सुखों को देख कर मन न जाने कैसे-कैसे हो रहा है। यहां सब सुन्दर हैं, सब पवित्र। दूसरी जगह बादशाह होने की अपेक्षा यहा एक परवाना, एक पतिंगा होना करोड दर्जे अच्छा है। यहा सब के होठों पर हंसी नाच रही है। हृदय सागर मे प्यास के तूफान लहरा रहे है। दुश्मनों को भी प्यार करने की इच्छा होती है।

यहा हृदयाकाश मे चन्द्रमा उदय हो रहा है, मरुजीवन सुगन्धित फूलों से भर गया है, सौंदर्य आंखों में सुर्मे की तरह समा गया है। मैं इस तपोवन को देखूंगा, देखते देखते पागल हो जाऊंगा और रोने लगूंगा। मेरे पास यही कीमती धन है मगर मैं भी कैसा भुलक्कड़ हूं—क्या कहने जा रहा था और क्या कहने लगा।

हां, यह प्रेम का तपोवन है
महाकवि दाग फरमाते है —

"मैं तो हर अन्दाजे माशुकाना का दीवाना हूं।
गुल पै बुलबुल हूं अगरतो शमापर परवाना हूं।
जिसपै आशिक है सबा उस खाकका जर्रा हूं मैं,
वर्क जिसपर लोट है उस खेतका दाना हूं मैं॥"

उनकी आंखें हर तरफ की मस्ती बटोर रही हैं। वह कहते है—

"हर रङ्ग में जलवा है तेरी कुदरत का
जिस फूल को सूंघता हूं बू तेरी है।"

यहा हर समय खुशी की दरिया बहती है, यहा फकीर भी मस्त—अमीर भी मस्त—

"फाकता हूं गुल सी सूरत का,
मर्द आजाद हूं मुहब्बत का।"

हम बाहरी दुनिया में परस्पर अपरिचित थे, किन्तु यहा आते ही एक दूसरे के प्रिय पात्र बन गये। यहा के स्त्री पुरुषों मे देवताओं की आभा झलक रही है। यहां की समस्त चीजों को हृदय के खजाने मे बटोर कर रखूंगा। वे स्वर्गीय हैं, सुन्दर हैं, विचित्र हैं।

जी में आता है, यहा वसन्त-माधुरी के साथ कामदेव बन कर होली खेलूं। मुझ मे आकर्षण शक्ति जागृत हो रही है। उफ, मैं कितना पागल, और सनकी हूं। क्या कहने जा रहा था और क्या कहने लगा।

हां, यह प्रेम का तपोवन है।

एक दिन इसी तपोवन मे आकर मैं प्रेम का पागल बन गया था। उस दिन आज की तरह न मुझ मे मस्ती थी, न मुहब्बत का नशा। उन दिनों में टक्कर खा रहा था। जिन्दगी मुसीबतों का पहाड़ बन गई थी। ससार से घृणा थी, मनुष्यों से नफरत मेरी आखो के सामने एक एक मनुष्य का चेहरा भूत प्रेत और जिन्न की तरह फिर रहा था। जीवनके तार टूटकर छिन्न भिन्न हो गये थे। मैं आत्महत्या के लिये भटक रहा था।

एकाएक किसी दैवी शक्ति ने, किसी गुप्त हलचल ने मुझे इस तपोवन की प्यारी मिट्टी पर ला पटका। मैंने देखा—वहां एक कीमती हीरा चमक रहा है। आंखों में लालच और दिल मे प्रेम का महासागर उमड आया। मैंने झुक कर उसे उठाया और कंगाल के धन की तरह दिल की तिजोरी में छुपा कर रख दिया। बस, फिर क्या था?—

(मैं के कनारे क्या थे, जब तक खुम में थे सागरमें थे;
मेरे होठों तक पहुचना था कि तूफा हो गये।)

देखते-देखते घृणा के अन्धकारमय आकाश मे प्रेम का इन्द्र धनुष उदय हो गया। निराशा के रहस्यमय पर्दे को भेदकर आशा के रङ्ग विरंगे आलोक जगमगा उठे। प्राण कुञ्ज में कोकिलाये कूकने लगीं, दिल में गङ्गा यमुना की पवित्र तरंगे उछलने लगीं, कानों में जैसे किसी ने अमृत उडेल दिया। मन में अमर होने की इच्छा उत्पन्न हो गयी। जी में आया, पपीहा बन कर उड़ जाऊँ और नीले आकाश के एक छोर से दूसरे छोर तक प्रेम संगीत

का मधुर राग आलापूं।

उस समय सारी मलिनता धुल गई, अपवित्रता नष्ट हो गई। उस रत्न को पाकर मैं सब कुछ पा गया, मनुष्य जीवन धन्य हो गया किन्तु मैं भी कैसा रमता योगी और बहता पानी हूं— क्या कहने जा रहा था, क्या कहने लगा।

यह प्रेम का तपोवन है। यहां किसी को मुस्कुराते देख कर आसमान में बरसात की घटायें घिर आती हैं। बहारों के खजाने बँटने लगते हैं। मय की प्यालिया नई दुलहिन की तरह दिल में तासीरे इश्क पैदा करती हैं।

(आज साकी बादये खुश रङ्ग दे जी खोल कर,
कल खुदा जाने कहां जाये घटा बरसात की।)

यहां हमारे पैमाने में माशूक की अगड़ाइयों का अक्स है। एक एक पैमाने में एक-एक तूफान बन्द है। यहां मौत भी मस्ती से जिन्दगी के मजे ले रही है। लोग जमीन पर आसमान बन कर चलते हैं।

(नजर आता है आलम हुस्न का एक-एक जर्रे में,
खुदा ने बिजलियां मिट्टी में भर दी हैं कयामत की।)

मगर मैं भी कैसा भुलकड़ हूं, क्या कहने जा रहा था, क्या कहने लगा।

हां, यह प्रेमका तपोवन है!

आओ, हम हुस्न के बाजार में घूमें। यहा असंख्य सुन्दर चीजें हैं। हम ढेर का ढेर हुस्न खरीदेंगे, खोई जवानी का सौदा करेंगे।

सब इस बाजार में बिक रहे हैं।—बिना मूल्य। यहा आकाश का चन्द्रमा खरीद लो, प्रभात की सुनहरी किरणें मोल ले लो, तारों को झोली मे भर लो और निगाह के तीरों से मुहब्बत के दीवानों को घायल कर डालो।

यहां जिस रूप को हम प्यार करते हैं, वह रूप इस ससार का नहीं, जहां शोक की काली घटायें घिरती है; चिन्ता की चितायें जलती हैं। जहां अभिमान, स्वार्थ, छल, कपट का दौर दौरा है। जहां मनुष्य को मनुष्य खा रहे हैं, जहां अपवित्रता है, पाप है—यह रूप उस संसार का नहीं। यह रूप किसी दूसरे लोक से किसी खास चीज की खोज में रास्ता भूल कर हमारे सामने चमक उठा है। इसलिये कहता हू—प्रेम! तुम धन्य हो।

रूखा सरवर त्याग कर, हम कहीं न जाय।
पहली प्रीति बिसारि के, पत्थर चुन चुन खाय॥

प्रिय मित्र, जब मेरी मृत्यु हो जाय—तुम मुझे प्रेम के तपोवन की धूल का एक कण बना कर इसे रास्ते में फेंक देना; जहा तुम्हारे चरण चलते हों। मैं तुम्हारी प्रभुता में अपने को खो दूंगा।

मेरे जीवन का एक मात्र आधार है—प्रेम।

खतरनाक दुश्मन

मनुष्य जीवन देवताओं की कतार में बैठने लायक होता, यदि उस में कुछ खतरनाक दुश्मन न बैठे होते।

यह कौन हैं ? मैं कहूंगा—ईर्ष्या, क्रोध, घृणा, घमण्ड, सन्देह और निराशा।

इनके अलग अलग रूप देखो और सावधान रहो।

ईर्ष्या :—

ईर्ष्या की लाल लपटें अधिक उग्र और क्रान्तिकारिणी होती है दूसरों को नीचा दिखाने, दूसरो की उन्नति से कुढ़ते रहने की आदत से मनुष्य अपने जीवन को आप जलाता है। क्या इसकी जरूरत है ?

राजा भोज के यहा कुछ लोग एक जर्जर रोगी को पकड़ कर लाये। राजा ने उससे पूछा—"तुम्हारी यह दशा क्यों है ?" रोगी ने कहा—"बचपन में हम तुम एक साथ पढ़ते थे। तुम्हारी योग्यता और बुद्धिमानी से मैं ईर्ष्या करता था। यह ईर्ष्या मुझ में उस समय और भी बढ़ गयी, जब तुम राज सिंहासन पर बैठ गये। आज जब मैं तुम्हारा वैभव देखता हूं, बदन में आग लग जाती है।'

राजा भोज ने उसे रहने के लिये बढ़िया मकान और सेवा के कई सेवक दिये। वह हाथी घोड़े पर चलने लगा और एक परमा सुन्दरी से उसकी शादी भी हो गई। कुछ दिनों बाद राजा ने उसे बुलाकर देखा, तो वह पहले ही की तरह जर्जर और रोगी था। कारण पूछने पर उसने कहा—"मेरे पास सब सुख-सामग्री है, सिर्फ अधिकारों से वंचित हूं।"

राजा ने उसे ऊंचे पद पर नियुक्त कर उसकी यह इच्छा भी पूरी कर दी। पर इससे भी उसकी दशा न बदली। उसने कहा—"मेरी हालत उस समय पलटेगी, जब मैं उज्जैन के राज-सिंहासन पर बैठूंगा।"

राजा ने समझ लिया, ईर्ष्या के कारण इसका जीवित रहना कठिन है। रक्षा का कोई उपाय नहीं। अन्त में हुआ भी वही-वह मनुष्य ईर्ष्या के कारण कुढ़-कुढ़ कर मर गया!

संसार में इस तरह कुढ़-कुढ़ कर मरने वालों की संख्या कम नहीं है। देहातों में ईर्ष्या-द्वेष का बोलबाला है। शहरों में, आफिसों में, कल कारखानों में, ईर्ष्या की खचाखच छुरियां चल रही हैं। मनुष्य मनुष्य को खाये जा रहे हैं। किसीने दो पैसे कमा लिये—पड़ोसी जलता तवा बन गया। किसीने नौकरी में तरक्की कर ली—दूसरों का खाना-पीना हराम हो गया। कोई ऊंचे चढ़ गया, तो लोग द्वेष की लाठियां लेकर दौड़े—इसकी जिन्दगी खाक कर दो।

कैसी भयानक मूर्खतायें है। क्या तुम ऐसा जीवन पसन्द करते हो? याद रखो, ईर्ष्या से हम अपनी क्षुद्रता का परिचय देते हैं, किन्तु अपनी इष्टसिद्धि नहीं कर पाते। कभी कभी जिससे हम ईर्ष्या करते हैं—उल्टे उसीको हमारी ईर्ष्यासे लाभ हो जाता है।

हां, ईर्ष्या न होते हुये भी कभी-कभी हमें दूसरों की ईर्ष्या का शिकार बन जाना पड़ता है। किन्तु यदि हम जीवन के असली सुखको समझ लें, तब कोई ईर्ष्या हमारा पीछा नहीं कर सकती। नूरजहाँ ने ऐसे ही ईर्ष्या पूर्ण वायुमण्डल से ऊब कर अपने प्रथम प्रियतम शेरखाँ से कहा था—"चलो नाथ! हम इस हिंसापूर्ण संसार को छोड़ कर भाग चलें, बहुत दूर के किसी जंगली गाँव में जाकर किसानों की तरह जीवन व्यतीत करें, जहाँ सम्राट् जहाँगीर का डाह इतने नीचे उतर कर हम लोगों का पीछा न कर सकेगा।"

ईर्ष्या वह काली नागिन है, जो समस्त पृथ्वी मंडलमें जहरीली फुफकारें छोड़ रही है। यदि तुम गौर कर देखो, तो मालूम होगा, यह गलतफहमियों की एक गर्म हवा है, जो शरीर के अंदर 'लू' की तरह चलती है और मानसिक शक्तियों को झुलसा कर राख बनाती है।

इस 'लू' ने लाख के घर खाक में मिला दिये। तुम दूसरों की बढ़ती देख कर कभी न जलो। जो लोग ईर्ष्या की चपेट में पड़

जाते हैं, यह अपने घर में अपने ही चिराग से आग लगाते हैं। वुद शीशे की झोपड़ी में बैठ कर दूसरों के महल पर पत्थर फेंकते हैं।

तुम इनकी परवाह मत करो, दूसरे तुम्हें देखकर जलते हैं। तुम स्वयं सोचो, तुम क्या हो? जब तक तुम आत्मविश्वासी न बनोगे, दुनिया में कुछ न कर सकोगे।

क्रोध :—

क्रोध भी क्या अजीब 'शै' है। यह मनुष्य शक्ति को पशुता के हाथों में दे देता है उस समय मनुष्य बाघ से ज्यादा भयानक और सांप से ज्यादा जहरीला हो जाता है। गीता में भगवान श्री कृष्ण कहते हैं:—

"क्रोध से अविचार होता है। अविचार से भ्रम, भ्रम से बुद्धि नाश और बुद्धि नाश से सर्वनाश होता है।"

क्रोध याने गुस्सा वह शैतान है, जो मनुष्य-शरीर के कोने कोने में ताण्डव नृत्य करता है। उसकी सुर्ख आँखें मौके को ताड़ती हैं। जहां दिमाग का पारा गर्म हुआ, यह सर पर भूत की तरह चढ़ बैठा। अब तुम कांपते हो, मित्रों का अपमान करते हो, मनुष्यों का गला दबाते और न जाने क्या-क्या अनर्थ कर बैठते हो। किसी ने गलती की—तुम आंखें लाल-पीली करने लगे। आनन्द रूपी कपूर के टुकड़े-टुकड़े कर उसे ऊसर में बो दिया,

देवतुल्य जीवन नष्ट हो गया। मनमें अप्रसन्नताओं का विष भर गया—सारी आकर्षण-शक्ति समाप्त हो गई।

क्रोध वास्तव में हृदय-सागर का तूफान है। यदि तुम इस पर विजय प्राप्त करना चाहते हो, तो आत्मबल के साथ जीवन की किश्ती पर खड़े रहो। क्रोध के असंख्य झोंके आयेंगे और टकरा कर हवा में विलीन हो जायेंगे। किन्तु जहां तुम इस की चपेट में पड़े—तुम्हारा संसार मुसीबतों में पलट जायगा और तुम स्वयं पैनी कुल्हाड़ियों से अपने पैर काटने की कोशिश करोगे।

क्रोध एक भूल है। यदि मनुष्य सीखना चाहे, तो उसे क्रोध की प्रत्येक भूल कुछ न कुछ सिखला देती है। ठोकरें मारने से जमीन से सिर्फ धूल उड़ती है—खेती नहीं उगती।

मैं पूछता हूं, तुम बुद्धिमान होकर क्रोध की तरंगों में क्यों बहते हो? किस लिये मुसीबतों से नाता जोड़ते हो? तुम्हें क्रुद्ध देखकर जीवन के सारे आनन्द, यौवन की समस्त विद्या, सरलताओं की तमाम ऋद्धि-सिद्धियां उलटे पैरों लौट जाती है। उनके मन में क्रोधी मनुष्य की कोई कीमत नहीं, वे शांत मनुष्यों को प्यार करती हैं।

यदि तुम्हारी जिन्दगी में आनन्दों की शीतल बयार नहीं बहती, तो मैं कहूंगा—तुम मूर्ख हो। तुम्हारी जिन्दगी में कोई चमत्कार नहीं पैदा हो सकता।

घृणा :—

मैं ब्राह्मण हूं, अछूतों से घृणा करता हूं। मैं बंगाली हूं, मारवाड़ियों से नफरत करता हूं। मैं तीसमार खां हूं, हिन्दुओं की दूकान से सौदा नहीं खरीदता। मैं गो-भक्त हूं, मुसलमानों को देखकर घृणा से मुह फेर लेता हूं और खिलखिलाकर हँस पड़ता हूं।

यह कैसी बेवकूफी है, कैसे गन्दे खयालात हैं। घृणा मनहूस बर्बरता है। जानवरों में यह वृत्ति नहीं पाई जाती। मगर मनुष्यों को देखो—वह जानवरों से ज्यादा बुद्धिमान, चिड़ियों से ज्यादा उड़नेवाले, संगीत से ज्यादा मीठे और वेदों से ज्यादा विद्वान हैं। उनके मन की थाह लो—घृणा के सैकड़ों घोंघे तुम्हारे हाथ लगेंगे।

यदि तुम दिमाग में घृणा की गन्दगी भरे रहोगे, तो शरीर की मैशीनरियों के पुर्जे टूट जायंगे। चुम्बक शक्ति नष्ट हो जायगी। सर पर जीवन का बोझ लादे दर-बदर की ठोंकरे खाते फिरोगे। उस समय तुम से किसी की सहानुभूति न होगी। कोई तुम्हारा साथ न देगा।

घृणा बर्बरता है। यह उन्हीं मनुष्यों के दिल में टिक सकती , जो शरीर के दुर्बल, आलसी और गँवार हैं।

मैं कहता हूं, तुम पापियों से नहीं, उनके पाप से घृणा करो। क्योंकि पापी इन्सान हैं—पाप शैतान !

घमंड :—

मैं एक ऐसे आदमी को जानता हूं, जिसका वृद्ध पिता कई लाख रुपये के कर्ज भार से दब कर दर-बदर की ठोकरें खा रहा है। उसके नालायक लड़के ने बहुत सी दौलत रन्डीबाजी में फूंक दी। सैकड़ों मन शराब गले के नीचे उतार गया। इसकी आंखें सुर्ख हैं और चेहरा गोल। इसे मैंने मनुष्यों पर अत्याचार करते देखा है। यह घमण्डी और शरारती है।

मैं ही क्या ? तुम, तुम्हारे सैकड़ों दोस्तों ने, समस्त पृथ्वी मंडल के भाइयों ने ऐसे बहुत से घमण्डी मनुष्य देखे होंगे—बल्कि बहुत सी बातों में इससे भी ज्यादा बढ़ चढ़ कर।

घमण्ड के नशे में चूर हो कर आज हम किसी भाई को पैरों से कुचल डालते हैं। किन्तु कौन जाने ? कल ऐसा दिन आय, जब हम पर एक कमजोर गधा भी दुलत्तियां झाड़ने लगे और हमें उसके मुकाबले में खड़ रहना मुश्किल हो जाय। अहंकार क्यों ? अहंकार ने महा दार्शनिक रावण को मिट्टी में मिला दिया। शक्तिशाली कंस की खोपड़ी चूर-चूर कर दी। अभिमानी दुर्योधन इसी प्रवाह में पड़कर अन्तर्ध्यान हो गया।

मनुष्य के लिये विद्या का अहंकार, प्रभुता का अहंकार, धन का अहंकार, ज्ञान प्रतिभा का अहंकार—सब व्यर्थ है। दुनिया में भाग्य को नष्ट करने वाले दो बड़े कारण है—घृणा और घमण्ड

परमात्मा बड़े-बड़े घमण्डी• साम्राज्यों से मुख फेर लेता है, किन्तु सरलता और सादगी से भरे हुये छोटे-छोटे फूलों से कभी खिन्न नहीं होता।

तुम धनी हो, ठीक है। ऊंचे महलों में ऐयाशी करो, मगर गरीबों की झोपडियों मे आग न लगाओ। तुम्हारे पास मोटरें हैं; हवाखोरी करो—मगर पैदल चलने वालों पर पैट्रोल का धुआँ न छोड़ो। तुम गरीब हो, चुपचाप अपना काम करो—मगर अमीरों के वैभव पर विद्रोह की आहें न छोड़ो। तुम रास्ते की फुटपाथों पर आराम से मीठी नींद सोते हो—वह मखमली बिछौने पर भी करवटें बदलते रहते हैं। सोचो, समझो। मनुष्यता में कैसा घमण्ड, कैसा घृणा ?

मनुष्य जीवन एक पहेली है—एक नाटक। उस में सभी तरह की हलचलें होती हैं। उन हलचलों की शक्ल क्या है ? इस पर गम्भीरतापूर्वक विचार करो। फरिश्ता होना आसान है, इन्सान होना मुश्किल। आदमी वही है, जो घमण्ड से कोसों दूर है। मनुष्य वही है, जिसमें मनुष्यता है।

सन्देह :—

मनुष्य जीवन मधुर संगीत है। जिसका राग है प्रेम ! यह प्रेम देह और मनको आनन्द तृप्ति प्रदान करता है यदि इस प्रेम में राहु जैसी कोई चीज है तो वह है सन्देह, सन्देह से माधुर्य सूख कर अग्नि का गर्म कुण्ड बन जाता है।

मुझसे एक नवयुवती ने पूछा—"स्वामी के प्रति मेरे आनंद का नशा इतना शीघ्र क्यों उतर गया ? हम लोग कलह, विरोध और गन्दी गालियों के फेर में क्यों फँस गये ? मन में जरा भी शान्ति और सुख नहीं। स्वास्थ्य दुर्बल हो गया है। और मुझे ऐसा जान पड़ता है, मानो मेरी समस्त दुनिया दुःख और निराशा से भर गई है।

मैंने पूछा—"क्या तुम्हें अपने स्वामी के प्रति सन्देह है ?"

उसने कहा—"जी हां, वह अक्सर रात को गायब रहते हैं मुझे शक है, वह किसी दूसरी स्त्री से प्रेम करने लगे हैं।"

मैंने कहा—"तुम इस सन्देह को प्रेम रूपी मोहन मन्त्र से जीतो। तुम जितना ही उन्हें प्यार करोगी, उतना ही तुम्हें फायदा होगा। यदि तुम्हारे स्वामी सैकड़ों स्त्रियों से भी प्रेम करने लगें, तो भी तुम्हारे प्रेम को पराजित न कर सकेंगे। अपने को पहचानो।"

उस नवयुवती ने सच्चे दिल से स्वामी पर अपने प्रेम का प्रदर्शन शुरू किया। मैंने देखा दो महीने के अन्दर उसका चेहरा फूल की तरह खिल उठा है और उसकी निराश दुनिया में प्रेम के सुनहरे दीपक जगमगा उठे हैं।

यह है प्रेम का तत्व ! यदि प्रेम को अच्छी तरह न समझ सकोगे, तो सन्देह के कांटे तुम्हारे शरीर को चलनी बना डालेंगे।

सन्देह की भावनायें मनुष्य में उस समय जागती हैं, जब

प्रेम के प्रति नीचताओं के बीज उगने हैं। हम यह देख कर जल उठते हैं हमारा प्रेम हमें ठुकरा कर दूसरे की प्रसंशा कर रहा है, हम उनकी नजरों में छोटे हैं। यह मूर्खता भरी चिन्तायें हमारे मन में सन्देह उत्पन्न करती हैं और हम हिंसा के मैदान में उतर कर संहार लीला आरम्भ देते हैं। इस तरह हम जीवन को कमजोर ही नहीं बनाते, बल्कि जिसे प्यार करते हैं, जिस पर जान देने को तैयार हैं, उसे अनंत यन्त्रणाओं से जर्जरित कर डालते हैं।

सन्देह कैसा खतरनाक जहर है? हम जिस पर सन्देह करते हैं, उसकी हर बात में, प्रत्येक कार्य में, त्रुटियाँ दिखाई देती हैं। उस समय उस मनुष्य के प्रति हमें ऐसा जान पड़ता है, जैसे यह आदमी हमें प्रत्येक बातमें धोखा दे रहा है, झूठ बोल रहा हैं और हमारे विरुद्ध षड़यन्त्र कर रहा है। हम उसकी प्रत्येक नजर को, उसके प्रत्येक आचरण को अविश्वास की दृष्टि से देखते हैं। यह क्या कम ज्वाला है?

मानलो, पत्नी के प्रति सन्देह उत्पन्न हो गया, तो पत्नी चाहे जैसा सुन्दर शृङ्गार करे, चाहे जैसे कीमती गहने-कपड़े पहने, हमारे मन में फौरन इस बात की ज्वाला जाग उठेगी कि उसका यह शृङ्गार हमारे प्रेम-प्रदर्शन के लिये नहीं, पर-पुरुष को रिझाने का आडम्बर है। उस समय उसकी मुस्कुराहट जहर मालूम होती है, हम उसकी प्रसन्नताओं से जल-भुनकर खाक हो जाते हैं।

सन्देह के इस भयानक जहर से कितनी ही स्त्रियों के पतियों ने उन्हें व्यभिचारी करार देकर उनका खून कर डाला। सन्देह के इस भीषण पापने कितने ही मित्रों को एक दूसरे से अलग कर दिया। सन्देह की इस धधकती ज्वाला ने कितने ही निरपराध मनुष्यों को फासी के तख्ते पर लटका दिया।

अगर तुम बेतहासा दौड़े जा रहे हो, तो कभी-कभी रास्ते की एक छोटी-सी कंकड़ी पैरों में लग कर तुम्हें धराशायी बना सकती है; किन्तु कभी-कभी तुम बड़े-बड़े खम्भों को भी एक छलाग में पार कर जाते हो। तुम्हें पता नहीं रहता कि कहां टीले मिले, कहा पानी। ऐसा क्यों होता है?

तुम दोनों हालतों में दौड़ते हो, दोनों हालतों में तेज दौड़ना चाहते हो, अपनी मंजिल जल्दी से जल्दी तय करना चाहते हो, लेकिन तुम्हारे दिल और दिमाग की हालत दोनों हालतों में एक नहीं रहती। पहली हालत में दिल में सन्देह रहता है। यह डर, यह शक ही तुम्हें जमीन पर पटक देती है, यह शुबहा तुम्हारे पैर तोड़ देती है। शक का आदमी कभी मुश्किलों और मुसीबतों का सामना नहीं कर सकता। एक रोड़ा उसकी सारी मजबूती को खत्म कर डालता है।

अपनी आंखों में प्रेम, शान्ति, सौंदर्य और गम्भीरता का भण्डार खोल दो। हमेशा मगन रहो। जहां तुम्हारे मन में सन्देह का पौधा उगने लगे,—तुम उसे तोड़ कर फेंक दो, पूर्ण

शक्तियों से मन के साथ युद्ध करो। अपने को कभी कमजोर या तुच्छ न समझो। यदि सन्देह की तुच्छता दूर नहीं कर सकते, तो मनुष्यों का साथ छोड़ कर सर्वस्व त्याग दो और किसी एकांत जंगल में बैठ कर धूनी रमाओ।

निराशा :—

एक कलाकार का नौजवान लड़का जहर खाकर मर गया—वह परीक्षा में फेल हो गया था!

आये दिन अखबारों में रोज ही ऐसी शोचनीय खबरें पढ़ी जाती हैं। एक आदमी ने बेकारी से तङ्ग आकर आत्महत्या कर ली। दूसरा गङ्गा में डूब गया—तीसरे ने गले में फांसी लगा ली। क्यों? उसकी क्या वजह है?

निराशा इन कीमती मनुष्यों का जीवन रस पी गई थी।

हमारे हजारों भाई जिनकी जिन्दगी की प्याली उदासी और तकलीफों के खून से भर गयी थी, हमारे वे हजारों दोस्त, जो निराशा के भैरवी चक्र में चकनाचूर हो गये थे। हमेशा के लिये जीवित हो जाते, यदि वे मनुष्य जीवन को कीमती समझते, अपने को पहचानते और आशा की रोशनी में संसार के रहस्यों को समझने की कोशिश करते।

निराशा से जिन्दगी अन्धेरी, भारी और दबी मालूम होती है। यदि तुम इस पैशाचिक वृत्ति को अध्ययन करो, तो मालूम

होगा, निराशा आलस्य की सनसनाहट के सिवा कुछ नहीं है। इसके प्रचण्ड प्रवाह में पड कर बडे बड़े बहादुर पतन के गर्त मे डूब गये। यह मनुष्य के फेफड़ों को जोरों से दबोच कर झकझोरती है और वे घबराहट तथा बेचैनी से भयानक पाप कर बैठते हैं। तुम इस पापिनी को कभी दिल में जगह न दो। फूलों पर नाचते भँवरो की तरफ देखो। दीपशिखा पर चक्कर काटते परवानों को सोचो। यह सब एक ही मन्त्र का जाप करते हैं—आशा। प्यारी आशा।

आशा मनुष्य जीवन की वह पतवार है, जो निराशा के तूफान में फंसी जीवन नइया को किनारे खे ले जाती है। आशा का दूसरा नाम जिन्दगी है और जिन्दगी का दूसरा नाम आशा है।

अपने निराश जीवन उद्यान में इन्हीं भावों के फूल खिलने दो। सासारिक सुखों और मनुष्यों से दिलचस्पी बढ़ाओ। निराशा की डालिया पतझड की तरह टूट कर पृथ्वी के अनन्त गर्भ में गायब हो जायँगी।

सफलता का रहस्य:—

यदि तुम ऊपर लिखे खतरनाक दुश्मनों की लडाई में फतह पा जाते हो, तो तुम्हारी जय जयकार है। यदि हारते हो, तो दुनिया में तुम्हारे लिये कोई जगह नहीं। इनकी संगत से, इन

के फायदे से, तुम बालू की दीवाल उठा रहे हो। यह दीवाल एक दिन तुम्हारे ही ऊपर भहरा कर गिर पड़ेगी। उस समय तुम्हें संसार के छोटे-बड़े राहगीर धूल समझ कर अपने पैरों से कुचलते रौंदते, मुस्कुराते आगे बढ़ते जायेंगे। उस समय उनके दिल में तुम्हारे आसुओं की कोई कीमत न होगी।

—०—

बोलने का तरीका

एक सौंदर्य प्रेमी ने अपने रंगीले दोस्त से पूछा—"उसकी आंखें बहुत सुन्दर हैं। तुम्हारे ऊपर उसका कैसा प्रभाव पडा?"

दोस्त ने कहा—"आखों से अधिक उसका मुह चलता है; इसलिये मुझ पर उसके बोलने का अधिक असर पडा।"

सचमुच वाक्य शक्ति आकर्षक कला है। यह एक दूसरे मनुष्य के विचारों और सिद्धान्तों का आदान प्रदान है। तुम्हारे चेहरे में चाहे कितना ही सौंदर्य और जादू क्यों न हो, किन्तु बोली में जो जादू है—उसे रूप का जादू नहीं पा सकता। कोयल का रूप भद्दा है मगर हर आदमी उसकी बोली का आशिक है। गधे का रेंकना या ऊंट का बलबलाना कोई नहीं पसन्द करता। परन्तु तोता मैना को सभी प्यार करते है। क्यों और किसलिये? उनकी बोली मे आकर्षण है।

रूप का जादू प्राकृति देती है, किन्तु बोली का जादू मनुष्य के हाथ में है। बोलते समय ऐसा मालुम होना चाहिये, मानों फूल झड रहे हैं। एक शायर फरमाते हैं:—

"इंशा को चाहिये कि न बोले किसी से सख्त।
इस वास्ते जुबां मे कोई हड्डियां नहीं॥

मीठी बोली में जिन्दा करने की ताकत है। बचपन में माता ने अपने दूध से तुम्हारी जबान धोई—मीठी बातें करने के लिये मीठी बोली दिमाग में प्रतिभा का चमत्कार फैलाती है, मन को ऊँचा उठाती है—

"जीभ जोग अरु भोग, जीभि बहु रोग बढ़ावै,
जीभि करै, उद्योग, जीभि लै कैद करावै।
जीभि स्वर्ग लै जाय, जीभि सब नर्क दिखावै,
जीभि मिलावै राम, जीभि सब देह धरावै॥
निज जीभि ओठ एकत्र करि, बांट सहारे तौलिये।
बैताल कहैं विक्रम सुनो, जीभि संभारे बोलिये॥"

दुनिया का हर आदमी मीठी कड़वी जबान का स्वाद जानता है। जबान सब कुछ कर सकती है। वह मनुष्य के व्यक्तित्व की सबसे बड़ी संचालन शक्ति है।

संसार में आज करोड़ों व्यक्ति ऐसे हैं, जिन्हें बोलने का तरीका नहीं मालूम। उन्हें इस बात का पता तक नहीं कि अपने में आकर्षण बढ़ाने के लिये हम किस तरह की जबान बोलें। वह बोलते इस तरह हैं, जैसे लाठी मार रहे हों। वे अपनी बोली में साप और बिच्छू जैसे जहरीले जानवरों की सृष्टि करते हैं, ऐसे विषधर आदमी अपने पैरों में आप कुल्हाड़ी मारते हैं और जीवन को सर्वनाश की भट्ठी मे झोंकते हैं:—

भले बुरे सब एकसों जौ लौं बोलत नाहिं।
जानि परत हैं काक पिक ऋतु बसंत के माहिं॥

चाहे अमीर हो या गरीब, आफिसर हो या रास्ते का कुली—कड़वी जबान किसी से न बोलो। वाक्य शक्ति में दिलचस्पी, हास्य विनोद और माधुर्य की पुट हो। लोगोंकी बातें ध्यान से सुनो और उनका मीठे शब्दों में माकूल उत्तर दो। किसी ने कहा है:—

"बशीकरन इक मन्त्र है,
परिहरु वचन कठोर।"

मीठी बोली जादू है, जिससे मनुष्य मात्र तुम्हारे भक्त बन जाते हैं। यदि जबान गंदी है, उससे गालियों के कोड़े बरसते हैं तो पतन है। कड़वी और मीठी जबान मनुष्यों के दिल पर कहां तक असर करती है, इसका एक उदाहरण लो—

एक कारखाने की बात है। इसमें लगभग पांच सौ कर्मचारी काम करते थे, जिसमें अमीर-गरीब छोटे-बड़े, सभी टाईप के आदमी थे। यह कारखाना बड़े उत्साह के साथ चल रहा था। न किसी में राग द्वेष था, न पार्टी बन्दी। इसका सबसे बड़ा कारण यह था कि कम्पनी के संचालक बहुत ऊंची तबीयत के आदमी थे। वह सब के साथ आदर और प्रेम का व्यवहार रखते। मगर दुर्भाग्य की बात देखो, संचालक महोदय को एकाएक जरूरी काम से योरोप चला जाना पड़ा। उनके स्थान पर उन्हीं का एक रिश्तेदार आया। यह मनुष्य जबान का इतना गन्दा था कि प्रत्येक मनुष्य को कुत्ता समझता। शायद उसके

इस बात की सनसनी थी, कि नौकरी पेशेवाले कुत्ते होते हैं। वह प्रत्येक आदमी को भद्दी गालियां देता और उनका अपमान करता। वह अक्सर पुस्तकें पढ़ता—मगर उसे इस बात की तमीज न थी कि मनुष्य ईश्वर का अंश है। मनुष्य का अपमान ईश्वर का अपमान है। किन्तु यह हो कैसे? कारखाने की ऊँची कुर्सी पर बैठकर वह अपने को ईश्वर से भी बड़ा समझने लगा।

उसके खिलाफ कर्मचारियों के अन्दर ही अन्दर विद्रोह की आग भड़कने लगी। एक छोटे क्लास का आदमी कमर में छुरा छिपा कर घूमने लगा। वह कहता—"मैं इस गधे का खून करूँगा और फांसी पर चढ़ जाऊँगा।" इस तरह के गन्दे वायु मंडल से वह कारखाना नर्क में बदल गया। खैर, परिस्थिति की भीषणता देखकर संचालक महोदय योरोप से आये, उन्होंने अपनी कुर्सी संभाली! दो ही दिन में रंग बदल गया। जली हुई खेतियां लहलहा उठीं। कारखाना शान से चलने लगा और उनका रिश्तेदार अपना-सा मुंह लेकर भाग गया!

यह है बोलने का तरीका। जो मनुष्य दूसरों के प्रति सहृदय होता है; वह बिना सत्ता के ही शासक बन जाता है। उसके हुक्म प्रेम के सन्देश होते हैं—जिन्हें दूसरे लोग हमेशा सुनने के लिये उत्सुक रहते हैं। पर जहां अपने प्रति घमण्ड और विशेषाधिकार का भाव है और दूसरे मनुष्य के प्रति कठोरता का—वहीं सत्ता का शासन बेकार हो जाता है और उसका पुरस्कार मिलता है—अप्रतिष्ठा तथा पतन।

सदा दूसरों के दोष देखना, सदा दूसरों पर अविश्वास करना अपने ही हृदय की मलीनता का लक्षण है।

यदि तुम वाक्य शक्ति को प्रभावशाली, आकर्षक और मधुर बनाने के इच्छुक हो, तो संगीत का अभ्यास करो। कोमल कवितायें और उत्तमोत्तम नाटक पढो। तुम्हारी जबान साफ दिल को गुदगुदाने वाली तथा कर्णप्रिय बन जायगी। गुनगुना कर न बोलो। कानाफूसी फुसफुसाहट और रुक रुक कर बोलने की आदत बुरी है। यदि मीठी जबान में ज्यादा आकर्षण उत्पन्न करना हो तो मुस्कुराने और दिल खोल कर हँसने का अभ्यास करो।

मुस्कुराहट मनुष्य के दिल पर गहरा असर डालती है। बोलते समय जरा मुस्कुरा दो। यह रूप सरोवर की उठती हुई लहर है, जो स्वाभाविक मनुष्य को अपनी ओर खींच लेती है। उसे देख कर मनुष्य मन्त्र मुग्ध रह जाता है।

बहुत से लोग हँसते है, मगर उन्हें हँसना नहीं आता वास्तव मे यदि हसने की कला मे उस्ताद हो, तो मीठी हँसी मे कुछ अनोखा जादू है। मनुष्य को छोड कर ससार का कोई प्राणी नहीं हँसता। हँसी वह हथियार है, जो बडे-बडे मिजाजियों के मिजाज चुटकियों मे ठिकाने लगा देती है। बहुत से लोग मनहूस और मुहर्रमी सूरत के होते हैं। इन्हें गौर से देखो। इन लोगों ने मुह सिकोड सिकोड कर अपनी बुद्धि भी

मिकोड ली है। फिर बेचारे किस मुह से प्रभावशाली हास्य का दम भरें ?

हास्य बुद्धिमान, ज्ञानी और साफ दिलों के लिये है। जिस तरह अमृत देवताओं की चीज है, उसी तरह हास्य मनुष्य की सम्पत्ति है। जानवर और पशु पक्षी इस अनोखे उपहार से वंचित हैं। इससे बडे बडे काम निकलते हैं। हास्य मे कभी कभी मीठी चुटकिया लेना आवश्यक है। तुम बीरबल का सा मजा दिमाग और बिजली की तरह तडपाने वाली बुद्धि उत्पन्न करो।

अगर हंसना नहीं आता, तुम मुहर्रमी सूरत के आदमी हो, तो हास्य रस के नाटक तमाशे और फिल्मे देखो। हँसाने वाली पुस्तकें पढो। तुम्हारा मिजाज विनोद पूर्ण हो जायगा। जितना ज्यादा दिल खोल कर हंसोगे, उतना ही स्वास्थ्य सुन्दर होगा। आवाज मीठी होगी। हंसने से मनुष्य को तुम्हारे दिल की सफाई और शुद्धता का परिचय मिलेगा। वह सहज मे ही तुम्हारे वश मे हो जायँगे—

"ऐसी वानी बोलिये मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करै आपो शीतल होय॥

जबान मे आकर्षण का उत्पन्न होना विचार शक्तियों पर निर्भर है। जैसा तुम्हारा मन होगा, जबान की भाषा भी वैसी ही होगी। इसलिये मन को हमेशा ऊँचा बनाओ। किसी

को नीचे गिराकर अपने को बडा करना ढँकी हुई गन्दगी है। किसी के छिद्रों को खोजकर उसके दुर्भाग्य और गलतियों की हँसी उडाना पाप है। दूसरों के व्यवहार और गुणो की प्रशसात्मक चर्चा करना तुम्हारा कर्तव्य होना चाहिये।

कभी इस तरह न बोलो, जिससे दूसरे तुम्हें अहंकारी कहें। हलकी और तुच्छ बातों की चकल्लस मे पडना समय जिन्हों को नष्ट करना है। जिस समय तुम्हारा किसी नये आदमीसे परिचय हो, उस समय कोई चमत्कार पूर्ण बात कहो, ताकि उस पर तुम्हारा पूर्ण प्रभाव पड सके।

यदि प्रेम, विनोद और मधुर व्यवहार से भी कोई तुम्हारे प्रति आकर्षित नहीं होता तो अपनी त्रुटियां ढूढो, मगर उसके प्रति कठोर वचन न बोलो। कठोर वचन की अपेक्षा आत्मशुद्धि मे ज्यादा समय सर्फ करो।

यह वैज्ञानिक प्रयोग है, जो मनुष्य को बहुत ऊँचा उठाते हैं। जब इन बातों के विद्वान बन जाओ, तब नित्य नये दोस्त पैदा करने की तरकीबें सोचो। अपनी महान् आत्मा को अपने साढे तीन हाथ के अन्दर से निकाल लो और उसे मनुष्यों की आत्मा मे प्रवेश करने दो। वह उसमे देवत्व का तहखाना ढूढेगी।

देश विदेश की भाषायें सीखो, उनका साहित्य पढो और उसे उन मनुष्यों में बोलो, जो उस भाषा के प्रेमी हैं। यह ऊंचे

मन का वैज्ञानिक प्रतिबिम्ब है। अगर तुम बोलने मे बुराइयों की तरफ ध्यान दोगे, तो तुम्हारे मित्रों के मन मे फौरन यह बात जम जायगी कि यह मनुष्य कुछ नहीं है।

अपने मित्रो को अपनी तारीफ का सुअवसर दो। उस तारीफ का—जिसमे गुण की प्रशसा है, प्रेम और सत्कार है। यह मनुष्य जीवन की सफलता की सुनहरी कुजिया है। इन कुजियो से मन के उन मोरचा लगे हुए तालो को खोल डालो, जहा आश्चर्यजनक शक्तिया दबी पडी हैं और तुम्हें अपने चमत्कार दिखाने के लिये छटपटा रही है।

यदि बातों में कभी वाद विवाद का मौका आ जाय तो अपनी जिद पर न डटे रहो। विरोधी पक्ष के 'प्वाइन्ट' की तारीफ करते हुये उसके आत्म गौरव की रक्षा करो। अक्सर लोग तर्क या विवाद से झगडा कर बैठते हैं, एक दूसरे के दुश्मन बन जाते हैं।

तुम चाहे अन्धे बहरे हो जाओ, स्वास्थ्य खो दो। मगर सत्य न भूलो। सत्य का तेज हजारों सूर्य के तेज से अधिक है। उसकी कीमत सैकडों यज्ञ की कीमत से ज्यादा है। जब तुम्हारा हृदय सत्य के तेज को देख लेगा तो यह उसे कभी न भूलेगा। सत्य अपने विरुद्ध एक आंधी पैदा कर देता है और यही आंधी उसके बीजों को दूर-दूर तक फैला देती है।

अपने निन्दकों को भी प्यार करो। निन्दकों के उपकार

होता है—क्योंकि उनमें दोष दृष्टि होती है और वे तुम्हारे अवगुण को प्रकाशित करके सुधार का अवसर देते हैं—

निन्दक नियरे राखिये, आँगन कुटी छवाय।
बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करै सुभाय ॥

किसी की खुशामद न करो। खुशामदी ऐसा जानवर है, जो मुस्कराता हुआ काटता है। उसे भारी दगाबाज जानो। क्योंकि वह तुम्हारी बुराई करने में दूसरों को सहारा देगा और तुम्हारे दोष तुम्हें बताने के बदले तुम्हारी मूर्खता पर ऐसा लुक फेर देगा कि तुम भले बुरे का विवेक कदापि न कर सकोगे।

फ्रांस का शाहशाह चौदहवाँ लुई जब गिरजा घर जाता, तो भीड़ के मारे गिरजा उफन उठता था। एक बार जब वह गिरजा घर गया, तो सिवा पादरी के किसी को न पाया। सबब पूछा तो पादरी ने जवाब दिया—"आपको यह दिखाने को कि गिरजा में कितने 'भक्त' खुदा की बन्दगी को और कितने 'खुशामदी' आप को खुश करने आते जाते हैं, मैंने मशहूर कर दिया था, बादशाह आज न आयगे। जिससे यहाँ कोई न फटका।"

अपनी कमजोरियों, आफतों और आहों को कलेजे में दबा कर घूमो। लेकिन किसी से उनकी चर्चा न करो। वर्ना तुम मुसीबतों के झुण्ड को अपने हाथ से निमन्त्रण दोगे। तुम्हारा जीवन भयानक विपत्तियों से घिर जायगा और मौत तुम्हारे इर्द

गिर्द चक्कर काटना शुरू कर देगी।

संसार रहस्यों का चलता फिरता जादू घर हैः—

"कोई संगी नहिं उतै, है इतही को संग।
पथी लेहु मिलि ताहि ते, सबसों सहित उमंग॥
सबसों सहित उमंग, बैठि तरनि के माहि।
नदिया नाव संयोग, फेरि यह मिलि है नाहि॥
घरनै दीनदयाल पार, पुनि भेट न होई।
अपनी अपनी गैल पथी, जैहैं सब कोई॥

रुपया

रुपया ! रुपया !!

हाथ में कागज पेन्सिल लेकर मेरे साथ चक्कर काटो। हजारों, लाखों मनुष्य फटी हालत में दर दर की ठोकरें खा रहे हैं। उनके दिलों में हाहाकार की होली जल रही है। इनकी महान् आत्मायें, इनकी जिन्दा लाशों को कन्धे पर लादे आहिस्तः आहिस्तः श्मशान की ओर रवाना हो रही हैं। क्यों और किस लिये ? लिख लोः—"इनके पास रुपये नहीं हैं।"

बड़े-बड़े कल कारखानों में, आफिसों में, सैकड़ों हजारों की तादाद में क्लर्क, बाबू, चपरासी और मजदूर मैशीनों की तरह खटते हुये जिन्दगी के बोझे ढो रहे हैं। क्या वजह है ? "रुपया" ! हरेक के दिल में रुपये की प्यास है।

जेलखानों के अन्दर आओ। चोर, उचक्के, गिरहकट, डाकू, बदमाश लोहे की जंजीरों में जकड़े जानवरों की जिन्दगी बसर कर रहे हैं। क्यों ? फर्राटे से लिख लो—"इन लोगों ने रुपये के लिये लालच के हथौड़े से सुनहरी जिन्दगी को कुचल डाला है।"

यह वेश्याओं का मुहल्ला है। कुछ लोग इसे नर्क कहते है,

शुद्ध परिस्तान। यहा की वेश्यायें चादी के चमकते सिक्कों पर सतीत्व जैसे रत्न को वेच रही हैं। उनका रूप, उनका सौंदर्य उनकी जवानी कौड़ियों के मोल बिक रही है। इनमे कितनी ही विधवायें है, कितनी ही सधवायें—कितनी ही कुमारिया। हरएक की जिन्दगी रहस्योंका मयखाना और भयानकताओं का कत्लगाह है। इन्होंने यह पाप पेशा क्यों अख्त्यार किया?—"रुपया। रुपये की इश्कबाजी—हा, रुपये का प्यार!!"

धार्मिक तीर्थ स्थानों मे जाओ। एक से एक दिग्गज पण्डित, पुजारी, महन्त, मौल्वी और पादरियो के झुण्ड दिखाई देंगे। हर एक के दिल टटोल कर देखो—सबका एक ही उद्देश्य है, एक ही लक्ष्य—"रुपया।" तुम जब तक किसी को रुपये की दक्षिणा न दोगे—धर्म सफल न होगा। यह भी नोट कर ले—'धार्मिक स्थानों मे देवताओं की नहीं, रुपयों की पूजा होती है। आजकल देवताओं से ज्यादा आकर्षण रुपये मे है—तुरन्त दान महा कल्याण।"

ससार का कोना कोना छान डालो—कहीं बेटा बाप की गरदन दबा रहा है। भाई, भाई का गला घोट रहा है और मर्द की खोपड़ी चाट रही है, ऐबों के पर्दे फास किये जा रहे हैं—क्यों और किसलिये? "रुपया। रुपये की प्यास।" रुपये के लिये कितने ही मनुष्य इन्सान से शैतान बन गये। कितने ही नरेन्द्र नापाक हो गये। कितने ही देशभक्त, सडे सन्यासी स्वार्थी सुधारक, समाज सेवक और ठग व्यापारियों ने रुपये के

लिये मनुष्यता को कुचल डाला, अपने आप को भूल गये!

आज संसार में मनुष्य की कोई कद्र नहीं। इस जमाने में मनुष्य के लिये सिर्फ उतनी ही जगह है, जो धन द्वारा उसे मिलती है। बिना धन के मनुष्य के अच्छे से अच्छे गुण बाहर नहीं आते और धन के कारण नीच से नीच आदमी की भी समाज में पूजा होती है। जीवन के प्रत्येक विभाग में घृणित रूप देखने को मिलते हैं। धन; जिसका आविष्कार मनुष्य की सुविधा के लिये किया गया था—आज ऐसा दैत्य बन गया है, जो केवल मनुष्य को अपने इशारों पर ही नहीं नचाता; बल्कि मनुष्य की नीच भावनाओं को उत्तेजित कर अपने ही द्वारा उसका संहार कर रहा है।

लिखते लेखनी कांपती है। रुपये के ही लिये आज एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्रों को खा जाने के लिये राक्षस की तरह मुंह बाये हैं। रुपया! रुपया! आज हंसती सृष्टि को रुपया श्मशान बनाने के लिये उद्योग कर रहा है। कैसा अन्धेर है!

अभी उस दिन की घटना है। रत्नागिरि के गणपत सखाराम ने अपने बेटे का खून कर डाला। कारण, लड़के का दो हजार रुपये का जीवन बीमा था। बाप ने इन रुपयों को हथियाने के लालच से बेटे को लाठियों से मार डाला और उसकी लाश एक दरख्त के नीचे रख दी, जिसमें लोगों को विश्वास हो जाय लड़का दरख्त से गिर कर मर गया!

कैसा पैशाचिक काड है, रुपया राक्षस है ? रुपये के प्रभाव का डंका संसार के कोने-कोने में बज रहा है:—

टका कर्ता, टका भर्ता, टका मोक्ष प्रदायक'।
यस्य गेहे टका नास्ति, 'हा टका' टकटकायते !

चारों तरफ रुपये की हाय-हाय है। सभी चाहते हैं—रुपयोंका खजाना, रुपयों का ढेर।

आज के इस विगड़े जमाने में पैसे के सिवा और कोई आकर्षक देवता नहीं। पैसेवाला चाहे कितना ही शैतान क्यों न हो, महापुरुष माना जायगा। जिस आदमी के पास पैसा नहीं, वह विद्वान होकर भी मूर्ख है, गुणी होकर भी जानवर। आज के जमाने में जो निर्धन है, वह न तो इन्सान है, न संसार मे कहीं उसका सम्मान।

रुपये ! चांदी के चन्द टुकड़े।

अमीरों की जेबों मे, सुन्दरियों के वटुओं मे, दरवानों के कन्धे पर—सभी तरफ रुपये दौड़ रहे हैं, तेजी के साथ भागे जा रहे हैं।

यदि तुम्हारी जेब रुपयों से खाली है, तुम गरीब हो, तो चाहे तुम्हारा बचा बीमारी से तडप-तड़प कर मर जाय; मगर डाक्टर वगैर फीस लिये उसकी दवा न करेंगे। देश और समाज तुम्हें नफरत की निगाहों से देखेगा। तुम जिस जमीन पर चलोगे, वह कांटो और कांच के टुकड़ों से भर जायगी। ओह

रुपये की दुनिया सबसे विचित्र, सबसे रहस्यमय है। वैताल ने ठीक ही कहा है—

> टका करै कुल हूक, टका मिरदंग बजावै।
> टका चढ़ै सुखपाल, टका सिर छत्र धरावै॥
> टका माय अरु बाप, टका भइयन को भइया।
> टका सास अरु ससुर, टका सिर लाड़ लड़इया॥
> अब एक टके बिनु टकटका रहत लगाए रात दिन।
> बैताल कहै विक्रम सुनो धिक जीवन एक टके बिना॥

मैं कहता हूं अगर तुम निर्धन हो, तो रुपये कमाओ! मगर रुपयों के लिये किसी के सामने हाथ न फैलाओ—मैं कङ्गाल हूं। संसार में चिराग लेकर ढूढ़ने पर भी तुम्हें एक मनुष्य ऐसा न मिलेगा जो तुम्हारी मुसीबतें सुन कर, तुम्हारे दुःख दर्द से हिलकर तुम्हें 'इम्पीरियल बैंक' का चेक मुफ्त दे देगा। सभी अपने अपने स्वार्थ में 'व्यस्त' हैं, किसी को क्या गरज? जो तुम्हारी आफतों को देखे, तुम्हारे रंज अफसाने सुने और उन्हें दूर करने की कोशिश करे।

> "मांगन मरन समान है, मत मांगै कोई भीख।
> मांगन से मरना भला, यह सद्‌गुरु की सीख॥"

आज रुपया शक्ति का स्रोत है। रुपये का न होना जिन्दगी के आनन्दों को खो देना है। रुपये का होना जिन्दगी को सुखों से लाद देना है।

अपनी निर्धनता पर अफसोस न करो। प्रसन्नता और मस्ती से यह मंज़िल तय कर डालो। दुनिया में आज तक जितने आदमी हुये हैं, सभी पहले मामूली हालत में थे। बगैर छोटे को ग्रहण किये कोई बडा नहीं हो सकता। आज तक दुनिया में कोई हुआ भी नहीं। यह सच है निर्धनता भयानक है। वह बहुधा अन्तरात्मा तक को मुर्दा बना देती है, पर ठोकर खाकर ही मनुष्य में सद्‌बुद्धि उत्पन्न होती है:—

"सुर्खरू होता है इन्साँ आफ़त-आने के बाद;
रङ्ग लाती है हिना पत्थर पै पिस जाने के बाद।"

प्रेसिडेण्ड विल्सन ने लिखा है—मेरा जन्म निर्धनता में हुआ। मा के पास रोटियों तक का ठिकाना न था। दश वर्ष की उम्र में मैंने घर छोडा और ग्यारह वर्ष तक सपरिश्रम नौकरी की। मैंने एक डालर भी कभी अपने मनोरंजन और सुख के लिये नहीं खर्च किया।- इक्कीस वर्ष की उम्र तक मैंने पैसा-पैसा सँभाल कर रखा। नौकरी की तलाश में सैकडों मील मारे-मारे फिरना कैसा होता है, इसका मुझे खूब अनुभव है। जंगल में लकड़ी तोड़ना, सूर्योदय से पहले उठना और अस्त होने के बाद तक मेहनत करना और वह भी केवल छ: डालर माहवार पर!" परन्तु विल्सन ने आत्म-सुधार का कोई मौका हाथ से न जाने दिया। अपने बचे खुचे समय में इक्कीस वर्ष की उम्र तक उन्होंने लगभग एक हजार अच्छी-अच्छी पुस्तकें पढ़ीं। इसके अलावा उन्होंने किसानी और मोचीगीरी भी सीखी। सालभर में वह

अच्छे वक्ता हो गये और आठ वर्ष के अन्दर व्यवस्थापिका सभा में उन्होंने दासता के विरुद्ध वह ओजस्वी व्याख्यान दिया; जिससे उनका नाम हमेशा के लिये अमर हो गया।

सुप्रसिद्ध फ्रांसीसी जीन जेक्स रूसो से एक बार किसी ने पूछा—"आपने किन-किन विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त कर सफलता पायी है ?" उन्होंने उत्तर दिया—"मैंने ज्यादातर विपत्तियों के स्कूल में पढ़ा है और अपनी गरीबी से शिक्षा ग्रहण की है।"

इसी तरह दुनिया के अनेकों महापुरुषों का जन्म गरीबी में हुआ—उन्होंने तरह-तरह के दुर्भाग्य से टक्करें खायीं—पर सिर्फ आत्मबल और समय के सदुपयोग से उनके जीवन सफल हो गये।

हम सामाजिक बन्धन की जन्जीर में जकड़े अभागे कैदी की तरह जीवन व्यतीत कर रहे हैं। हमें देश-विदेश में घूम-फिर कर अनुभव हासिल करने का हुक्म नहीं। हम किसी सोसायटी में नहीं शामिल हो सकते। किसी के साथ खाने पीने से हमारा धर्म भ्रष्ट हो जाता है-फिर हम रुपये कैसे कमा सकते हैं ?

हम मनुष्य की निन्दा स्तुति और फिजूल की गपशजियों में अपना कीमती समय बरबाद कर रहे हैं। हम अपने दोस्तों की उन्नति देखकर जलते हैं, फिर हम रुपये कैसे कमा सकते हैं ?

शिक्षा, परिश्रम, शानदार व्यक्तित्व मीठी जबान और अनुभव रुपये कमाने में कल्पवृक्ष का काम देते हैं।

यदि तुम रुपये कमाना चाहते हो, बड़े-बड़े व्यापार हाथ में लेना चाहते हो, अखण्ड धन राशि के मालिक बनना चाहते हो—तो "हाय रुपया !" कहकर चिल्लाने से कुछ न होगा। पहले विद्यालयों में भर्ती होकर शिक्षा प्राप्त करो, संकुचित विचार दूर कर, देश विदेश की यात्रा करो, कला कौशल और नये नये व्यापार सीखो, तुम्हारा नाम एक दिन कारनेगी, राकफेलर, हेनरी फोर्ड और अन्य धनकुबेरों में लिखा जायगा। तुम रुपये के महल बनाओगे और तुम्हारे बच्चे काश्मीर के आंगन में फूलों की तरह खेलेंगे।

तुम सिर्फ चार आने पैसे लेकर कोई रोजगार करो। ईश्वर चाहेगा तो इसी चवन्नी से एक दिन तुम्हें चार लाख रुपये मिल जायेंगे। यह हंसने की बात नहीं, सत्य है। मनुष्य जो सोचता है, वही हो जाता है।

यदि तुम किसी फर्म के मैनेजर, एकाउन्टेन्ट, कैशियर, क्लर्क चपरासी, मजदूर या दरवान हो—तो अपनी ड्यूटी ठीक से दो। अपने काम में खुद अपने को समर्पित कर दो। होशियारी से सब काम संभालो और अपना काम शीशे की तरह साफ रखो। परिश्रम और सावधानी से तुम्हारी तनख्वाह बढ़ जायगी। यदि मालिक कंजूस, स्वार्थी और तुम्हारे परिश्रम की कीमत नहीं समझता तो अपनी उन्नति का दूसरा रास्ता सोचो और आगे बढ़ो।

यदि तुम दूकानदार हो और दूकानदारी से अच्छे रुपये कमाना चाहते हो तो ग्राहकों को पहचानो—अपने प्रेम पूर्ण व्यवहार से उन्हें मुग्ध कर लो। पहले स्वयं उनके हाथों बिक जाओ—फिर माल वेचो, सफलता अवश्य मिलेगी। योरोप अमेरिका इत्यादि उन्नत शील देशों में दूकान पर काम करने वाले ग्राहकों की इस तरह अपनी वातों में मुग्ध कर लेते है कि तबीयत बिना कुछ खरीदे नहीं मान सकती। दूकानदार यदि एक चीज ना पसन्द होगी तो दूसरी दिखायेंगे—फिर तीसरी—फिर चौथी, यहा तक कि सारी दूकान का सामान ग्राहक के सामने उलट देंगे। यदि फिर भी पसन्द न आये तो उनका धन्यवाद स्वीकार कर चले आओ। वे कभी तुम पर रन्ज न होंगे। मगर हमारे देश की क्या हालत है ? यदि तुम दो चार चीजें देख कर ना पसन्द कर दो तो दूकानदार नाक भौं सिकोड़ेगा, बाज-बाज तो यह भी कह बैठते हैं कि लेना न था तो परेशान क्यों किया ? यहा दोपहर के समय किसी दूकान पर पहुंच जाओ। अधिकांश दूकानदार ऊँघते मिलेंगे। यदि किसी चीज को पूछो कि "है" या नहीं तो जवाब मिलेगा—"है"। जब तक तुम दिखाओ न कहोगे तब तक उठ कर दिखाने की तकलीफ न करेंगे। यदि तुमने दिखाने को कहा, तो इस तरह आलस्य के साथ उठेंगे मानों बड़ी मजबूरी से उठ रहे हैं और तुम पर बहुत ऐहसान कर रहे हैं। किसी दूकान पर जाकर खड़े हो जाओ, तीन चार मिनट तक दूकानदार एक दूसरे से बातें करते रहेंगे और तुम्हारी तरफ ध्यान भी न देंगे। यह आदतें दूकानदारी को बिगाड़ने वाली हैं।

रुपये कमाने के लिये सबसे बड़ी सफलता तुम्हारे व्यक्तित्व पर निर्भर है। व्यक्तित्व जितना ही ऊंचा और प्रभावशाली होगा—उतने ही ज्यादा रुपये हाथ लगेंगे। बड़े बड़े व्यवसायी और नौकरी पेशेवाले जो रुपये कमाने की स्कीम में 'फेल' हो जाते हैं, उसका कारण है—कमजोर व्यक्तित्व, मनकी अप्रसन्नता, चेहरे की मनहूसियत, चिढ़चिड़ा स्वभाव, गुस्सा और अहंकार।

रुपया निकम्मे मनुष्यों के लिये पानी के बुल्ले की तरह है—यहाँ उठा और वहाँ गायब। आलसी और निकम्मे आदमियों की शक्लें देखो, यह पुराने अजगर की तरह आलस्य की साँसें लेते दिखाई देंगे।

इन्हें रोना आता है, मगर हँसना नहीं। ये जमाने को कोसते हैं—किन्तु जमाने को पलटने की कोशिश नहीं करते। सोने वालों में इनका नम्बर पहला है—जगाने वालों में इनका नाम निशान तक नहीं मिलता। ऐसे आदमी स्वयं नष्ट होते हैं और अपनी जाति को नष्ट करते हुए समाज गौरवको भी खत्म कर डालते हैं।

गरीबी मनुष्य के लिये महापाप है और इस महापाप को दूर करने की तरकीबें तुम्हारे हाथ में हैं। हुनर, होशियारी सचाई, ईमानदारी, प्रेममय मिजाज और शिक्षा—रुपये कमाने की चाभियां हैं। कुछ लफंगों का ख्याल है—रुपये दगा, फरेब, बेईमानी, घूसखोरी, तिकड़म और खुशामद से प्राप्त

होते हैं; यह बेवकूफी है। इस तरह रुपये कमाने वाले एक दिन फकीर हो जाते हैं और उन्हें कोई नहीं पूछता।

संसार में हजारों किस्म के आकर्षक व्यापार हैं। उन्हीं में से किसी एक को अपना साथी चुन लो। मगर पहले इस बात का निश्चय कर लो, तुम किस व्यापार के लायक "फिट" हो, किस काम में तुम्हें ज्यादा दिलचस्पी है। मौके ढूंढ़ो और मन की मोटर के चक्कों को बदल डालो। वे पंचर हो गये हैं। उन में नये 'टायर' फिट कर आगे बढ़ो। लक्ष्मी उद्योगी पुरुष का सहारा लेती है।

दुनिया पुरानी केंचुल छोड़ कर नया रूप धारण कर रही है। हाथ-पर-हाथ धर कर बैठने से कुछ न होगा। भाग्य से कर्म अधिक प्रबल है। मनुष्य को कोई नहीं बनाता, उसे खुद मनुष्य बनना पड़ता है।

रुपये को लेकर तुम सब काम कर सकते हो। स्वर्ग तक में सीढ़ियां लगाकर आकाश की अन्दरूनी हालतों का पता लगा सकते हो; रुपया बच्चों के लिये खिलौना है, जवानों के लिये चेहरे की सुर्खी और बूढ़ों के लिये सहारे की लकड़ी!

यों तो मैंने कुछ रुपये कमाने वालों में विलक्षण दिमाग देखे हैं। मगर मुझे जीवन में एक ऐसा आदमी मिला—जिसकी बुद्धि पर दङ्ग रह जाना पड़ा।

एक दिन मुझे अपनी लायब्रेरी में एक चिट्ठी मिली, जिसका मजमून था—

प्रिय महाशय,—।

आपका पुस्तकालय बड़ा अच्छा है। मैं जब आप को पुस्तकें पढते देखता हूं, तब मुझे खूब आनन्द आता है, परन्तु आप को धन्यवाद देने का साहस नहीं होता। इसलिये कि आप पुस्तकें पढने में इस तरह तल्लीन रहते हैं कि आप की दार्शनिक आँखें रास्तेके चलते फिरते मनुष्यों को नहीं देख सकतीं।

मुझे सख्त अफसोस है, आप के पुस्तकालय की कई कुर्सिया टूट गयी हैं। उनमें किसी के पाये उखड़ गये हैं, किसी की पीठदानी हिल रही है। मैं जब उन्हें देखता हूं, कलेजा हिल जाता है।

अच्छा हो, आप उन्हें मरम्मत करालें। मैं कल सुबह आठ बजे आपकी सेवा में हाजिर होऊँगा।

आपका—
एक बढ़ई

मैंने उसका स्वागत किया और उसके पत्र लेखन कला की तारीफ की। उसने कहा—"मैं इसी तरह रोज सुबह शाम घर के बाहर निकलता हूं और बड़े आदमियों के बैठकखानों, घरों तथा दूकानों को होशियारी से ताडता हू। जहां त्रुटिया देखता,

हूं, पत्र लिख कर मालिकों से मिलता हूं और इस तरह प्रत्येक दिन अच्छा रोजगार कर लेता हूं। वर्तमान समय में मेरी आमदनी लगभग तीन सौ रुपये मासिक है। आज तक मैं कहीं असफल नहीं हुआ और मेरा काम धड़ल्ले से चल रहा है। उसने मेरे पुस्तकालय की कुर्सियों की मरम्मत की और मेरे घर के दरवाजों को सुधारा। इस तरह वह मुझसे खुशी-खुशी कई रुपये ले गया।

यों ही, बल्कि इससे भी बढ़कर रुपये कमाने की हजारों आकर्षक तरकीबें हैं। हां, तुम में धनोपार्जन का दिमाग और परिश्रम का माद्दा होना चाहिये।

मैनचेस्टर के धनवान बैंकर मि० ब्रुक का कहना है—"मैं जब तक एक गिनी नहीं पैदा कर लेता—तब तक एक शिलिंग (गिनी का २१ वां भाग) भी नहीं खर्च करता। मैंने अपने जीवन में निरन्तर इसी *नियम का पालन किया है* और *यही* मेरे धनवान होने का रहस्य है। धन पैदा करना उतना कठिन *नहीं, जितना उसका संचय करना। जो अपनी आमदनीसे अधिक* खर्च करता है, वह कभी धनवान नहीं हो सकता।"

मालामाल याने लखपती, क्रोड़पती होने के आश्चर्यजनक सिद्धान्त जिन लोगों में पाये जाते हैं, उनकी मनोवृत्तियों का अध्ययन प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक डा० वारेन. पी० एच० डी० ने किया है। डा० वारेन मनोविज्ञान के विशेषज्ञ हैं और उनके

आविष्कारों से यह संभव हो गया है कि किसी भी व्यक्ति को यह बतलाया जा सकता है कि वह लखपती होगा या नहीं? डा० बारेन ने गत २५ वर्षों में कई हजार लखपतियों का अध्ययन कर कसौटी के रूप में तीस प्रश्न तैयार किये हैं, जिन्हें मैं यहाँ लिख रहा हूं। उनका विश्वास है, यदि सचाई के साथ प्रत्येक प्रश्न का ठीक ठीक उत्तर दिया जाय तो यह बतलाया जा सकता है प्रश्न पूछनेवाला लखपती होगा या नहीं। जो प्रश्न दिये गये हैं, उनमें से प्रत्येक के लिये १ नम्बर नियत है। तुम जिस प्रश्न का उत्तर "हां" में दे सको—उसका १ नम्बर रख लो। जिस प्रश्न का उत्तर "नहीं" दे सको—उसका कोई नम्बर न लिखो। सब प्रश्नों का उत्तर देने के बाद जोड़कर देखो—तुमने कितने नम्बर पाये हैं। नम्बरों की संख्या का तुम्हारे लखपती होने के साथ क्या सम्बन्ध है—यह अन्त में देखोः—

प्रश्नावली :—

(१) क्या तुम रुपया चाहते हो, या वह अधिकार जो संसार की अन्य चीजों की अपेक्षा रुपये से ही प्राप्त होता है?

(२) नीति या अन्य चीजों के भावों की परवाह न कर क्या तुम अपनी व्यक्तिगत योजनाओं को कार्यान्वित करते हो?

(३) तुम क्या अपने को महापुरुष मानते हो और बाहर से नम्र बनते हो?

(४) तुम्हारा हृदय जो कुछ चाहता है, या तुम्हारी प्रवृति जो प्रेरित करती है, उसके बजाय अपनी बुद्धि का तकाजा पूरा करने का इरादा क्या तुम में है ?

(५) तुम्हारे विचारोंमें उत्पादन शक्ति तो है ? तुम इन विचारों को कार्यान्वित तो करते हो ?

(६) क्या तुम्हें ऐसी मूल्यवान चीजें एकत्र करने का अभ्यास है, जिन्हें मुनाफे के साथ बेंचा जा सकता है—जैसे टिकट, तैलचित्र, अलभ्य पुस्तकें आदि।

(७) क्या तुम अपने रोजगार या कार्य के विषय में हमेशा कुछ अधिक जानने का प्रयत्न करते हो, जिससे तुम अपने प्रतिद्वन्द्वियों को पछाड़े रहो ?

(८) क्या तुम सामूहिकके बजाय व्यक्तिगत उद्योगके लिये जान लड़ा देते हो ?

(९) जनता जिस तरह सोचती हो, उसके विरुद्ध आचरण करने का नैतिक बल क्या तुममें है—भले ही तुम्हारे साथी वैसा आचरण करने के कारण तुम से घृणा करें या तुम्हारा मखौल उड़ायें ?

(१०) लोगों पर कैसा प्रभाव डालना चाहिये और कैसे उनका नेतृत्व करना चाहिये—क्या तुम्हें यह आता है ?

(११) क्या ऐसे काम करने के लिये तुम अपने को तैयार कर सकते हो, जो तुम्हें स्वयं अच्छे न लगते हों।

(१२) अपनी व्यक्तिगत योजनाओं को पूरा करने के लिये कठिन परिश्रम करने वाले उपयुक्त व्यक्तियों का चुनाव करने की योग्यता क्या तुम में है ?

(१३) तुम दूसरोंके बजाय क्या अपने लिये काम करना पसन्द करने और क्या अपना कारबार आरम्भ करने का साहस तुम में है ?

(१४) जब तक कोई समस्या हल न हो या जब तक कोई कार्य सन्तोषजनक रूप में पूरा न हो, तब तक उसमें संलग्न रहने की योग्यता क्या तुम में है ?

(१५) प्रकट रूप में सैकड़ों बाधाओं के रहते हुये भी उनकी परवाह न कर क्या तुम अपने काम में लगे रहते हो ?

(१६) "अशर्फियां लुटें कोयले पर छाप" की कहावत चरितार्थ किये बिना क्या तुम मितव्ययी हो ?

(१७) तुम अपने साथी बच्चों के साथ जब अपने खिलौनों की बदलौअल करते थे, तब अक्सर इस व्यापार में मुनाफा तो रहता था न ?

(१८) माता-पिता द्वारा मजबूर किये जाने पर भी कुछ अतिरिक्त रकम पैदा करने की इच्छा से क्या तुमने स्कूल के घन्टों के बाद बाकी समय में अपने लिये कोई काम खोज लिया था ?

(१९) क्या तुम लोगों को यह विश्वास दिलाते हो कि तुम्हारा

वचन ही तुम्हारा लेख है ?

(२०) क्या तुम यह विश्वास करते हो, कि दूसरों देशों के संगठित कार्य के मुनाफे को बुद्धिमत्तापूर्वक नियन्त्रित और प्राप्त कर साधारणतः लखपती हुआ जाना है ?

(२१) खर्च कम करने, बिक्री बढ़ाने और मुनाफा ज्यादा उठाने के लिये नये-नये उपाय निकालने की योजना तैयार करने पर तुम क्या प्रतिदिन १२ घन्टे विचार करते हो और फिर अपने नियमों के अनुसार क्या तुम कार्य करते हो ?

(२२) तुम सावधानी से अपने स्वास्थ्य की रक्षा करते हो ?

(२३) दूसरों के इरादों के विषय में तुम्हें सन्देह रहता है और क्या तुम उनके सम्बन्ध में सही-सही विश्लेषण करते हो ?

(२४) अच्छी तरह जांच कर लेने के बाद अपने निर्णयों की सचाई पर तुम अपना रुपया लगाने के लिये तैयार हो ?

(२५) जिस काम के विषय में तुम स्वयं नहीं जानते, उसे किसी के इशारे पर उसी के लाभ के लिये करने से क्या तुम बचते हो ?

(२६) हानि-लाभ की गुंजाइश के लिये रकम जमा देकर क्या तुम सट्टा करने से बचते हो ?

(२७) क्या तुम इस बात को जानते हो, केवल कठिन परिश्रम और मितव्ययता से कभी कोई आदमी लखपती नहीं हुआ परन्तु अन्य लोग जो काम करते हैं, उसका मुनाफा, सब

लोगों के परिश्रम का मुनाफा स्वयं प्राप्त कर लेने से कोई भी लखपती हो सकेगा ?

(२८) क्या तुम में संगठन करने की योग्यता है ?

(२९) तुम्हारे आराम से रहने की दृष्टि से तुम्हारी आमदनी चाहे काफी से भी ज्यादा हो, परन्तु क्या तुम इससे हमेशा असन्तुष्ट रहते हो ?

(३०) क्या तुम जानते हो, रुपये से कैसे काम लिया जाता है ?

प्राप्त नम्बरों का अभिप्राय

इन प्रश्नों का सही-सही उत्तर देने से तुम्हें जितने नम्बर मिलेंगे उससे तुम्हारे लखपती होने के सम्बन्ध में यह नतीजा निकाला जा सकता है—

१२—या कम व्यापारी या कारवारके रूपमें निश्चित असफलता

१३-१५—तीसरे दर्जे के व्यापारी।

१६-२१—मध्यम श्रेणी के व्यापारी, औसत दर्जेकी आमदनी।

२२-२४—अच्छे व्यापारी, आराम से अपना स्थान निर्माण कर सकते हो।

२५-२६—बहुत अच्छे व्यापारी, शुद्ध धन कमा सकते हो !

२७-२८—ऊँचे दर्जे के व्यापारी, अच्छी रकम पैदा कर सकते हो।

२९-३०—प्रमुख उद्योगी, तुममें लखपती होने के लिये सभी लक्षण हैं।

गरीबी या बेकारी भीख मांगने, सहानुभूति ढूंढ़ने या व्याख्यानों से नहीं दूर की जा सकती। किसी काम में एक-दो बार "फेल" हो जाने पर घबराओ नहीं। कोशिश करो और फिर कोशिश करो। चिकनी दिवाल पर मकड़ी बार-बार चढ़ती और गिरती है, परन्तु हताश नहीं होती। उससे सबक सीखो और आगे बढ़ो।

रुपये को सही रास्ते से खर्च करो, न किसी से कर्ज लो, न दो। कर्जदार आदमी का दुनिया में खड़ा होना मुश्किल है। जब तक तुम्हारे पास पैसे न हों, भूखे सो जाओ, मगर कर्ज लेकर दूध मलाई न चाखो। कर्ज वह कोढ़ है जो जिन्दगी को मिट्टी में मिला देता है।

जुआ, रेस, सट्टा और लाटरियों में किस्मत न आजमाओ। बीती आफतें भूल जाओ और अपनी अन्तरात्मा से यह आवाज उठने दोः—

"हम कर्मयोगी हैं। दुनिया में तूफान पैदा करने आये हैं—नई रोशनी लेकर आगे बढ़ेंगे—जिसे दुनिया की कोई ताकत न बुझा सकेगी।"

वर्तमान की कीमत

लोग कहते हैं, यह हाहाकार का जमाना है। जिधर देखो, उधर हाहाकार। हमारी आँखों में आफत की तस्वीर नाच रही है, आँसुओं में घर डूबा जा रहा है—

"लुटे हैं यों कि किसी के गिरह मे दाम नहीं,
नसीब रात को पड रहने का मुकाम नहीं।
यतीम बच्चों के खाने का इन्तजाम नहीं,
जो सुबह खैर से गुजरी उमीदे शाम नहीं।
अगर जियें भी तो कपडा नहीं बदन के लिये,
मरें तो लाश पडी रह गई कफन के लिये।

हमारे अफसाने लहूके रङ्गमें डूबे हैं, हमारी कोई नहीं सुनता।

मैं कहता हू, कोई सुनेगा भी नहीं। तुम्हारे रोने व्यर्थ होंगे। तुम्हारी आहोंका धुआं मनुष्य सिगरेट के धुएं की तरह उड़ा देंगे। क्यों, जानते हो? तुम मनकी शक्तियों को भूलकर पथ भ्रष्ट हो गये हो, मनुष्यता का मार्ग छोड़कर पशुओं की श्रेणी में चले आये हो। सच्चा आनन्द क्या है? यह सोचनेकी फुरसत नहीं। चतुरता तुममें इतनी ज्यादा बढ गयी है कि उसमें धूर्तता के चिराग जल रहे हैं। पालिसी या नीति ने तुम्हारे अन्दर दगाबाजी का रूप धारण कर लिया है। दम्भ और अभिमानने

तुम पर इतना बड़ा सिक्का जमा लिया है कि तुम ईश्वर और उसके कानूनोंको भूल गये और तुममें फिजूल हाहाकार मचाने की आदत पड़ गयी है।

तुम्हारे मन में कुछ और है—जबान में कुछ और। जिन्दगी और मौत के थपेड़े खाने पर भी तुम्हें होश नहीं होता। अपनी बेवकूफियों से मौतके साथ लिपटे जा रहे हो; मगर मौत भी तुम्हारा तिरस्कार करती है। फिर तुम्हें कोई क्यों पूछे?

यदि तुम पशुओं के झुण्डसे भागकर मनुष्य श्रेणी में आना चाहते हो, मनुष्य से भी ऊंचे महामानव बनना चाहते हो,—तो बीती बातें भूल जाओ। वर्तमान को पहचानो। वर्तमान में ही मनुष्य की सफलताओं का तत्व छिपा रहता है।

यह जमाना आगे बढ़ने का है। इतिहास का युग है। मानसिक शक्तियोंके जगानेका वक्त है। इस युग की धारा बिजली की रफ्तार से भी तेज है। दुखी और हताश होने की जरूरत नहीं, सुखोंकी स्वयं सृष्टि करो। अब तुम्हारे लिये वह जमाना आ रहा है, जब तुम विज्ञान की बदौलत समुद्र, पहाड़, जंगल, दरख्त, पशु, पक्षी, और ईश्वर की प्रत्येक सृष्टि के साथ दिल खोलकर बातें करोगे। यह मिथ्यावाद, कवि की कल्पना या पागल का प्रलाप नहीं—ऐसा होगा, बल्कि इनसे भी बढ़कर इनसे भी ज्यादा विचित्र होगा। मैं भंग पीकर यह नहीं लिख रहा हूं—मेरे होश दुरुस्त हैं। मनुष्य प्रकृति, आकाश, पाताल

किसीको न छोड़ेगा, सब पर उसकी विजय होगी, वह शक्तियों की खोजमें जमीन आसमान एक कर देगा और धीरे धीरे देवताओं की श्रेणी मे जा बैठेगा।

जरा तुलना कर देखो—मनुष्य पहले बन्दर की शक्ल मे था, अब वह आदमी बनने लगा है। हमारे समाज में जो बातें सौ वर्ष पहले थीं, आज उनमें जमीन आसमान का फर्क हो गया है। इसी तरह जिस जमाने पर आज तुम चल रहे हो, सौ वर्ष बाद उसमें महान उलट पुलट हो जायगा। मनुष्य ज्यों ज्यों महा-मानव होकर ज्ञान मार्गकी ओर बढ़ता जा रहा है, त्यों-त्यों उसकी अधिक उन्नति हो रही है। आँखें खोलकर देखो—जैसे फूलों के साथ पत्तियां लगी हैं, चन्द्रमा के साथ तारे लगे हैं, सागर के साथ नदियाँ और नदियों के साथ नद नाले जुड़े हैं, वैसे ही वर्तमान भी तुम्हारे साथ जैसा चल फिर रहा है। उसे पहचानो और ज्यादा से ज्यादा फायदा उठाओ।

इस समय तुम व्यक्तित्व, साहस, शक्तियों और योग्यताओं को बढ़ाकर उनमे नये-नये चमत्कार उत्पन्न करो। मनुष्य पर अपने दिमाग का प्रभाव डालो, शक्तिशाली मनुष्यों से शक्ति सचय करो। गवर्नमेन्ट के उच्च कर्मचारियों से मिलो। गवर्नर, मिनिस्टर, जज, मेयर, काग्रेसमैन, राजे-महाराजे, और रईसोंसे मेल मिलाप कर अपने को आगे बढ़ाओ।

तुम्हारे लिये तो यही सुनहरा समय है। देश विदेश की यात्रा करो। व्यापार, साहित्य, विज्ञान और नये आविष्कारों

के अध्ययनमें अपने को अर्पित कर दो। सभा-सोसाइटियों में प्रभावशाली भाषण दो। रुपये कमाओ, मकान, बागीचे खरीदो और मनकी अच्छी अभिलाषाओं की पूर्ति में लग जाओ।

यही तो समय है। मनकी कमजोरियां दूर कर उनमें खूबसूरती पैदा करो। चमत्कार पूर्ण पुस्तकें लिखो, नए और मौलिक विचारों को गहराई से फैलाओ और संसार के प्रसिद्ध राजनैतिक, लेखक, वैज्ञानिक तथा सम्पादकों के साथ परिचय प्राप्त करो। दर्शन, आध्यात्म, इतिहास और साइन्सकी पुस्तकें पढ़ो। तुम्हारे लिये यह जमाना भंग छानने का नहीं, शराब की मनवाली तरंगोंमें बहनेका नहीं, शादियों में मशगूल होने का नहीं—यह जागरणका जमाना है। इस जमाने में धर्मके असली तत्वोंको समझो और मनकी खेती में मनुष्य गौरव के बीज बोकर दुनियाकी तेज रफ्तार में आगे बढ़ो।

हफ्तेमें एक दिन छुट्टी मनाना बहुत जरूरी है। रोज एक ही धन्धेमें लगे रहने से दिमाग कूड़ा हो जाता है। छुट्टी के दिन मनको पूर्ण आजादी की दुनियां में टहलने दो। इस दिन छोटी मोटी यात्राएँ करो, जीवन मे मनोविनोद की उथल पुथल होने दो। छुट्टियां शक्ति की जननी हैं। संसार में बहुत ज्यादा मनुष्य ऐसे हैं, जो छुट्टियों की आशापर जीते हैं और बहुत कम मनुष्य ऐसे हैं, जो छुट्टियों की जरा भी कीमत नहीं समझते। इनकी मनकी

मेशीनें रात दिन चला करती हैं, इसका नतीजा यह होता है कि एक दिन इनके कल पुर्जे इस तरह बन्द हो जाते हैं कि मरम्मतमें जमीन आसमान एक कर देना पड़ता है—फिर भी कुछ फायदा नहीं होता।

तुम्हारे लिये यही तो समय है। मन में उत्साह पैदा करो। उत्साह सैकड़ों गुणों की उत्पत्तिका मूल रहस्य है। उत्साह के कारण भयानक से भयानक कठिनाइयां सुलझ जाती हैं। सच पूछा जाय तो सिकन्दर ने उत्साह से ही एशिया पर विजय प्राप्त की। उत्साह से मन जवान रहता है। उम्र अधिक हो जाने से बाल भले ही सफेद हो जाएँ, उत्साही हृदय बूढ़ा नहीं होता। शर्मीले और फिसड्डी आदमियों की कहीं कद्र नहीं होती। सोते शेर की अपेक्षा भूकने वाले कुत्तेसे ज्यादा काम निकलता है।

जीवन की हर एक सांस पर आगे बढ़ो। दुखों को कड़ी धूप में झुलसाते हुए मरु जीवन में सुख का झरना बहा दो। मृत्यु में जीवन का निर्माण करो। तुम में ब्राह्मण का सा तेज और अर्जुन का सा पुरुषार्थ होना चाहिये। तुम्हारे दुःख दर्दों में गहरे आकर्षण छिपे हैं। अपनी कठिनाइयों, बलिदान के तकाजों और कँटीले रास्तों में सफल यौवन की खोज करो। जिन्दगीका यही अक्षय बल है।

अपने रास्ते पर अकेले चलो। स्वप्न में डूबे हुए प्राणी की तरह बीहड़ बियाबानों में प्रवेश करो और ऊबड़-खाबड़ भूमि

लाघते हुए अपने लक्ष्य पर पहुंचो। यदि तुम पर मुसीबतों के पहाड़ टूटते हैं, तो न घबड़ाओ। अपनी विपत्ति कहानी जङ्गल के दरख्तों को सुनाओ। इस तरह यदि सिद्धांत पथ पर सफर करते हुए लोग तुम्हारा साथ छोड़ दें और मानव जातिया तुम्हारे खिलाफ हो जायं, तो किसी की परवाह न करो— आगे बढ़ो।

वर्तमान शक्तियों द्वारा तुम्हारे उजड़े हुए चमन में पुनः बसन्त का आगमन होगा। रङ्ग-बिरंगे फूलों से तुम्हारी दुनिया भर जायगी और उस पर हजारों-लाखों भवँरे मंडलायेंगे। निराशा क्यों? निराशा पतन है, आशा उत्थान!

स्त्री

विन्ध्याचल की खूबसूरत पहाड़ियों पर टहलते हुए अचानक मेरी मुलाकात एक महात्माजी से हुई। बातचीत के सिलसिले में उन्होंने कहा—"स्त्री कालसांपिनी है, तुम हमेशा उससे दूर रहना।"

यदि तुम आत्माकी उन्नति चाहते हो, धर्म पर तुम्हारा विश्वास है, तो स्त्री जाति से घृणा करना। यह परमात्मा की नापाक सृष्टि है :—

> "व्यास कनक औ कामिनी, ये हैं कड़ुई बेलि।
> बैरी मारै दाव दै, ये मारै हँसी खेलि॥"

मैं महात्माजी के सामने झुक गया और उनकी चरण धूलि मस्तक पर चढ़ा ली।

यह बहुत दिनों की बात है। उन दिनों मैं यौवन के वासन्ती बागीचे में टहल रहा था। एकाएक महात्मा जी ने उसमें वैसाख की तरह प्रवेश कर मेरी उमङ्गों को झुलसा डाला। मैं नहीं समझता, वह महात्मा जी का उपदेश था, या दुर्वासा का शाप। रोम रोम से आग की चिनगारियां निकलने लगीं और मेरा मधुर जीवन प्रलयंकर शंकर का ताण्डव नृत्य हो

गया। उन दिनों जहां कहीं मैं औरतों को देखता, मुंह फेर लेता। महात्मा जी की कृपा से मैं स्त्री द्रोही बन गया।

इस तरह बरसों बीत गये, कितनी ही आंधियां आईं और तूफान की तरह निकल गईं। फिर भी स्त्री क्या है—मैं न पहचान सका!

पहचाना कब? जब उसने एक दिन मौत के पंजे से खींच लिया! कष्टों के भयानक अन्धकार में उसने मेरी जिन्दगी में प्रकाश के दीपक जला दिये, मेरे हृदयमें प्रेमकी वीणा बज उठी।

हाँ, उसी दिन मैंने पहचाना—स्त्री क्या है, स्त्री-शक्ति किसे कहते हैं?

यदि विन्ध्याचल के स्त्री द्रोही महात्माजी आज मुझे मिल जाते, तो मैं पूछता—"महात्मन्, यदि मैं स्त्री को न देखूंगा, तो समझूंगा कैसे—स्वर्ग कैसा है? देवी-देवताओं की पवित्रता कैसी है? स्त्री को न देखूंगा तो सीखूंगा कैसे—भक्ति क्या है? धैर्य और धर्म किसे कहते हैं। यदि वह रूप-छटा न देखूंगा, तो जानूंगा कैसे—अप्सरायें और गन्धर्व जो संगीत अलापते हैं, वह मधुर संगीत कैसा है?

स्त्रीने अपने प्रेम के आंसुओं से संसार को उसी तरह घेर रखा है, जिस तरह समुद्र पृथ्वी को घेरे है।

स्त्री की आंखों में ईश्वरने दो दीपक जला दिये हैं; ताकि संसार

के भूले-भटके उसके प्रकाशमें खोया हुआ रास्ता देख लें। स्त्री एक मधुर सरिता है, जहां मनुष्य अपनी चिन्ताओं और दु खों से त्राण पाता है।

जिस समय तुम पर तकलीफें पडे, रमणी-रूप रस का पान करो—उमंगों की तरंगे उछलने लगेंगी। जब तुम पर आफतें आयें, सुन्दर स्त्री का दिल टटोलो—विपत्तियों के बादल कट जायंगे। इसे याद रखो—तारे आकाश की कविता हैं, तो स्त्रियां पृथ्वी की संगीत माधुरी।

स्त्री वह फूल हैं झरने जिसे पानी पिलाते है, मेघ नहलाते हैं, चन्द्रमा जिसका मुंह चूमता है और ओस जिसपर गुलाबजल छिड़कती है। श्रीमती सरोजनी नायडू अपनी एक कविता मे लिखती हैं—'गुलाव पीले पड गये हैं, उनका सौरभ हवा मे उडने लगा है। क्यों? गुलाव ईर्षा से कुम्हला गया है, सौरभ उसका रुदन है। इसलिये कि राजकुमारी जेबुन्निसाने अपने गालों पर का घूंघट हटा दिया है। गुलाबों का नाज इसलिये काफूर हो गया!

"दिले दुश्मन उस हूर का घर वना है।
जहन्नुम मे फिरदौस मंजिल यही है॥"

स्त्री द्वारा ही प्रकृति पुरुष हृदय में अपना सन्देश लिखती है।

देवताओं के इतिहास पढ़ो, शास्त्र के पन्ने उलटो, काव्य-समुद्र में गोते लगाओ, उपन्यास नाटकों का समुद्र मन्थन

करो—सच में स्त्री शक्ति सूर्य किरणों की तरह चमक रही है। देखो—सीता खो गई हैं, भगवान रामचन्द्र उनके विरह में पागल हैं। वह जङ्गलों में भटकते हैं और वृक्षलता से पूछते हैं:—

हे खगमृग ! हे मधुकर श्रेणी।
तुम देखी सीता मृगनयनी ?

कहाँ तक लिखूं ? स्त्री जीवन एक गूढ़ पहेली है। सौंदर्य कोमलता स्नेह और शील की देवी, इन्हीं गुणों से वह पुरुष को अपनी ओर आकर्षित करती है। जहा स्त्री नही, वह स्थान नर्क है। यदि पुरुष को समस्त संसार का राज्य मिल जाय और स्त्री न मिले, तो वह भिखमंगा है। इसके विपरीत यदि निर्धन के पास स्त्री है—तो वह चक्रवर्ती राजा के समान है।

प्रकृतिने स्त्री को इस कारण बनाया है कि वह प्रेम और प्यार से हमारे आनन्द मे वृद्धि करे, कष्टों को दूर करे। यदि संसार में कोई स्त्री न हो, तो यह इस तरह सूना नजर आये; जैसे वह मेला—जिसमें किसी प्रकार की न तो बिक्री हो, न मनोरन्जन का सामान। स्त्री की मुस्कुराहट विना संसार ऐसा निकम्मा हो जाये—जैसे साँस विना शरीर, फूल-फल विना वृक्ष, और नींव बिना मकान।

आजकल बिगड़े दिल मनुष्यों की धारणा है, स्त्री केवल भोग विलास की सामग्री है। पुरुषों की पशु प्रवृति को चरितार्थ करने के लिये ही उसका जन्म हुआ है। यह मनुष्य नाम को कलंकित करने का सिद्धान्त है।

स्त्री के आदि मे मनुष्य अपग था, वह पृथ्वी के कोने मे पडा सिसक रहा था। स्त्री ने ही उसे उठाया और पाल पोस कर बडा किया। आज वही कृतघ्न मनुष्य स्त्री को पैर की जूती समझता ह। घृणित इन्द्रिय लालसा को चरितार्थ करने के लिये उसे चरणों की दासी बना रक्खा है। हम उस पर अत्याचार करते हैं, उसे विलास की वस्तु समझते हैं। विचार कर देखो, स्त्री पर अत्याचार करना अधर्म है, इन्द्रियों पर अत्याचार करना उससे भी ज्यादा अधर्म। स्त्रियों को दुर्बल वन्धन में न वाधो, उनका अपमान न करो, जो दीपक हर समय बुझाया जा सकता है, जो लता बात की बात मे तोडी मरोडी जा सकती है—उसके साथ अधर्म कैसा, अत्याचार क्यों? स्त्री लक्ष्मी है, यदि तुम सोती शक्तियों को जगाना चाहते, हो तो स्त्री द्वारा आकर्षण प्राप्त करो।

"जहां स्त्रियों की पूजा होती है, वहा देवता रहते हैं" शास्त्र कारों ने कहा हैं—"पृथ्वी के समस्त तीर्थ स्त्री के पैरों मे मौजूद हैं। उनमे देवताओं तथा मुनियों का सा तेज है।"

स्त्री, शिक्षा देने मे पिता के सामान है। हर तरह के दुख दूर करने मे माता जैसी। एक ही भार्या मन्त्री, मित्र, नौकर रूप से अनेक हो जाती है। उसे पहचानते ही ससार अमरावतीके रूप में दिखाई देता है।

तुम मैत्रयनी के ये शब्द न भूलो। वह कहते हैं—"जब हम किसी महान् कार्य के लिये अपने को या दूसरों को उत्साहित

करना चाहते हैं, तो उन वीर पुरुषों का उदाहरण देते हैं, जो शूरता के साथ युद्ध में कूदे हैं और छाती दिखाते हुए लड़ाई के मैदान को पार कर गये हैं। यह हमारे लिये कम लज्जा की बात नहीं कि हम अपने वीर पुरुषों का इतिहास कम जानते हैं। इससे भी अधिक लज्जा का विषय है, हम अपनी वीर स्त्रियों के विषय में कुछ भी नहीं जानते।"

यदि तुम किसी स्त्री को पाप की आँखों से देखते हो, तो परमात्मा के क्रोध को जगाते हो और अपने लिये जहन्नम का रास्ता तैयार करते हो।

स्त्री को न भूलो। स्त्री शक्ति को न भूलो। स्त्रियां शक्ति की देवी हैं। उन्हें पहचानो—

मुहब्बत की मुहब्बत है, इबादत की इबादत है।
जहां जलवा किसी का देख लेना सर झुका देना॥

मनुष्य धर्म

मनुष्य ने धर्म की सृष्टि की है, धर्म ने मनुष्य की नहीं।

लेकिन धर्म है क्या? धर्म किसे कहते हैं? हमारा जो कर्तव्य कर्म है, उसी का नाम धर्म है। सदाचारका नाम धर्म है। प्रेम और शुद्ध स्वभाव का नाम धर्म है। यदि मनुष्य, मनुष्य के साथ युद्ध करता है, लडता है, तो उसके यह माने हुए मूर्खता की तरफ उसकी जीत है, धर्म की तरफ हार। वह एक तरफ सिद्धि प्राप्त करता है, दूसरी तरफ अमृत से वंचित हो जाता है।

धर्म का उद्देश्य है आत्मा की उन्नति—इसलिये जो धर्म व्यक्तित्व की उन्नति और आत्मा के विकास मे बाधक है, वह धर्म नहीं।

बहुत से लोग समझते हैं, धर्म जंगलों मे रहता है, कपडे रंग लेने से ईश्वर मिल जाता है—यह भूल है। संसार में रहते हुए सत्य के सहारे कर्तव्य का पालन करते, सबमे रहकर सबसे अलग रहना ही मनुष्य का धर्म है।

संसार मे ऐसे हजारों महापुरुष (!) हैं, जो ऊर्द्ध बाहु रहते हैं। कोई लोहे के कॉंटों पर सोते हैं, कोई अग्निकुण्ड के किनारे सर झुकाये रहते हैं। कुछ गांजा, भांग अफीम और चरस के नशे में बेहोश हैं। यह मनुष्यों को समझाते है, हम तुम से

श्रेष्ठ हैं। यदि विचारपूर्वक देखा जाय तो शरीर को कष्ट देने वाले ये महात्मा (!) अधम और अस्वाभाविक हैं। इसे कहते हैं धर्म की दुनिया में रेकार्ड तोड़ना। यह प्रकृति के विरुद्ध विद्रोह है! शारीरिक अस्वाभाविकता को लेकर आडम्बर को धर्म समझते हैं! धर्म के नाम पर मनुष्य को मनुष्य से, समाज को समाज से और राष्ट्र को राष्ट्र से अलग कर रहे हैं। ये नैतिक निर्बलता को पवित्रता कहते हैं और पवित्रता के नाम पर जीवन को घृणित बना रहे हैं।

दूसरी तरफ चलो। मनुष्य अपनी अपनी टुकड़ियों के लिये रास्ते के कुत्तों की तरह दुम हिलाने, दूसरों को वैसी ही हिलती दुम देखकर गुर्राने, झपट पड़ने और इधर-उधर दो चार बकोटे भरने में ही दुनिया की भलाई समझते हैं। यही वजह है, जो हम अब तक मनुष्यता के ऊँचे आदर्श तक पहुंचने में असमर्थ हैं। जिस समय सारा संसार आगे बढ़ रहा है, उस समय हम नीचे गिर रहे हैं। हमारी बुद्धि पर ऐसा तुषारपात हो गया है कि साधारण बातें भी समझ में नहीं आतीं। हम भूत प्रेतों में विश्वास करते हैं, कीड़े मकोडों की आराधना करते हैं।

यह आडम्बर है। ऐसे ही धार्मिक विश्वासों ने हमें कहीं का नहीं रखा। जो हमारे सिरमौर थे, हमें ज्ञान विज्ञान की शिक्षा देते थे, वे आज इक्के हांकते हैं, पराये घरों में रोटियां सेंकते हैं। क्लर्की, मजदूरी और दरबानी करते हैं। धार्मिक

अन्धेर ने हमारे समाज पर कालिख पोत दी है। आज हमें सभी घृणा की दृष्टि से देखते हैं। हमारी ऐसी ही धार्मिक संकीर्णता पर स्वामी विवेकानन्दने कहा है—"हिन्दुओंका धर्म न तो अब वेदोंमें रहा, न पुराणोंमें, न भक्ति मुक्तिमें। तो फिर रहा कहा? बस चूल्हें और चौकेमें। आजकल सिर्फ छुआछूत में ही धर्म समस्या है। जो भूखे के मुह में रोटी के टुकड़े नहीं डाल सकते, वे 'धर्म-धर्म' चिल्लाकर कैसे मुक्त हो सकते हैं।

हम जब तक धार्मिक अन्ध विश्वासों को, मजहबके इन तास्सुबों को तिलाञ्जलि देकर धर्म के वास्तविक तत्व को नहीं स्वीकार करते, तब तक हमें मनुष्यके मूल धर्म का पता पाना असम्भव है।

स्वार्थ हमें जिस ताकत से ठेल कर आगे ले जा रहा है, उसकी मूल प्रेरणा जीव प्रकृति मे दिखाई देती है। किन्तु जो हमे त्याग और तपस्या की ओर ले जाता है, वही है मनुष्यत्व—मनुष्य धर्म। इसी धर्म को लेकर मनुष्य महामानव बनता है। वह दूसरे देशों, समाजों और भिन्न-भिन्न जातियों मे एक होकर रमता है। उसकी आत्मा सब आत्माओं में मिलकर सत्य धर्म के दर्शन करती है। वह अपने विचारों से सब को एकता के सूत्र में बाध लेता है और अन्त में जिस तरह नदी समुद्र में मिलकर महासागर वन जाती है, उसी तरह मनुष्य भी महा मानवता को प्राप्त कर लेता है। उस समय वह सफलता के उच्च शिखर पर छाती तान कर खड़ा हो जाता है! उसके चरणों में

मानी मान समर्पित करते हैं, धनी धन और वीर आत्मायें अपने प्राण विसर्जन।

एक दिन ब्राह्मण रामानन्द ने इसी मानवता को पाकर नाभा चाण्डाल, संत कबीर और रैदास चमार को आलिंगन किया था। उस दिन इस महामानवता के आगे विरोधियों का विद्रोह जल कर खाक हो गया था।

एक दिन महात्मा ईसा ने इसी मानवता को प्राप्त कर कहा था—"मैं और मेरा पिता एक है।"

एक दिन महात्मा बुद्ध ने इसी महा मानवता के दर्शन कर ससार को समझाया था—"तुम मनुष्य मात्र से हिंसा, बाधा और शत्रुताशून्य मैत्री जोडो। उठते, बैठते, चलते, सोते इसी मैत्री के प्रवाह में अपने को नहा दो। तुम्हारी कल्पना का अमृत यही है।"

असल मे जीवन देवता के साथ जीवन को अलग करते ही हम पर विपत्तियो के बादल टूट पड़ते हैं। जीवन देवता को जीवन में मिलाते ही हृदय से मुक्ति का आनन्दस्रोत फूट पड़ता है, हम मनुष्य मात्र को बड़ा मानने लगते हैं। उस समय वायु के झोकों से जैसे अन्चल हिल हिल कर नये नये रूप धारण करता है, वैसे ही हमारी आखों के सामने संसार का मान चित्र बदलता जाता है। हम प्रेम सागर में गोते खाकर आप अपनी काया-पलट कर लेते हैं। उसी समय हमें मालूम होता

है, यह संसार कितना सरस, पवित्र और मनोरम है। भर्तृहरि ने कहा है—"जब मैं कुछ समझने बूझने लगा था, हाथी के समान मदान्ध हो गया था और यह अभिमान रखता था, मैं सर्वज्ञ हूं। पर आगे जैसे-जैसे विद्वानों के सत्संग से ज्ञान प्राप्त होता गया, मुझे विश्वास होता गया, मैं मूर्ख हू। इस तरह मेरा यह अहंकार ज्वर के समान उतर गया।"

आज कल अन्धश्रद्धा रखने वाले मनुष्यों की धारणा है, धार्मिक मामलों में उनके सिवा और किसी को बोलने का अधिकार नहीं। इसमें कोई शक नहीं, हमारी धार्मिक लीडरी बहुत दिनों तक ऐसे ही आदमियों के हाथ में रही है, परन्तु इसलिये वे वर्तमान समय में भी हमारे देश के धार्मिक नेता नहीं रह सकते। ज्यों ज्यों वे अपने धार्मिक अधिकारों की चिल्लाहट मचाते हैं, त्यों-त्यों जनता की निगाहों से गिरते जा रहे है। किसी धर्म की एक सी रूप रेखा न कभी रही है, न रहेगी। समय की आवश्यकताओं के अनुसार सभी धर्मों को अपनी प्राचीन कड़ाइयां कम करनी पड़ी है। और नये नियम बनाने पड़े हैं।

अन्धविश्वासी धर्म मनुष्य के लिये अफीमके समान है।

अन्धविश्वासी धर्म परलोकका झूठा सब्ज बाग दिखाकर भोलेभाले लोगों को इस लोक में सन्तोष की सूखी रोटियां खाने का पाठ पढ़ाता है। काल्पनिक स्वर्ग का लालच देकर गरीबोंके

घरों में नर्क उँड़लता है और जो गरीबों के मुह का कौर छीन कर खाते हैं, उनसे कुछ टके ऐंठ कर उन्हें स्वर्गका पास पोर्ट दे देता है।

नदी या पुलके नीचे जब मनुष्यों को बलि देनेकी प्रथा का समर्थन किया जाने लगता है, तब धर्म वास्तव में जहर बन जाता है। धर्म के नाम पर सदियों से प्रचलित देवदासी प्रथा मन्दिरों पर चढ़ाई जाने वाली बलिके लिये पशु हत्या, तीर्थों मे होने वाले पाप, व्यभिचार, भ्रूणहत्यायें और धर्मजीवी पुरोहितों की पापलीलाएँ सुनते हुए भी धर्म को जीवन का संरक्षण कहनेसे अधिक शूल और क्या हो सकती है ? जिन स्थानों में धर्म की जितनी ज्यादा दुहाई दी जाती है, उसमे उतनी ही अधिक पोल दिखाई देती है।

जार जैसे निरंकुश शासक और रासपुटीन जैसे शराबी द्वारा धर्म के नाम पर प्रजाकी मुसीबतों के कारण ही रूस मे धर्मके विरुद्ध विद्रोह हुआ था। जारके जमानेमें धार्मिक जनता का अन्धविश्वास देकर महात्मा टालस्टाय ने कहा था—"मै पादरियों का दुश्मन हुए बिना नहीं रह सकता, क्योंकि ये अशिक्षित जनता के हृदय मे धर्मकी झूठी धारणायें पैदाकर उन्हें सर्वनाश की ओर लिये जा रहे है।"

धर्म के नाम पर अन्धविश्वासों ने मनुष्यों पर भयानक अत्याचार किये है ! यदि भारत सरकार सती प्रथा को रोकने

का कानून न बनाती, तो आज हिन्दुस्तान मे चारों तरफ जिन्दा लडकिया विधवा होने पर आग मे जलकर भस्म होते दिखायी देतीं। धर्म द्वारा मनुष्य के सुख और शान्ति मे वृद्धि होनी चाहिये, न कि अशान्त हाहाकार।

आज विधवाओं की आह से हिन्दू समाज जल रहा है। वेश्याओं के नित्य नये बाजार खुलते जा रहे हैं, दहेजकी प्रथाओंमें पीसकर कितनी ही कुमारिया बगैर शादी के दुःखमय जीवन बिता रही हैं। लाखों अछूत विधर्मी बनते जा रहे हैं। ऐ पाखण्डी धर्मधुरन्धरों। क्या तुम्हारा धर्म यही है? इन धार्मिक अत्याचारों के विरुद्ध तुम विद्रोह क्यों नहीं करते?

यदि सच पूछा जाय, तो आज अन्धा धर्म ही मनुष्यका खून चूस रहा है। मनुष्यको गुलामके रूपमे बदल देने, उसके मनको मुर्दा बना देनेके लिये धर्म ही पर सबसे ज्यादा जिम्मेदारी है। जब किसी देश में मनुष्य को पेट भर अन्न नहीं मिलता, तब उस देशमे सिर्फ अकाल ही पडकर नहीं रह जाता, बल्कि वहां तरह तरह की तकलीफें पैदा होती है, बुरे रस्म रिवाज फैलते हैं व्यभिचार अत्याचार की वृद्धि होती है। भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है—"मनुष्य अपना उद्धार आप करे। अपने आपको गिरने न दे। क्योंकि हर आदमी स्वयं अपना दोस्त है, स्वयं अपना दुश्मन।" तुम धर्मके अन्धे दीवानों को तर्पण करने के लिये अपना खून न दो। जैसे तालाब पर मच्छरों का मुण्ड मॅलेरिया फैलाता है, वैसे ही अन्धविश्वासी समाज भी कोरी

कल्पनाओंके प्रवाहमें बहा जा रहा है और अपने भाईयों पर बीमारियों और मुसीबतों के पहाड ढा रहा है। मैली-कुचैली अन्धेरी गलियों मे आज हजारों लाखों औरत मर्द जानवरोंकी जिन्दगी बिता रहे हैं। यही वजह है कि लाखों मनुष्योंको आज हलचलकी इतनी ज्यादा जरूरत हो गयी है कि अगर अन्ध विश्वासोंके ये अन्धेर फौरन न हटाये गये, तो न मालूम किस दिन एक भीषण सामाजिक क्रान्ति या प्रचण्ड युद्ध ज्वाला मानव समाज में धू धू कर जल उठे। यदि सिकन्दरकी तरह कोई महा प्रतापी पुरुष अपनी गर्जनाके बलसे, मनुष्यों के बीच काले सांप की तरह बैठा हुआ धर्म, भाषा और जातीय भेद भावोंको मिटा दे, तो मानव समाजकी सारी समस्यायें हल हो जायँ।

धर्म के असली तत्वको वही जानता है, जो कर्म, मन और वाणी से सबका प्रेमी है। जब तक हमारे अन्त करण मे समानता की ज्योति नहीं जगमगाती, तब तक हममें दृढ सकल्प और सघ शक्ति की भावनायें मजबूत नहीं हो सकतीं। भुना हुआ बीज जैसे उग नहीं सकता, वैसे ही ज्ञान बुद्धि से मनुष्य के अधर्म जल जाते हैं, तब व पुन आत्माको प्राप्त नहीं होते।

धार्मिक संकीर्णताओं और मतमतान्तरोंसे ससार में कितना खून बह रहा है, ईर्ष्या और पशुता किस तेजीसे बढी हुई है—इसको कौन कल्पना कर सकता है ? धार्मिक सिद्धान्तोंने दुनियामें भीषण भ्रम फैलाये हैं। जन्मभर की दुष्टता सवा पाच

आने के गऊदान से धुल जाती है। हजारों पाप करो, एक वार राम नाम जप लो—बेडा पार है। गङ्गा स्नान और तीर्थ यात्रायें मोक्षदायक समझ ली गयी हैं। हिन्दू, मुसल्मान आपसमे कट मर रहे है। शिया सुन्नियों के झगड़, सनातनी आर्य समाजियों के लट्ठमलट्ठ—कहा तक लिखू, खुद अपने ही घरों में धार्मिक लडाइयां हो रही हैं। यह कितना बडा अपराध है। जिस दिन मनुष्यके बनाये ईश्वरों का अन्त हो जायगा, हम मन की पवित्रता मे ही ईश्वर दर्शन कर सकेंगे। उस दिन ससार मे किसी जाति का अपना धर्म न रहेगा। मनुष्य ईश्वर के स्वरूपका निर्णय भक्ति और विश्वाससे नहीं, बुद्धि और विचार से करेंगे। उस समय ईश्वर और मनुष्य के बीच कोई नबी, रसूल या अवतार न होगा। मनुष्य ईश्वर को आत्मा में अनुभव करेंगे। आखों से देखकर नहीं, कानोंसे सुनकर नहीं, बल्कि अपनी आत्मामें रुद्र प्रेरणा का अनुभव करके।

दुख क्या है? दुख पापका परिणाम नहीं, बल्कि मनुष्य की अज्ञानता का फल है। आत्मा बन्धनों से जकडी है, यदि उसके बन्धन तोड दिये जायें तो आत्म प्रकाश फैलने मे कोई शक नहीं।

आवश्यकता आविष्कारों की जननी है। यह कहावत उतनी ही पुरानी है, जितना कि ससार का इतिहास। ससार का इतिहास बताता है, जिस तरह रुका हुआ जल बाध तोडकर जिधर रास्ता पाता है, उधर ही वह चलता है, उसी तरह समय

की आवश्यकतायें भी अपना रास्ता बना लेती हैं और पूरी होकर रहती हैं। मनुष्य हृदय में एक बार प्रवेश किये भाव कभी नहीं मरते। वे कुछ समय के लिये दबाये जरूर जा सकते है, पर समय पाकर जिस तरह कटा पेड दुगुने वेग से बढ़ता है, उसी तरह मनुष्योंके आध्यात्मिक भाव भी दुगुने वेगसे उठेंगे और ससार मे फैल जायेंगे।

मनुष्यको यदि विचार पूर्वक देखा जाये, तो वह हमेशा अनागरिक है। पशुओं को रहने के लिये जगह मिली है और मनुष्यको आगे बढने के लिये रास्ता। मनुष्यों मे जो श्रेष्ठ हैं व पथ निर्माता और मार्ग प्रदर्शक हैं। जो थके हैं व अपने हाथों अपनी चिता तैयार करते हैं।

हमने आध्यात्मिक शक्ति खो दी है। इसीलिए हम आफतों की जजीरों मे जकडे हैं। पाश्चात्य के उन्नतिशील देशों की ओर देखो, वहा के स्त्री पुरुषों मे ही नहीं, लडकी लडकों तक में आत्म विश्वास भरा है। उनका कहना है—"हम जो चाहें कर सकते हैं, हमारी इच्छाशक्ति मे कोई बाधा नहीं डाल सकता।" लेकिन हमारे देश के लडके क्या कहते हैं? लडकियो की बात छोड दो—मै समझता हू, अविद्या के अन्धकार मे डूबे हुए माता पिता भी ऐसा नहीं करते।

पुरानी बात है। ब्रिटिश सेना अफगानिस्तान के महमूद ग्राम को ध्वस कर रही थी। तोपों की अग्निवर्षा से हवाई जहाज

होकर मैदान में आ गिरा। उसमें कई घायल सैनिक थे। एक अफगान लडकी ने उन्हें देखा और बम वर्षाके बीहण मैदानसे वह उन सैनिकों को एक पहाडी गुफामें भगा ले गयी। अफगानों को यह बात मालूम हुई, वे सैनिकों को मार डालने के लिये दौड़े, मगर लडकी ने उनकी इस तरह से गुप्त रक्षाकी कि कोई उनकी बू वास तक न पा सका। एक दिन मौका मिला— लड़की ने घायल सैनिकों को अफगानी पोशाक पहनाकर अफगानी सीमा के बाहर कर दिया! दुश्मन को माफ करने का यह मनुष्य-स्वभाव अत्यन्त पवित्र है।

आज संसार में उपकार के जितने चमत्कार देखे जाते हैं, वह किसी जादूगर के खेल नहीं। उनका आविष्कार न तो धर्म धुरन्धरों ने किया है, न राजनीति-विशारदों ने, आरिस्टाटल बेकन, रूसो और कार्ल मार्क्स इसके निर्माता नहीं; न नेपोलियन और बिसमार्क ने ही इन चित्रों को बनाया है। इसकी रचना की है मनुष्यकी आध्यात्मिक शक्तियोंने, जो नदीकी धाराकी तरह अपना कल्याण मार्ग आप ढूढ़ती चली गयी है। आकाश में रहने वाले नक्षत्र जिस तरह रात में रास्ता दिखाते हैं, उसी तरह आध्यात्मिक शक्ति के विचारकोंने इन चमत्कारोंके इशारे भर किये हैं, जिनके द्वारा मनुष्य सुखी है।

मनुष्य हमेशा से मनुष्यता के आकर्षणको लेकर पागल है। उसके सामने कितने ही राज्य उठे और गिरे। उसने कितने ही माया मन्त्रों की चाभियां तैयार कीं। उन्हीं चाभियों से वह

दुनिया के रहस्य भण्डारों का ताला खोलता आ रहा है। रोटी कपड़े के लिये नहीं, महा मानवोंकी प्रतिष्ठा करनेके लिये, जटिल बाधाओंसे सत्यका उद्धार करने के लिये। मनुष्य होकर आराम कौन चाहेगा? उसे स्वयं मुक्ति पाकर दूसरों को मुक्ति दान देना होगा। उस समय मृत्यु गर्जन उसे सङ्गीत जैसा सुनाई देगा, वह आँधी तूफानमें आत्माका दीपक जलाकर वेधड़क सफल मार्गपर चला चलेगा। उसकी कृपासे उसी दिन सारा मानव समाज एक धर्मका, सच्चे मनुष्य धर्मकी घोषणा करेगा। उस दिन यह संसार एक विशाल परिवारके रूपमे बदल जायगा। ईसा, मोहम्मद, बुद्ध, शंकराचार्य, नानक, महात्मा गाधी इत्यादि महापुरुषों के सब धर्म मिलकर एक हो जायँगे—जिसे संसारके सब मनुष्य मानेंगे। उस दिन चोरी, झूठ, डाकेजनी, बलवा, विद्रोह इत्यादि आधुनिक समाज के अधार्मिक रोग ढूढनेसे भी न मिलेंगे। मनुष्यका दिमाग बुराइयों को ढूढने मे लगा है। और क्रमश उन्हें नष्ट करता जायगा।

हमारे लिये वह दिन दूर नहीं, जब मनुष्यों के सामने इतने आकर्षक कार्योंकी भीड लगी रहेगी कि वह मुग्ध हो जायँगे। विश्वाससे नवयुगका आरम्भ होगा। सारा संसार एक पुस्तक की तरह मनुष्यके सामने खुल जायगा और उसके पढने वाले कहेंगे—"ओह, हमारे पूर्वज भी अजीब थे, जो एक दूसरेको न पहचान कर आपस मे लडाइयां करते थे।"

तुम ईश्वरको न भूलो। मगर अन्धविश्वासी और तकलीफ देने वाले ढोंगी धर्मका जनाजा निकालो। उसे रसातलमें धकेल दो, यदि वहां जगह न मिले, तो ज्वालामुखीके उदरमे डाल दो ताकि उसकी खाक तक का पता न लगे और उसके जले हुए कण उड़कर तुम्हारे घरोंमें न आ सकें।

तुम मनुष्य हो। मनुष्य क्षुद्र रहनेके लिये संसारमें नहीं आया। मङ्गलमयी शक्तियां इकट्ठा करो। तुम्हारा महा-मङ्गल है।

आकर्षण

इस लेख में तुम्हें न तो जंत्र-मंत्र मिलेंगे, न जादू टोने। यहां मैं आकर्षण प्राप्त करने के वह सरल तरीके बताऊँगा, जिनके द्वारा तुम जीवन-संग्राममें फतेह पाते जाओगे।

मनुष्य जीवन का सबसे बड़ा आकर्षण है—उसका महान "व्यक्तित्व।" जिस तरह बिजली में चमक, चन्द्रमा में चाँदनी सूर्य में किरण, फूलमें सौंदर्य, बनमें हरियाली, पक्षियों में रङ्ग और रमणी में रूपका आकर्षण होता है, उसी तरह मनुष्यमें उसके "व्यक्तित्व" का आकर्षण है। जिस मनुष्य का 'व्यक्तित्व' जितना ही शानदार होगा, उसका आकर्षण उतना ही तेज और प्यारा होगा।

'व्यक्तित्व' क्या है ? 'व्यक्तित्व' के माने हैं—स्वयं तुम। 'व्यक्तित्व' मनुष्य के अन्दरूनी ताकतों की तेजस्वी चमक है। वह चमक, जिससे मनुष्य स्वयं अपने को जाहिर करता है और उसके जरिये दूसरों पर अपना प्रभाव डालता है।

शक्तिशाली 'व्यक्तित्व" रखनेवाले सिर्फ स्रष्टा ही नहीं, द्रष्टा भी होते हैं। वह देखते हैं, सुनते हैं और सृष्टि करते हैं! सभी देखते और सुनते हैं, मगर साधारण मनुष्यों से और इनसे जमीन आसमान का फर्क है। इनके देखने सुनने में महान

अन्तर रहता है। साधारण लोगोंकी दृष्टि में जो 'कुछ नहीं' है—, इनकी निगाह में वही सबसे बड़ी चीज है।

ऊँचा 'व्यक्तित्व' इन्सान को अमर होनेका अमृत पिलाता है। यदि ऊँचा 'व्यक्तित्व' झोपड़ी के लता पत्रोंके अन्दर भी छिपा रहे तो उसके आत्मिक प्रकाशसे झोपड़ी सोने के महल से अधिक सुन्दर दिखाई देती है। व्यक्तित्वशाली मनुष्य निर्भीक होते हैं। वे स्नेह से बालकों के सामने बच्चे बन जाते हैं, और इन्साफकी कुर्सी पर बैठकर दुश्मनोंकी भी इज्जत करते हैं।

वे स्त्री-पुरुष अभागे हैं, जो संसारमें प्रकाश लेकर आते हैं और अन्धकार के साथ वापस लौट जाते हैं, किन्तु दुनिया में अपनी यादगार का कोई ऐसा चिन्ह नहीं छोड़ जाते, जिससे फिर कभी उनके जीवन से आकर्षक लपटें निकल सकें। ऐसे मनुष्यों पर संसार सम्मान का बोझ भले ही लाद दे, किन्तु वह इस तरह मृतक की शोभा बढ़ाना चाहता है।

जगल में शेर अपने 'व्यक्तित्व' के ही आकर्षण से राज्य करता है। आज दिन जो हम 'फेल' होते जाते हैं, उसका प्रधान कारण है, हम 'व्यक्तित्व' को भूल जाते हैं, जीवन आकर्षण को खो बैठे हैं।

क्या तुम जानते हो,—मनुष्यको महान 'व्यक्तित्व' कहाँ से मिलता है? मेरा विज्ञान कहता है—चरित्रबल से।

जिन्दगीका ताज और मनोहर प्रकाश है—इन्सान का ऊँचा

चरित्र। मनुष्य के पास यह ऐसी कीमती चीज है, जिसके सामने दुनियाकी सब वस्तुयें तुच्छ है। सच्चरित्र मनुष्य राष्ट्रों की रचना करता है, मुर्दोंमें जीवन और कमजोरों मे ताकत बाटता है। उसके लिये आग शीतल जल, समुद्र छोटी नदी, पहाड शिलाखण्ड, विष अमृत और सर्प फूलकी माला बन जाते हैं। ऐसे मनुष्यके चरणों मे ससारकी आत्मा झुक जाती है, पृथ्वी उसे सिंहासन प्रदान करती है और शक्तियां विजय मुकुट। मनुष्य इन्हीं शक्ति कणोंको इकट्ठा कर एक दिन ससार को चुम्बककी तरह अपनी ओर खींच लेता है।

आज काल मेरे दिन रात किस आचरण मे बीत रहे हैं—यह विचार करने वाले आदमी दुखी नहीं हो सकते। मनुष्य का मूल्य उसके चरित्रमें है। चरित्रमें ही उसके आत्मबल का प्रकाश होता है और दूसरे मनुष्यों को इस बात का पता लगता है कि आत्मा कितनी शक्तिशाली है। धन, मित्र, मान और आनन्द चरित्रवान व्यक्ति को आपसे आप प्राप्त होते हैं और मृत्यु के बाद उसे ज्यादा मशहूर कर देते हैं। चरित्रवान व्यक्ति दूसरों के हुक्म कम मानता है, मगर उसका हुक्म दूसरों पर बड़े प्रभाव से चलता है। मैं कहता हूं, चरित्रवान मनुष्यों के चरण चिन्हों पर चलो। तुम्हारा महा मंगल होगा और तुम कठिनाइयों की मंजिल सरलता से पार कर ले जाओगे।

जिस मनुष्य का चरित्र ऊँचा है, उसके शरीर से एक प्रकारकी जीवित ज्योति निकला करती है जिसे हम मानव ज्योति कहते

हैं। साधारणत' यह शरीर के चारों ओर एक या डेढ़ फुट तक फैली रहती है और कई फीट दूसरे मनुष्योंको अपनी ओर आकर्षित करती है। यदि तुम दृष्टि शक्तिके तेजसे इसे देखो, तो यह ज्योति सम भावसे चारों ओर फैली दिखाई देगी, जो मानसिक आन्दोलन में असाधारण रूप धारण कर लेती है।

इस ज्योतिको हर जाति के लोग किसी न किसी रूप में मानते हैं। संस्कृत में इसे तेजस कहते हैं, मुसलमान नूर और पश्चिमी विद्वान "मैगनेटिज्म" या 'ह्यूमैन इलेक्ट्रीसिटी' नामों से पुकारते हैं।

तुमने अक्सर देखा होगा, बहुत से लोग ऐसे हैं, जिनके पास बैठने से सुख शान्ति मिलती है। अनेक ऐसे हैं, जिनके पास बैठने से अशान्ति, दु.ख, क्रोध, ईर्ष्या आदि बुरे विचार पैदा होते हैं। यह क्यों ? यह सब इसी मानव ज्योतिकी रहस्य लीला है। इस पदार्थ के कारण आकर्षण विकर्षण होते हैं। इसी तत्व बलसे एकका दूसरे पर प्रभाव पडता है। मनुष्य जिस तरह के विचारोंका सेवन करता है, उसकी ज्योति वैसी ही घटती बढ़ती है। इस ज्योतिको शुद्ध करने या प्रबल बनाने के लिये प्राणायाम की आवश्यकता है।

विचारों की लहरें बिजलीकी लहरों से ज्यादा शक्तिशाली हैं। इसलिये जो आदमी उन्नति, शक्ति, उत्साह इत्यादि के विचारोंको मनमें हरा भरा रखता है, उसका जीवन ज्यादे से ज्यादा सुखी

और शान्ति सम्पन्न बन जाता है और उसकी जीवन ज्योति इतनी बलवान हो जाती है कि दूसरोंके बुरे विचार उसपर असर नहीं डाल सकते। बुरे विचार उसी अपवित्र मनुष्य के पास लौट जाते हैं, जिसके हृदय से निकलते है और उनका उस मनुष्य को उचित फल चखाते हैं।

ईश्वर और संसार का आकर्षण ज्ञानेन्द्रियों के जागरण से प्राप्त होता है। यह आकर्षण प्रतिभाशाली व्यक्तियोंमें कविकी कल्पना की तरह विलक्षण आविष्कार कर डालता है। असल में इन्द्रियों का जागरण मनुष्य-जीवनको ठीक रास्ते से ले चलता है। उसके कार्य चाहे गुप्त हों या प्रकट, उसके प्रत्येक कार्य मनुष्य में जागृत आदतें उत्पन्न करते हैं।

आदतें बगैर उद्योगके अपना काम करती हैं। इनकी शक्तियां विचित्र होती है। तुम जिस आदत को अपने में एक बार डाल लेते हो, उसे कार्य रूप में परिणत करने की आदत पड़ जाती है। आदत का पहला रूप मकड़ी के जाले की तरह कमजोर होता है। किन्तु वही जाला धीरे-धीरे लोहे की मजबूत जंजीर बन जाता है, जिसे तोड़ने में खतरे से भरी मुसीबतों का मुकाबला करना पड़ता है।

इन्द्रियोंको जगाने में आदतों का सबसे बडा हाथ रहता है। आंखोंको ही लो, उनके देखने में भी एक तरह की आदत होती है। किसी चीज को तेजी से देखना और हल्केपन, लापरवाही से

देखना; किन्तु सर्वश्रेष्ठ को देखना सुनना ही मनुष्यके लिये कीमती है। इसीसे सोई शक्तियां जागती हैं। अच्छी आदतें डालने में कुछ खर्च भी नहीं होता, उनके द्वारा संसार की कीमती चीजें मुफ्त खरीदी जा सकती हैं। मनुष्य के पास दिमाग, आख, नाक, कान, हाथ और जीभ ये छै सबसे बडी ताकतें है। इनमें जागरण आते ही वह संसारके रहस्य भेदों से बहुत बडा फायदा उठा सकता है। लोग कहते हैं, भाग्य अन्धा होता है। वह बिना देखे भाले जिस आदमी को जिस तरफ चाहे खींच ले जाता है। किन्तु यह सिद्धान्त गलत है। वास्तव में भाग्य नहीं, मनुष्य अन्धा होता है। भाग्य का उद्धार आत्मा के आनन्द से है। एक लैम्प से हजारों लैम्पें जलाई जाती हैं।

मनुष्य शरीरमें कई करोड़ जीवकोषों के अड्डे हैं। इनमें से हर एक स्वतन्त्र जन्म लेता है और स्वतन्त्र मृत्यु प्राप्त करता है। जीवन में हर सातवें वर्ष, हर आदमी नया अवतार लेता है। उस समय उसके मानसिक प्रदेश मे एक तरह की प्रलय होती है और बहुत तरह का तहस-नहस होता है। उस समय इन जीव कोषों में अद्भुत हलचल होती है। इनमें से कितने ही मरमिट कर हमेशा के लिये विदा हो जाते हैं। जो बचे रहते हैं, वे नये जीव कोषोंके साथी बन बैठते हैं। उन्हीं से मनुष्य का रूप, रङ्ग और स्वभाव बदलता है। स्वभाव से विचार पैदा होते हैं, विचारों से मनुष्य कर्मोंका फल भोगता है। हां, यह मनुष्य के हाथकी बात है—चाहे वह अपने कर्मोको अच्छा बनाये या बुरा।

कर्म मनुष्य की इच्छा शक्ति का पीछा करते हैं। जो लोग अच्छे कर्मों को चुनते हैं, वे अपने भाग्यके खुद विधाता बन बैठते है जो बुरे कामोंकी तरफ आकर्षित होते हैं, वह मनुष्य जीवन को बरबाद करनेके अपराधी ठहराये जाते हैं।

यह विराट संसार शक्ति, सुख, सौन्दर्य, सत्य और प्रेम का कीमती खजाना है। यह हमारे व्यक्तित्वका संसार है। इसके चारों तरफ आकर्षण है। मनुष्य जीवन की दैनिक घटनायें जिन्हें हम रोज देखते सुनते हैं, इन्हीं के उत्थान पतन से मनुष्य में मूल ज्ञान उत्पन्न होते हैं और वह जिन्दगी मे अनेकों महत्वपूर्ण काम कर डालते हैं। हम और तुम रोज ही मुरदे देखते हैं, मगर महात्मा बुद्ध मुरदेको देखकर मनुष्यों के भगवान बन गये। हम और तुम रोज ही देव-मूर्तियों पर चूहोंको उछलते देखते हैं। मगर जिस दृष्टि से स्वामी दयानन्द ने यह दृश्य देखा, वे खुली आंखें थीं। उन आंखों ने इस छोटीसी घटना द्वारा उन्हें आर्यसमाज का नेता बना दिया। दर-असल छोटी छोटी घटनायें हमारे लिये बड़ी महत्वपूर्ण हैं। मगर इन घटानाओं से वही आकर्षण प्राप्त करते हैं, जो आँखें खोलकर चलते हैं और कानों में पड़ने वाली प्रत्येक आवाज को होशियारी से सुनते हैं।

पीसाके गिरजा घर में एक दिन एक अठारह वर्षका नवजवान खड़ा हुआ ऊपर की हिलती बत्ती को बड़े गौर से घूर रहा था। बत्ती ठीक वक्त पर एक सिरे से दूसरे सिरेपर आती जाती थी नवजवान ने सोचा, 'इस आइडिया' पर समय देखने की एक

आकर्षक वस्तु तैयार की जा सकती है। पचास वर्ष के कठिन परिश्रम के बाद उसकी यह इच्छा पूर्ण हुई और उसने घड़ी का आविष्कार कर डाला। इसी तरह सर हम्परी डेवी के व्याख्यानों को सुनकर जिल्दसाज फराडे ने रसायनका आविष्कार किया। कोलम्बसने एक सामुद्रिक पौधेको देखकर स्वजाति में फैली लड़ाइयों को तहस नहस कर डाला। फ्रैंकलिनने विजली के तथ्योंको ढूढ़ निकाला। न्यूटन फलका गिरना देखकर गुरुत्वाकर्षण पर विचार कर बैठे। ऐसी हजारों छोटी-छोटी घटनायें हैं, जिन्होंने मनुष्य की आँखोंमें वह चमत्कार पैदाकर दिया, जिससे आज लाखों करोड़ों मनुष्य फायदे उठा रहे हैं। मनुष्य ज्यों ज्यों शिक्षित होता जा रहा है, वह महा शक्तियों को परीक्षागार के मामूली वर्त्तनों में कैदकर उनमें अद्‌भुत आकर्षण उत्पन्न कर रहा है। अब वह ज्ञान विज्ञान की बदौलत धनी बनता जा रहा है। रेगिस्तानको हँसता वागीचा और श्मशान जैसी पृथ्वीको अमरावती बनाता जा रहा है। उसका अधिकार उत्तुङ्ग तरङ्ग वाले महा समुद्रपर भी फैल रहा है। अमित तेजस्विनी रहस्यमयी प्रकृति भी आज उसकी सेवा में रत और उसके उद्देश्यों की पूर्तिमें तैया हो गयी है। उसकी उन्नतिके प्रचण्ड प्रवाहों को संसारकी को ताकत नहीं रोक सकती, किसीमें शक्ति भी नहीं है। जि तरह एक दिन अमृतकी खोजमें देवता और दैत्य पागल थे, आ उसी तरह जीवनकी खोजमें मनुष्य भी दीवाने हो रहे हैं। ढूढ़ते हैं, उन्नति की प्रयोगशाला में कितने किस्मके आकर्षण

और इनमें किन किन नये चमत्कारोंका आविष्कार कर सकते है।

रूसके प्रवर्त्तक मैक्सिम गोर्की ने लिखा है—"अपरिवर्तित अवस्था में रहना बड़ा दुःखदायी है। ऐसी हालत में रहकर भी यदि हमारा हृदय नहीं मरता तो वह परिस्थिति हमें और भी दुःखदायी मालूम होने लगती है।" सच है, मनुष्य अपने उल्ट फेरसे ही अनन्त शक्तियोंपर अधिकार करता है।

यह कहावत सच है, दुनिया झुकती है, झुकानेवाला चाहिये। संसार के चारों तरफ आकर्षण शक्तिका उजेला है, किन्तु जब तक हम उसे नहीं पहचानते, हमारी शक्तियां मुर्दा है। ठीक उसी तरह जैसे फूल तब तक हमारे लिये बेकार है, जब तक हम उसकी खूबसूरती और सुगन्धका आनन्द नहीं जान पाते। थाली स्वादिष्ट भोजन परोसे हैं; यदि खानेवाला न हो, तो इसमे भोजन का क्या दोष ?

इन्सानकी सबसे बडी भूल यह है कि किसी भी अच्छे काम को वह कल परसोंपर टाल देता है। इस तरह उसकी जिन्दगी खतम हो जाती है, मगर कल परसों कभी नहीं आता।

न्यूटन कहता था—"मैं अपना विषय हमेशा अपने सामने रखता हूं। धीरे-धीरे उसके अन्धकार को टटोलता हूं और क्रमशः अपना मार्ग साफ कर ज्यादे से ज्यादा रोशनी पा जाता हूं।" किसी काम को पूरी ताकतों के साथ करने मे ही सफलतायें मिलती हैं, हाहाकार मचानेसे नहीं।

मनुष्यके मनमें एक निराली और विचित्र दुनिया बसी है। उसमें आकर्षक बगीचे है—जिसमें गुलाबकी नर्म और नाजुक पंखडियां बिछी हैं। उसमें निराशा के खाई कुयें है, जिनमें मौत जैसा घना अन्धकार और भयानक सन्नाटा है। उसमें मुसीबतोंकी महामारियां हैं—जिनकी आकाशको छूनेवाली ऊँचाई देखकर कलेजा कांप उठता है। उसमें प्रेमका झरना झरता है—जिसमें त्याग और सहानुभूतिकी धारायें बहा करती हैं।—उसमें घृणा, द्वेष, असत्य, लालच, अभिमान और इन्द्रिय लोलुपता का नर्क भी है। उसमें सत्य, सन्तोष, भक्ति और नम्रताका स्वर्ग भी जगमगा रहा है। उसमें प्रफुल्लता का वसन्त है, प्रसन्नताकी बहार है, हलाहलका जहर भरा है।

मन एक निराली दुनिया है। इतनी विशाल कि मनुष्य अपनी तमाम जिन्दगी भर भी उसके सम्पूर्ण दृश्योंको देखने में असमर्थ है।

यदि तुम गिरे हुए आदमीको उठाते हो, तो यह न समझो हमने उसे उठाया। किन्तु यह समझो, उसी समय से दिव्य प्रकृति ने तुम्हें उन्नत गोद में ले लिया। तुमने दूसरे को नहीं, वरन अपना ही उद्धार किया।

हर इन्सान की जिन्दगी में कुछ न कुछ महान कर्तव्य होना चाहिये। वह कर्तव्य जो उससे बड़ा, धन से ज्यादा कीमती और प्रशंसासे ज्यादा स्थायी हो; किसी देश की महानता उसके क्षेत्रफल आबादी या धन पर निर्भर नहीं, उसकी महानता है उसके महामानवों पर।

क्या आप कल्पना कर सकते हैं, मिश्रकी मूसाके बिना, फ्रांसकी नेपोलियन के बिना, इंगलैंड की शेक्सपियर, निउटन और जार्ज बर्नार्डशा के बिना, भारतवर्षकी महात्मा गांधी तथा पं० जवाहर लाल नेहरू के बिना, अमेरिका की विलसन और लिंकनके बिना तथा रूसकी स्टालिन बिना महानता हो सकती है? कभी नहीं।

अच्छाई के साथ नेकी और बुराईके साथ बदी पैदा होती है हृदय का प्रतिविम्ब हमारे नेत्रों और कार्यों द्वारा दुनिया के सामने प्रकट होता है। कलुषित हृदयोंकी परछाई भी काली है, किन्तु जितेन्द्रिय और सद्गुणी मनुष्य के चेहरे में प्रकाशका आकर्षण होता है।

मनुष्यके मनमे एक निराली और विचित्र दुनिया बसी है। उसमे आकर्षक बगीचे है—जिसमे गुलाबकी नर्म और नाजुक पखडिया खिली हैं। उसमें निराशा के खाई कुयें है, जिनमे मौत जैसा घना अन्धकार और भयानक सन्नाटा है। उसमें मुसीबतोंकी महामारिया हैं—जिनकी आकाशको छूनेवाली ऊँचाई देखकर कलेजा काँप उठता है। उसमे प्रेमका झरना झरता है—जिसमे त्याग और सहानुभूतिकी धारायें बहा करती हैं।—उसमे घृणा, द्वेष, असत्य, लालच, अभिमान और इन्द्रिय लालुपता का नर्क भी है। उसमे सत्य, सन्तोष, भक्ति और नम्रताका स्वर्ग भी जगमगा रहा है। उसमें प्रफुल्लता का वसन्त है, प्रसन्नताकी बहार है, हलाहलका जहर भरा है।

मन एक निराली दुनिया है। इतनी विशाल कि मनुष्य अपनी तमाम जिन्दगी भर भी उसके सम्पूर्ण दृश्योंको देखने में असमर्थ है।

तुमने अक्सर देखा होगा, एक मनुष्य दूसरे मनुष्यके इतना वशीभूत हो जाता है कि सरासर अन्यायपूर्ण बातें करने पर—उसे अन्याय जानते हुए भी—उसमे एक क्षण के लिये भी उसके कार्यो को न करने या टाल देने की शक्ति नहीं होती। प्रेमिका प्रेमीको ठुकराती है; घृणा से मुह फेर लेती है। लेकिन प्रेमी उसी स्त्रीके लिये अपने प्राण तक विसर्जन कर देता है। ऐसी आश्चर्यजनक आकर्षण शक्ति किस मोहिनी मन्त्रक बलपर उठ खडी हुई है जानते हो ? मनुष्यके व्यक्तित्वकी महानता के बलपर।

यदि तुम गिरे हुए आदमीको उठाते हो, तो यह न समझो हमने उसे उठाया। किन्तु यह समझो, उसी समय से दिव्य प्रकृति ने तुम्हें उन्नत गोद में ले लिया। तुमने दूसरे को नहीं, वरन अपना ही उद्धार किया।

हर इन्सान की जिन्दगी में कुछ न कुछ महान कर्तव्य होना चाहिये। वह कर्तव्य जो उससे बड़ा, धन से ज्यादा कीमती और प्रशंसासे ज्यादा स्थायी हो; किसी देश की महानता उसके क्षेत्रफल आबादी या धन पर निर्भर नहीं, उसकी महानता है उसके महामानवों पर।

क्या आप कल्पना कर सकते हैं, मिश्रकी मूसाके बिना, फ्रांसकी नेपोलियन के बिना, इंगलैंड की शेक्सपियर, निउटन और जार्ज बर्नार्डशा के बिना, भारतवर्षकी महात्मा गांधी तथा पं० जवाहर लाल नेहरू के बिना, अमेरिका की विलसन और लिंकनके बिना तथा रूसकी स्टालिन बिना महानता हो सकती है? कभी नहीं।

अच्छाई के साथ नेकी और बुराईके साथ बदी पैदा होती है हृदय का प्रतिबिम्ब हमारे नेत्रों और कार्यों द्वारा दुनिया के सामने प्रकट होता है। कलुषित हृदयोंकी परछाई भी काली है, किन्तु जितेन्द्रिय और सद्गुणी मनुष्य के चेहरे मे प्रकाशका आकर्षण होता है।

तुम मनुष्य हो। अमृतकी बूंदें पीकर दुनियामें आये हो। हमेशा उन्नतिके मार्गमें आगे बढ़ो, और अज्ञान, गरीब तथा मुसीबतोंके मारे भाइयोंको अपनी हुँकारसे जिन्दा कर दो।

तुम्हारी जिन्दगीको किसीने चाहे समझा हो या नहीं, किन्तु मैं तुम्हारे जीवनकी कीमत समझता हूं। तुममें शक्तिशाली और तेजस्वी बननेकी कोई त्रुटि नहीं पाता।

जागो, उठो। हे मनुष्य। तुम भगवान कृष्णकी तरह कर्मयोगी, बृहस्पति की तरह विद्वान, ब्रह्मा की तरह कवि हो। सुन्दर, धनी और भीष्मके समान वीर बनो। मानव शक्तिमें देव शक्ति का आविष्कार करो। जीवनको पवित्र और मङ्गलमय बनाओ! मेरी यही आन्तरिक कामना है।

* वन्दे शारदाम् *

श्री केदारनाथ बाबूलाल राजगढ़िया सिरीज

राष्ट्रभाषा हिन्दी का विकास, प्रचार और विश्व साहित्य के उत्तमोत्तम ग्रन्थों का अनुवाद कर, लागत मात्र में ही पाठकों को प्रदान करना। जिससे हमारी मातृभाषा समृद्धिशाली हो, यही हमारा एकमात्र उद्देश्य है। राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद जी ने भी अपने ता० २४-१२-५२ को, कलकत्ता के भाषण में ऐसे कामों की उपयोगिता मुक्त कण्ठ से स्वीकार की है।

नियम

(१) स्थायी सदस्यों का प्रवेश शुल्क ।) मात्र है।

(२) स्थायी सदस्यों को इस 'सिरीज' में निकलने वाली पुस्तकों पर २५ रुपया सैकड़े कमीशन दिया जायगा।

(३) लेखकों के लिये खास रियायत यह है कि उनकी पुस्तकें लागत मात्र में ही छाप कर यथा शीघ्र उन्हें दे दी जायंगी। लेखकोंको खास कर, इस रियायत से फायदा उठाना चाहिये।

(४) भारत के समस्त पुस्तक विक्रेताओं से नम्र निवेदन है कि इस 'सिरीज' की उपयोगिता को देखते हुए, अविलम्ब "विज्ञान मन्दिर" से पत्र व्यवहार करने की कृपा करें।

(५) इस समय के एजेन्ट, "विज्ञान मन्दिर" को नियुक्त किया गया है। उनका पता है—"विज्ञान मन्दिर" ६, ब्राह्मणपाड़ा लेन (बलराम दे स्ट्रीट) कलकत्ता ६

छप रही है।

योरोप के प्रसिद्ध विद्वान जान रस्किन की अद्वितीय पुस्तक "Unto this Last" का हिन्दी अनुवाद

सर्वोदय

—अनुवादक—

श्री चन्द्र अग्निहोत्री

प्रसन्नता की बात

हिन्दी संसार को यह जान कर प्रसन्नता होगी कि हम लोग इमर्सन, कार्लाइल, विलियम मौरिस, बर्नार्डशा इत्यादि महान लेखकों की कृतियों का हिन्दी अनुवाद शीघ्र ही इस 'सिरीज' के अन्तर्गत प्रकाशित करने जा रहे हैं।

श्री केदारनाथ बाबूलाल राजगढ़िया सिरीज़

* सलाहकार मण्डल के सदस्य *

१—श्री बाबूलाल जी राजगढ़िया

२—श्री रामकुमार पंडा

३—पंडित रामशंकर त्रिपाठी

संचालक—"लोकमान्य"

४—पंडित राम महेश चौबे

५—श्री ज्ञानानंद नियोगी

६—डाक्टर किशोरी लाल शर्मा

७—श्री यमुना प्रसाद झुनझुनवाला

८—श्री हरिशंकर द्विवेदी

सम्पादक—"नवभारत टाइम्स"

९—पंडित गुलाबरत्न वाजपेयी